सिरहाने मीर के

सिरहाने मीर के

सुरेश सेठ का व्यग्य-सग्रह

लेखक मित्र महाराज कृष्ण काव के लिए
साथ गुजरी कुछ अतरग शामो की याद मे

अनुक्रम

डरा हुआ शहर

मैं हँस रहा था कि कान के पास स एक गोली दन्न से गुजर गयी ! मेरा हँसता हुआ चेहरा एकदम उतर सा गया। कसा जमाना आ गया ? मुल्क है कि लडाई मार-कुटाई से भरपूर किसी जगल फिल्म का सैट। लोग नारा पीछे लगाते हैं, पिस्तौल पहले निकाल लेते है। हमारे इलाके की हालत तो आप जानते ही हैं। हमारे प्रदश को राजधानी चाहिए इसलिए दुकान पर बठकर सौदा बेचता हुआ बनिया मौत के घाट उतार दिया जाता है। हमारी नदियो का पानी अडोसी पडोसी बाटने के लिए चले आते हैं, इसलिए बैंका के कैशियरो से चाबिया छीन ली जाती हैं। आखिर इन बैंक वाला ने अपन सारे नोटो का बीमा करवा रखा है। हम इस्तेमाल नही करेंगे, तो खाली पडे पडे इन नोटो को घुन लग जायगा !

इधर देखते-ही-देखते राजनीति का चेहरा कितना बदल गया है ! पहले राजनीति मे कामयाबी का मूलमत्र भाषण था, अब घूसा है। पहले चुनाव लडन के लिए नेता लोगो के वास्ते धन्ना सेठ अपनी थैलियो के मुह खोल देते थे, बाद म चाह इसके बदले मे उनके साथ कोटा परमिट का लेन-देन हो जाता ! पर अब तो राजनीति थली वालो की माहताज नही रही। बैंक म जमा देश का पैसा पिस्तौल वाले छीन रहे हैं। देश का पसा है, देश के काम आ रहा है। राबिनहुड भी तो यही करता था ! अब ये देशसेवक दिन को बैंक लूटते हैं, और रात को राबिनहुड हो जाने का सपना दखते हैं। सपना देखकर सुबह उठते हैं, तो उन्हें लगता है, अपना देश समाजवाद की आग

एक कदम और आगे बढ गया। रक्तिम क्रांति म अब दूर नही।

मैं उतरे हुए चेहरे के साथ सडक पर निकला, तो देखा, बहुत सा रग सडक पर बिखरा हुआ था। लगा, अरे होली तो हो गयी। इस बार अबीर गुलाल खेलने स तो वचित ही रह गये। जरा पास जाकर देखा तो पाया अबीर गुलाल नही, इसान का खून था। मोटरसाइकिल सवार गोलिया चलाते हुए इस सडक से खून की होली खेलने के बाद गुजर गये थ। पर सडक के मोड पर बनी दुकान पर बैठा बनिया उदास था। मैंने पूछा, उदास क्यो हो?' लाला बोला, "उदास न होऊ तो क्या करू? अबीर और गुलाल मे तो मिट्टी की मिलावट हो जाती थी, चार पस बन जात थे। इसानी खून म ऐसा चास कहा? साला सडक पर गिरता है तो बिना मिलावट के गिरता है। धम का भी भेदभाव नही करता "

मैं बनिये के दु ख मे दु खी हो आगे बढ गया। अपने शहर की सडको से कुछ घण्टो के लिए कर्फ्यू हट गया था। पर इसी बीच सारा शहर जसे एक बडे कूडा घर मे तब्दील हो गया था। जगह-जगह पर कचरे के ढेर पडे थे कि जिनके पास से गुजरते हुए सफाई मजदूर भी अपनी नाक दबा लेते थे। मैंने एक सफाई मजदूर को जो उस कचरे के ढेर को बडे दार्शनिक भाव स देख रहा था रोककर पूछा, 'क्या सोच रह हैं आप? इस ढर को तो उठा दीजिए।'

वह इस कचरे के ढेर को देखकर पहले एक बार हँसा, फिर रोया!—'नही-नही इसे यही रहने दीजिए। आज हमारे देश की हालत इस ढेर जैसी ही तो हो गयी है। इसे देखकर लोगो को प्रेरणा मिलती रहगी।' उसने मुझे बताया।

मैंने सोचा, कैसी जागृति आ गयी! देखिय, अब तो सफाई मजदूर भी भाषण देने लगे।

हमने इसे देखकर प्रेरणा ले ली। अब तो इसे उठा दीजिए।" मैंने फिर अर्ज की।

सफाई मजदूर खीझ उठा, बाबू, होश की दवा करो। लोगो के सिर पर मौत मँडरा रही है और तुम्ह कचरे का ढेर उठवाने की पडी है। जिंदगी छिन जाने के डर से छुटकारा मिले, तो लोग कुछ काम करें। मैंने

उस डरे हुए आदमी को आराम करने दिया। डर मे आराम करते हुए उसे कितना सुकून मिल रहा था। शहर का क्या है ? आज नही तो कल साफ हो जायेगा।

शहर की मरी चाल थी, और बीमार हाल। इस हालचाल को देखकर मुझे एक पुराना मुहावरा याद आया कि शहर को जैसे साप सूघ गया है। पर यह क्या ? मैं अब भी पुराने मुहावरों म सोचता हू, और अच्छे दिनो का सपना दखता हू। दोना ही बातें आज के युग मे किसी को लज्जित कर देने के लिए काफी हैं। मैं भी लज्जित हो गया, और इसलिए अब कोई उजबक सा काम करने की इच्छा करने लगा।

सबस उजबक काम तो अपनी डाक का इतजार ही होता है। कई दिन से शहर मे डाक नही बँटी थी। मैं भी अपनी बस्ती के डाकिये की तलाश मे निकल पडा कि शायद मुझे भी किसी पाठिका या प्रशसक न खत लिख दिया हो, कि बहुत खतरा पैदा हो गया है तुम्हारे शहर मे। सडक पर चलते हुए मासूम लोग कत्ल कर दिये जाते हैं। कही तुम भी कत्ल हो जाओ, तो हम तुम्हारी स्मृति मे एक यादो भरी शाम ही आयोजित कर ले।

एक लेखक के लिए उसकी शाम आयोजित हो जाने से बडा सम्मान और क्या हो सकता है, चाहे वह उसकी मौत के बाद ही हो। मैंने भी ऐसी चिट्ठी पाने की आस मे बस्ती का कोना-कोना छान मारा, डाकिया कही नही मिला। और आखिर मिला भी तो शहर मे बडे जोहड के पास मिला। मुझे लगा कि उसने जरूर धधा बदल लिया है, तभी तो इतने दिन से मुझे कोई डाक नही मिली। न जाने कितनी पाठिकायें मेरी भटकती हुई आत्मा के सम्मान मे एक यादो भरी शाम आयोजित करने के लिए व्याकुल हो रही होगी। पर यहा ये क्या नया धधा शुरू कर लिया हमारे डाकिया राम ने ? दूर से देखने पर तो ऐसे लगता है कि इसने जरूर दूध बेचने का काम शुरू कर लिया है तभी तो जोहड के पास बैठा है, और शायद पानी म दूध मिलाकर हमारे लिए एक नया पेय तैयार कर रहा है।

पर जब मैं उसके पास गया तो पाया कि उसने धधा नही बदला था, बल्कि अपने काम को ही एक नया आयाम दे रहा था। मैंने देखा उसने अपने डाक के बडे थैले को जोहड के पास रखा हुआ था, और उसम से चिट्ठिया

निवाल फाड फाडकर जाहड म फेंकता जा रहा था।

"यह क्या डाकियाराम जी ! हमार तक चिट्ठिया पहुचान के बजाय जाहड म ? आप नही जानत कि हमारी पाठिकाओ के दिल पर क्या गुजर रही होगी ? हमारी याद म आयोजित होने वाले दो चार शाक समारोह तो जरूर कैंसिल हो गय होंग ?" हमन चिन्ता के साथ कहा।

"के के के !" डाकिया हँसा– 'आपको पहले कभी किसीन खत लिखा है जो अब आपके गुजर जान की उम्मीद म वह यह कष्ट उठायगा ? आप तो लगता है साहिब आजकल बहुत जासूसी नावल पढन लग हैं।"

' हम नावल पढने लगे है, और आप क्या कर रहे हैं ? ये लोगो की चिट्ठिया उनके घरो तक ले जान के बजाय इस जाहड के हवाल ?"

"अजी ऐसा करके तो हम देश की सवा कर रह है। दखते नही शहर की क्या हालत हो रही है ? भाई भाई का दुश्मन हो रहा है। हो सकता है इन चिट्ठिया म भी मौत की धमकिया हो, या मनहूस खबरे हो। भला इहे बाटकर हम शहर म दहशत क्यो बढायें !" डाकिया राम न बडी समझदारी के साथ हम बताया।

हम लगा कि जब स अपन शहर म गालिया चलन लगी हैं सब लोग कितन समझदार हो गय हैं। दखो कैंस नय-नय ढग से दश की सेवा कर रह हैं। और एक हम हैं कि अभी तक अपना एक भी केंचुल नही बदल सके।

खर, इस माहोल से प्रेरणा लकर हम घर की आर लौट। हमन फैसला किया कि सही लेखक के नाम पर अब हम भी फिल्मी गीत लिखन का प्रयास किया करेंगे—शायद इसी स शहर म दहशत कुछ कम हो जाये।

मौसम बदल रहा है

मौसम बदल रहा है, और अभी-अभी धनी हुए हमारे पडोसी लद्दन-मियां जाडे म भी शिमला जाने की तैयारी कर रहे ह। हम यहा मैदान मे सर्दी से ठिठुर रहे हैं, और बडी गाडी वाले मेरे यह पडोसी पहाड पर क्या वसन्त देखने की उमीद से जा रहे हैं मैं समझ नही पाता। चन्द बरस पहले तक लद्दनमियां को मैदान में भी गर्मी के दिनो म जाडा लगता था, और पहाड दखन के लिए वह देसी फिल्म देखने जाया करते थे। फिर न जाने क्या हुआ, कि उन्ह एक रात सपने म किसी ब्रह्मचारी देवता के दशन हुए। मुझे लगता है कि इस देवता की शक्ल जरूर राजगुरु से मिलती होगी, क्योकि सुबह उठे तो लद्दनमियां योगा। योगा' चिल्ला रहे थे। बिस्तर से उठते ही उन्होंने ताण्डव नत्य का एक सुधरा हुआ रूप प्रस्तुत किया, और बताया कि वह खाजलीन हो गये हैं और प्रस्तुत मुद्रा ब्रह्मचारीजी के बताये हुए योगा-सन और जेनफोण्डा के कसरत विज्ञान के एक करिश्मे का मिला-जुला रूप है। लद्दन ने हम सबको बताया कि उन्ह देव दशन हुए हैं और देवता ने उन्ह सारे शहर के अपच को दूर करने और बढे हुए पटो को घटाने का ठेका दे दिया है। आपको तो पता होगा, इधर जब से हमारे शहर म चीनी और आटा राशन से मिलना शुरू हो गया है, 'सही कीमत दुकाना' से ये सब चीजें गायब हो गयी हैं। बीस-बीस चक्कर लगाने के बाद भी राशन नहीं आया' का जवाब ही इन हिन्दुओ में मिलता है। पर उन मण्डियो म, कि जिनका रग काला है, म खुले-आम यह वस्तुएँ बिकती हैं। राशन आने मे

देरी का जवाब जितना ही लम्बा होता जाय, उतना ही इन डिपो-होल्डरा की अपच की समस्या बढ़ती चली जाती है। फिर जाड़े म अपनी बहार दिखायी, ता करासिन के लिए भी इन डिपुओ के बाहर लम्बी लाइन लगने लगी है। इधर डिब्ब कतार म लग ह, और लाग आस-पास जमघट लगाय खडे है, कि जैसे अभी बसाखी का मला बिखरा हो। बिखरा इसलिए कि केरोसिन तो वहा आयेगा नहीं—और वे मडिया कि जिनका रग काला है, मिट्टी के तल के कनस्तरा से पट जायेगी। अब लाला चादी बना रहा है और उसकी बहू और बेटी वेस्टलाइन पर नियत्रण करने की चेष्टा म मरी जा रही हैं। हुलाहूप स लकर रस्सी फादने तक सब गुर उन्होंने आजमा कर देख लिए कोई असर नहीं हुआ। घी से तरबतर हलवा खाने के बाद डायटिंग की ढेर सी बातें भी कर ली, कोई असर नही हुआ। बल्कि इसी चेष्टा मे उनका वजन पाच किलो और बढ गया।

और उधर अपनी रेखा जी ह कि बम्बई मे न जाने क्या जादू जान गयी कि अपना वजन पचहत्तर किला स घटाकर पचपन किलो कर गयी, और अब पचतारा होटलो म थुलथुल औरतो को शरीर घटाने की शिक्षा दे रही है। बाजार म जाइए ता जेन फाण्डा के कसरत विधान के कैसेट धड़ाधड बिक रहे है और दिन मे काला बाजार म व्यस्त और शाम को अपनी बाझ चिता से ग्रस्त भारी भरकम लाग इन दुकाना क बाहर कतार लगाकर खडे हैं। घर जाते ह तो दूरदर्शन की स्क्रीन पर ब्रह्मचारी जी हर आसन की विधि बता रह होते है। बहुत दिना तक यह चेहरा एक राज गुरु का था पर अब सुना है कि उन्होंने पहाडा म गन फैक्टरी लगा ली है इसलिए स्क्रीन पर गुरु बदल गय हैं पर योग नहीं 'यागा' कहिए 'योगा' बदस्तूर जारी है।

लहनमिया इसस पूव कई तरह के धधा के पापड बल चुके थे पर परिवार क लिए दो जून रोटा भी जुटा नही पाते थ। बाप-दादा के जमाने का मकान खस्ता होता जा रहा था और लहन की शक्ल उडीसा के किसी अकालग्रस्त प्राणी जसी लगने लगी थी। पर इधर शहर मे जब मौसम बदल गया, और एकाएक सारा शहर राशन डिपुआ की गिरफ्त म आ गया, तो लाला लोगा की बहूए और बेटिया तजी क साथ मोटापाग्रस्त होन लगी।

इससे पहले हमने अपने शहर में कई बुखार तेजी के साथ फलते हुए देखे थे, पर जस-जस कालाबाजारियों की चौखटें ऊंची होती चली गयीं, हमारे शहर में रखा फीवर भी तेजी के साथ फैलने लगा। बहुत सी विस्तृत औरतें डायट चार्टों की तलाश में इधर उधर भटकती हुई पायी गयीं।

एस समय में लड्डन चल निकले। उन्हें सपने में देव दर्शन हुए, और उन्होंने दूसरे ही दिन नगर में रेखा योगाश्रम' की स्थापना कर दी। मिलावट का जमाना है। इनकी प्रेरणा भी भला इससे अछूती कैसे रहती? इस प्रेरणा में राजगुरु का योगा, जेन फाण्डा की उछलकूद और रेखा का बीम किला घटा हुआ वजन जैसे ठोस आधार बन गया। लड्डन ने कुछ इस तेजी से यह मिक्सचर नगरवासियों को पिलाया कि उनके आश्रम में भारी कमर वालों की भीड़ लग गयी। उनके आश्रम में दिन रात कसरत-संगीत के कैसेट गूंजने लगे, और इच्छुकों के 'हुआ-हुआ' स्वर आकाश को गुंजा देते। पंचतंत्र की कहानियों में हुआ हुआ का स्वर सियार मामा से जुड़ता है। हम सियार पकड़ने लड्डन के आश्रम में गये तो पता चला कि आजकल यह वजन घटाओ अभियान में कसरत व्यस्त लोगों की राष्ट्र ध्वनि है। लड्डन ने हमें तो अपने आश्रम से निकाल दिया, पर फिर भी यह बताना न भूले कि यह ध्वनि आजकल उन्हें बहुत मधुर लगती है, क्योंकि देखते ही-देखते इसकी बदौलत उसका खस्ता मकान आलीशान हो गया है, और दरवाजे पर हाथी तो नहीं हां, एक गाड़ी जरूर झूलने लगी है।

पर गजब खुदा का! अब हमने यह क्या सुना कि लड्डन कुछ दिनों के लिए अपना आश्रम बन्द कर रहे हैं। और इन जाड़े के दिनों में भी वसन्त की तलाश में शिमला जा रहे हैं। अब आप हमारा स्वभाव तो जानते ही हैं। ऐसी खबर मिले और हम सुराग लगाने के लिए जेम्स बाँड न हो जाएं, ऐसा कभी हो सकता है? हम उनके आश्रम में पहुंचे तो पाया, कि लड्डन बहुत चिन्ता में थे और काजू खाते हुए बड़ी गम्भीरता के साथ डायट चार्ट का पठन कर रहे थे।

—अच्छा भला काम छोड़कर इस मौसम में शिमला क्यों जा रहे हो? हमने लड्डन से पूछा।

—क्या करूं! लोगों को वजन घटाना सिखाते [illegible] मेरा [illegible]

बीस किलो बढ गया है। यह वजन इसी तरह स बढता चला गया, तो मरा आश्रम उजड जायगा। लाग कहग, पहले अपनी कमर तो सभालो। बसन्त देखन का तो बहाना है। सोचता हू पहाड चढ उतर कर ही शायद यह बदन सवर जाये।—लद्दन ने अपनी तोद पर हाथ फेरत हुए कहा।

—अपनी दवा से भी कभी कोई डाक्टर ठीक हुआ है लद्दन!—हमने उसे समझाया—'पहाड क्या जाते हो? यही धधा क्या नही बदल लेत। अभी तुम्हारे सितारे बुलन्द है। जिस काम मे हाथ डालोगे, वही सोना हो जायेगा।'

—खुदा-खुदा करके तो यह एक काम चला था, अब और क्या शुरू करू? लद्दन न निराशा स सिर हिलाकर हम पूछा।

—अरे, जब दूरदर्शन मे राजगुरु का योग कार्यक्रम बन्द हुआ था तो उन्होन पहाडो मे गनफैक्टरी खोली कि नही! तुम भी अब अपन आश्रम की जगह म गन फैक्टरी नही तो चाकू छुरिया बनान का धधा ही खोल लो।

—चाकू छुरिया! पर उन्ह खरीदगा कौन? लद्दन न पूछा।

—हर दसनम्बरिया। जानत नही हो आजकल अपन इलाके म उग्रवादियो का बोलबाला है। हर हिस्ट्रीशीटर उनका रूप धारण करके हथियार उठाय फिरता है। तुम्हारी चाकू छुरिया तो ब्लैक म बिकेंगी, ब्लैक म!—हमन ऐसे कहा, जैस पहली चाकू छुरी हम खुद ही खरीदना चाहत हो।

लद्दन को शायद हमारी बात पसन्द आ गयी, क्योकि उसके बाद हमन पाया कि उसने अपना शिमला जाने का कार्यक्रम रद्द कर दिया था और वह अपने आश्रम का रग रूप बदल रहा था।

एक और श्वेत-पत्र

घर वाली पहले नाकारा कहती थी, अब उसने मुझे अतिवादी घोषित कर दिया है। पिछले दिनों उसकी ओर से मेरे यहाँ सैनिक कार्यवाही हुई। लिखने का कमरा मेरे लिए किसी पवित्र स्थल से कम नहीं, श्रीमतीजी ने *बच्चा रैजिमेण्ट के साथ सीधे इसी पवित्र स्थान पर सैनिक कार्यवाही की।* मेरी बीस कहानियाँ और पन्द्रह व्यंग्य लेख खेत रहे। सुना है देश के बहुत से सम्पादकों ने सुख की साँस ली है।

उसने मुझे नाकारा घोषित किया क्योंकि मेरी कोई बालाई आमदनी नहीं है। सारा दिन कलम घिसता हूँ फिर भी बच्चा को पब्लिक स्कूल में पढ़ा नहीं पाता। पड़ोसी के यहाँ फ्रिज और टी० वी० हैं, मैं गर्मियों में कभी नया घड़ा भी नहीं खरीद पाता। और फिर साहित्य-सेवा के नाम पर मेरे यहाँ यार लोग लम्बी तान कर पड़े रहते हैं। एक दिन के लिए आते हैं चार दिन रहकर जाते हैं। जिस दिन मेरे कमरे में सैनिक कार्यवाही हुई उससे पहले ही एक साहित्यिक बंधु ने वापस प्रस्थान किया था, इसलिए घर वाली सन्तुष्ट नहीं है। उसका कहना है कि अतिवादी खत्म नहीं हुए। वे सिर्फ बचकर निकल गये हैं। इधर उधर छिटपुट बिखर गये हैं। कभी भी मेरे साहित्यिक बुखार की तरह उनकी वापसी हो सकती है। पर पत्नी खूब चौकस है। अब मेरे कमरे को वह साहित्य का अंग नहीं बनने देगी, उसने घोषणा की है।

सैनिक कार्यवाही के बाद मुझे हुक्म दिया गया कि मैं अपनी इन हर-

'कुता पर घर की मसद म एक श्वत पत्र प्रस्तुत करू। ब्योरा दू कि कैसे मैं एक रच्छा पति या पिता बनने क स्थान पर एक लेखक बन गया—एक पालतू गहस्थ होन के बजाय कहानिया लिखन लगा। सारी गली म एसा निठल्ला बावला एक भी नही। मेरी इस हरकत का पत्नी न अतिवाद का नाम दिया, और स्पष्टीकरण के लिए एक श्वतपत्र की माँग की।

मैंन अपनी नष्ट भ्रष्ट रचनाओ का दखकर रुआस स्वर म उस जवाब दिया लकिन मनिक कायवाही तो तुमन की है। कायदे स श्वतपत्र भी तुम्ह ही प्रस्तुत करना चाहिए।'

पत्नी भभक उठी, "यह घर है, देश नही। यहा रहना है, तो श्वतपत्र भी तुम्ह ही प्रस्तुत करना होगा।"

खर! मैंन घर की मज पर अपना श्वतपत्र रखा उसम दज किया कि, ह गृहस्वामिनी! तुम्हारे कभी न मानन के बावजूद मैं ऊचे पाय का लेखक हू। मेरा स्थान जानना है तो उन लघु पत्रिका वाला से पूछो जो चिट्ठिया लिख लिखकर मरी रचनाए मगवाते हैं। पहले उस रचना का पत्रिका म प्रयोग कर विशषाक के नाम पर शहर क इश्तिहार बटोरत हैं, फिर उन्ही अका को किताब म बदल कर धडल्ले स बाजार म बचकर अपना प्रकाशन खडा करते हैं। मैं रायल्टी की माग नही करता, अक भी खरीद कर पढ लेता हूँ। तो मुझ सवहारा का पक्षधर कहकर विद्रोही लखक घाषित कर दिया जाता है। किताब छपने पर भी मुझे उसके दशन ता होत नही, हा, रायल्टी की उम्मीद मे पत्र लिख दू, ता टुच्चा व्यवसायी घाषित करके बिरादरी बाहर कर दिया जाता हूँ। इसलिए हे सहधर्मिणी, तू मुझ बशक नाकारा कह किंतु अखबारी भाषा का प्रयोग करत हुए कम स कम अतिवादी तो न कह।

फिर तुम्हारा आरोप यह है कि मरी इतनी पुस्तकें छप गयी दखत ही दखत मरे प्रकाशक खुशहाल हो गय। लेकिन इन किताबा के बदले कमाकर कभी एक छदाम भी मैंन तुम्हारी हथेली पर नही रखा। हा, एक किताब जरूर तुम्हारे नाम समर्पित कर दी और दूसरी टीपू और लल्ला के नाम। तुम्हारा आरोप है कि मैं चुपचाप प्रकाशको से रायल्टी उगाह कर मर लेखका के साथ यारबाशी करता हूँ, और तुम्ह समपणो स बहलाने का

प्रयास करता हूँ। इससे बडा अतिवाद और क्या हो सकता है ? अब तुम्हे कसे समझाऊँ कि यह मेरा अतिवाद नही, लिजलिजापन है। इर प्रकाशक रायल्टी का तकादा सुनते ही रोनी सूरत बना लेता है। विस्तार के साथ मुझे बताता है, कि इस हिदी सेवा मे तो वह कही का नही रहा। तीन बरस से बल्क परचेज बन्द है। कागज के भाव आसमान का छू रहे है। प्रेस का देना सिर पर है, और प्रकाशन को ताला लगाने की नौबत आ गयी है। एसे मे उसके सिर पर रायल्टी का तकादा लेकर सवार हो गया तो मुझसे बडा अतिवादी भला और कौन होगा ? देखा इधर तुम मेरे अतिवाद मे परेशान हो और उधर मेरा प्रकाशक। तुमने सैनिक कार्यवाही कर दी है और वह करने की सोच रहा है। ऐसे म मैं क्या करूँ ? इसलिए तो तकादा करने के मूड का अतिवाद हवा हो जाता है और मैं अपनी पुस्तक तुम्हे समर्पित करके लिजलिजा हो जाता हू।

तुम्हारा यह भी कहना है, कि अगर मैं रायल्टी नही कमा सकता था तो कही से अपनी पुस्तक पर कोई इनाम ही ले आता। इतने बरस लिखने के बाद भी मैं कोई इनाम इकराम की व्यवस्था नही कर सका।

यह सही है कि इनाम की मैराथन म मैं हमेशा ही फिसड्डी रहा। इसका कारण यह नही कि मुझे कलम पकडनी नही आती, जैसा कि तुम सोचती हो बल्कि यह है कि आज के इस 'इनाम क्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' मे मेरा नही असली अतिवादियो का बोलबाला हो गया है। उनमे से कोई इनाम देने वाले आलोचक मडल का घर जमाई बन गया है। हर साल इनाम उन्हे मिल जाता है और शोर मचाने पर अतिवादी कहकर मुझे अखाडा बाहर कर दिया जाता है।

इसलिए हे जनकसुता राजदुलारी ! अतिवादी तेरा प्रियतम नही, यह पूरी व्यवस्था है कि जिसमे उसका लेखन आज कराहते हुए दम तोड देने को है।

अपना श्वेत पत्र पढकर मैं खुद ही भावुक हो गया। मुझे लगा, इसे पढकर मेरी पत्नी रो देगी, और सोचेगी कि जसे समय रहते इदिराजी ने सैनिक कार्यवाही करके पजाब को बचा लिया, इस तरह उसे भी कोई कार्यवाही करके इस साहित्य बलिदानी का उद्धार करना चाहिए।

पर हा दुर्भाग्य ! मेरी एक भी आशा पूरी नही हुई। श्वतपत्र पढकर पत्नी म इन्दिरा जी का आशीर्वाद नही किसी विरोधी दल का चीत्कार जाग उठा। उसन इस श्वत-पत्र का रद्द कर दिया, और उसे सफेद झूठ का पुलिन्दा करार दिया। उसके द्वारा की गयी मर श्वत-पत्र की आलोचना के मुख्य मुद्दे इस प्रकार थ—

(क) इस श्वत-पत्र म यह नही बताया गया, कि म किसी शरीफ आदमी की तरह बाबूगिरी करने के बजाय यह लेखन जैसा असामाजिक काम कैस करने लगा। मुझे लेखक किसन बनाया ? श्वेत-पत्र चुप है। पत्नी को शक है मैं जन्म का लम्पट हू। जरूर किसी पडोसिन के प्यार म पडकर कविता शविता करन लगा हूगा, और अब भी यह हरकतें करन से बाज नही आता।

(ख) यह श्वत पत्र मेरी पत्नी के उन सभी सदप्रयासो मीटिंगा क बार म कोई जानकारी नही देता कि जिनम उसने मुझे अभी भी लिखते चल जान की धृष्टता करन पर आडे हाथो लिया था। यह श्वेत-पत्र नही बताता कि कसे हर मीटिंग म उसके भाषण का जवाब अपने खर्राटा से देकर मैंन बात चीत को तोड दिया।

(ग) और फिर, उन विदेशी ताकता का भी कोई जिक्र इसम नही है, जिनस प्रोत्साहित हाकर मैं अभी भी लेखन जस अतिवादी काम म लगा हुआ हू। मेरी पत्नी के अनुसार य विदशी ताकतें उन निगोडी प्रशसिकाओ के पत्र हैं, जा हर रचना क बाद मुझे ढेर की सूरत मे मिलत हैं। या वे निठल्ले दोस्त जार ह जो मेरी हर पुस्तक के प्रकाशन पर जश्न क बहाने हफ्ता भर कमर म इकट्ठे होकर चारपाइयाँ तोडते रहते हैं।

मैंन इन ताकता का कोई जिक्र अपने श्वेत-पत्र म नही किया था। लकिन पत्नी का कहना ह, कि मैं अभी भी विदशी शक्तियो की गिरफ्त म हू इसलिए मरा यह श्वत पत्र किसी काम का नही। बल्कि इसका मुकाबला करन क लिए मरी पत्नी न अब अपनी सनिक कायवाही क दूसर चरण की घोषणा कर दी है। इस चरण म मेरे कमरे क कोन स मरी प्रशसिकाओ के पत्रो को खोजकर निकाला जायगा और मरे सामन उनकी होली जलायी जायगी।

सारे जहां से अच्छा

एक दिन अतरिक्ष-यात्री राकेश शर्मा न पृथ्वी का चक्कर लगात हुए हमारे देश का देखा था, और इदिरा जी को बताया था, ' मादाम सारे जहा स अच्छा ।'

हा साब, बताता भी क्या न ? ह और कोई ऐसा दश कि जिसम इतनी ऊची ऊची बफ स ढकी हुई चोटिया हो ? आह ! कितना सुन्दर नजारा था। ससार की सबसे ऊची चोटी माउण्ट एवरेस्ट और उस पर चढाई करता हुआ अभियान दल। न जान कहा-कहा के चित्र लिये थे राकेश शर्मा न—पहाडो के, मदाना के और भारत के चारो आर फल गहरे सागर के भी। न जाने कौन-कौन से खनिज पदार्थों का पता इन चित्रो से चला। हमारा तो कायाकल्प हो जायेगा। देशवासी खुश थे और गव स फूले नही समा रहे थे। सोचते, चलो हममें से एक तो अतरिक्ष म चला गया, चाह हमम से बहुतो के पास अभी फुटपाथ पर सिर छिपाने को जगह भी नही।

'देश मे खनिज पदार्थों के अगाध भण्डार छिपे हुए है य चित्र हम बतायगे'—मैंन कूडे के ढेर म से रोटी का टुकडा ढढते हुए एक फट हान बच्चे को बताया। उसन मेरी बात को किसी प्रलाप की तरह नजर-अदाज कर दिया, और मुडकर पूछने लगा, "बाबू, या तो महगाई अधिक हो गयी है, या लोग ही कुछ ज्यादा भुक्खड हो गये है—कूडे के ढेर म भी रोटी का एक टुकडा नही छाडते।"

मैं उसे रोटी की तलाश करता हुआ छोडकर आगे बढ गया। शहर पर

अधेरा झुक आया था, और कहीं-कहीं आसमान पर सितारे टिमटिमा रहे थे। दफ्तर खत्म हो चुके थे और लोग सड़कों पर झपटते चले जा रहे थे। बस-स्टापों पर बस के इंतजार में लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही थी। मुझे याद आया राकेश शर्मा ने बताया था अंतरिक्ष में सितारे टिमटिमाते हुए दिखायी नहीं देते। आप 'ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार' कैसे कहेंगे, जब वहां सितारे ही नहीं टिमटिमाते।

—लेकिन यहां देखो, आसमान में कोई-कोई सितारा कहीं-कहीं टिमटिमाने लगा।' मैंने क्यू में खड़े एक आदमी का कंधा थपथपाकर कहा। तभी बस आकर रुक गयी।

—तुम सितारे देखो मैं तो चला।" उसने चिल्लाकर कहा, और भाग कर बस में सवार हो गया।

मैं सारे शहर में भटकता रहा। टिमटिमाते हुए सितारे देखने की फुरसत किसी के पास नहीं थी। सब्जी मंडी में लोग कुंजड़िनों से भाव-ताव कर रहे थे और बची हुई तरकारी सस्ते भाव उठा लेने के फेर में थे। सितारे टिमटिमाते हैं या नहीं इनसे उन्हें कुछ नहीं लेना था। राशन डिपो वाला मिट्टी के तेल में मिलावट करने के लिए राशन कार्ड वालों को रात भर के लिए टरका देना चाहता था और डिब्बाधारी लोग अभी अपने हिस्से का तेल लेने पर तुले हुए थे। इस मारा मारी में भला 'टिंकल-ट्विंकल लिटिल स्टार' गाने की फुरसत किसके पास थी।

हां, यह 'मारा मारी' शब्द मुझे हर जगह अपना पीछा करता हुआ दिखायी दिया। पेट भरने और जिंदा रहने की मारा मारी कल की बात हो गयी। अब तो खुद मारा मारी अपने आप हर मर्ज का लाभकारी इलाज बनकर अपने देश में उभर आयी है। आपसे कोई समस्या नहीं सुलझ रही, दो चार लोग गोली में उड़ा दीजिए राजगद्दियों पर बैठे लोगों के कानों के पर्दे अपने आप खुल जायेंगे। वे जमाने कभी के गुजर गये जब जनता का या सरकार का ध्यान अपने साथ हो रहे अन्याय की ओर दिलाने के लिए लोग फूलमालाएं पहनकर भूख हड़ताल पर जा बैठते थे। सुबह भूख से दहकती आतों के साथ रामधुन गाते थे और रात के अंधेरे में हड़ताल का अगला दिन काटने के लिए मिठाई की हंडिया चट कर जाते थे। लम्बे-लम्बे जुलूस

निकालते थे, हड़ताल होती थी, घिराव किये जाते थे, तब बात बनती थी। पर अब इतने लम्बे टंटे में कौन पड़ता है, भाई। देशी फिल्मों और जासूसी नावलों ने बहुत से रास्ते दिखा दिये हैं। दो चार नेता लोगों को गोली से उड़ा दीजिए, फिर उनके बच्चों को उठा ले जाने की धमकी दीजिए। जिन्दाबाद मुर्दाबाद नहीं, ठाय-ठाय-ठस्स कीजिए—मांगें अपने आप मान ली जायेंगी।

तो अपने देश से उभरने वाली आवाजें बदल गयी, लेकिन अन्तरिक्ष तक शायद ये आवाजें जाती नहीं। हां, पंजाब के ऊपर से गुजरते हुए व्योम-यात्री को अगर दो चार लाशें कहीं बिखरी हुई दिखायी दी होंगी, कोई घर कहीं जलता हुआ नजर भी आया होगा, तो हो सकता है उन्हें दूर से देखने पर ये कोई नयी किस्म के फूल लगे हों, कि जो आज धर्म और जाति के अलम्बरदार हमारे देश को भेंट कर रहे हैं। आखिर इन फूलों ने ही तो अपने देश को सारे जहां से निराला बना दिया!

उधर अंतरिक्ष में राकेश शर्मा ने कहा था, सारे जहां से अच्छा, और इधर देश के एम्पलायमेंट ऐक्सचेंजों के बाहर बरसों से नौकरी की इंतजार में खड़े नौजवान ने भी कहा, सारे जहां से अच्छा। बहुत भटक लिया इन नौजवानों ने नौकरियों के इंटरव्यू में। कहीं किसी इंटरव्यू में इनकी जेब में साहिब के लिए ठीक आदमी का सिफारिशी पत्र नहीं निकलता, और कहीं दफ्तर के भगवान् की मूर्ति ने जो चढ़ावा मांगा, वह इनकी फटी जेब में नहीं है। अब इनके पास सिर्फ इंतजार है, और घर में बूढ़े बीमार मां-बाप। राकेश शर्मा अंतरिक्ष में पहुंच गया। यहां समस्या यह है कि कल लुधियाना में इंटरव्यू है राह टिकट के पैसों का जुगाड़ कैसे होगा?

अंतरिक्ष यात्री ने कहा था, बहुत जगह है अंतरिक्ष में। न जाने कितने ग्रह, कितने सितारे और कितनी धरतियां आदमी के पैरों का इंतजार कर रही हैं। पूरा ब्रह्माण्ड इंसान के सामने खुला पड़ा है और हम अपने छोटे-छोटे झगड़ों में उलझे हुए हैं।

—हां साब, आपको छोटे छोटे झगड़ों में नहीं उलझना चाहिए। अब आप अंतरिक्ष की ओर पलायन कीजिए, ताकि हम इस धरती पर अपनिस्तान बना सकें। बहुत दिन रह लिया आपने इन काठियों में। अब

आप अपने लिए मगल ग्रह म जगह तलाश कर लीजिय, और ये कोठिया हमार लिए खाली कर जाइए । मकान मालिक न आग ही हम बहुत परशान कर रखा है।" सुनन वाला ने हमे समझाया, और फिर शहर की सडको पर प्रोटैस्ट माच के लिए निकल गये। टी० वी० कैमरा वाल आयेंगे ता यही प्रोटैस्ट मार्च अमन मार्चों मे तब्दील हो जायगे, और इनके आग चलत हुए लोग हाथ जोडकर किसी शाति अवतार स दिखायी देन लगेंगे।

लकिन छाडिए सारे जहा से अच्छे अपने देश की बातें। आइए दूर चले इन प्रोटैस्ट और शाति मार्चों से। दूर उस अतरिक्ष म कि जिसके पैरो म आकाश-गगा बहती है। वही आकाश-गगा कि जिस अतरिक्ष यान से देखने पर व्योम पुत्र को दूध-गगा का भ्रम हुआ था। पर दूध की इस किल्लत के जमाने मे कैसे चलें दूध गगा की ओर? दखिए न, असल दूध ता शायद दूध-गगा में चला गया, और सुबह दूध वाला भी नोटिस दे गया है— बाबू, गर्मी आ रही है । हमारी भसो का दूध भी सूख रहा है। थाडा रेट बढाना हागा।"

मैं क्या जवाब देता? हा मे सिर हिला दिया और अपने हिस्से के दूध म और भी पानी मिलात हुए सोचने लगा—'सारे जहा से अच्छा!

सिरहाने मीर के

मीर साहिब रो रहे थे। अभी रोते-रोते सो गय हैं। मैं उनके सिरहाने बैठा हूँ, और कुछ न-कुछ बोलते रहना चाहता हू—क्या कहा आपने? बोलिए हजूर, जरूर बोलिए! बोलना तो हम हिन्दुस्तानियो का ज म-सिद्ध अधिकार है। हमने अपने हर मज का इलाज बोलने मे ढूढ लिया है। देश म इकलाब नही आ रहा, गरीब और भी गरीब, और अमीर और भी अमीर होत जा रह हैं, तो कोई चिन्ता नही आप इक्लाब पर भाषण कीजिए। आपके इलाके मे धम के नाम पर इन्सान और इन्सान के बीच नफरत का बीज वोया जा रहा है। सरे-बाजार हिंसा के व्यापारी इसानी जिंदगियो के सौदे करते हैं। हँसते-खेलते परिवारो को मौत के घाट उतार देते हैं तो क्या हुआ? आप धम के नाम पर कुर्सी-आदोलन का चलता रहने दीजिए और दूरदशन पर आपसी सद्भाव और भाईचारे पर भाषण कीजिए। गले मे हार पहनकर किसी अमन-मार्च के आगे-आगे चलिए और फोटोग्राफरो को अपना फोटो उतारने का मौका दीजिए। जब दूसरे दिन सपादक जी अपने समाचार-पत्र के मुखपृष्ठ पर आपका चित्र छापकर ध य ध य हो जायें, ता आप अपने पवित्र धम को सकट स उभारने के लिए और भाषण तैयार कर लीजिए।

हमने सोचा, मीर साहिब बीमार हो गये हैं, इसलिए उनकी तीमारदारी के लिए हम भी उ है मिजाज-पुर्सी का एक भाषण पिला आये। लेकिन यहा आय तो पाया वह बीमार नही थे सिफ भाषणो से डर कर सो

गये थे। एकाध भाषण तो आदमी सह जाता है, लेकिन यहा तो उनके गिर्द हर ओर से भाषणो का सिलसिला जैसे लम्बा ही होता जा रहा था। वह जिस भी क्षेत्र की ओर निकलते, नेता लोग उन्हे माइक समझकर शुरू हो जाते। अपने धुआधार भाषणो के साथ उनका हुलिया बिगाड देते। अपने देश मे हर काम एक भाषण के साथ शुरू होता है और एक भाषण के साथ ही उसे खत्म कर दिया जाता है। हम जसी साधारण वोटर जनता तो ठनठन गोपाल की तरह इन भाषणो को ही अपनी जेब मे भरने की कोशिश करती रहती है लेकिन हमारी बात छोडिए, मीर साहिब की कहानी कहू।

मैंने न जाने कितने दिन मीर साहिब को अपनी बैठक मे बठकर समाजवाद का सपना देखते देखा है। उनका विचार था कि अपने देश मे यह समाजवाद पचवर्षीय योजनायें लायेंगी। आम आदमी की भुखमरी के लिए बीस-सूत्री कायक्रम मौत का नोटिस बनेगा। छब्बीस बरस तक मीर साहिब भूख के खात्मे और समाजवाद के आने का इन्तजार करते रहे। छ योजनायें गुजर गयी, समाजवाद नही आया। आया तो समाजवाद पर भाषण आया जो हर नेता ने टोपी बदलकर उन्हे दिया। बीस सूत्री कायक्रम की उम्र दो चुनाव हो गयी, लेकिन भूखे लोग तो उसी तरह अपनी झुलसती हुई आंतो के साथ रोटी का इन्तजार कर रहे थे गरीबी हटाओ और भूख भगाओ के सब नारो के बावजूद मीर साहिब इन भूखो के हाथ मे रोटी देखना चाहते थे, लेकिन नेता लोग इन्हें नारो की खाली तश्तरी पकडा रहे थे।

अखिर कितने दिन मीर साहिब इस भाषण और नारा सस्कृति को सहन करते। एक दिन वह इस सस्कृति से उसी तरह ऊब गये जिस तरह आप शायद आजकल दूरदशन या आकाशवाणी के एक रस कायक्रमो से ऊब गये हैं। मीर साहिब ऊब गये, तो उन्होंने रग बदल लिया और अपने छायावादी होने की घोषणा कर दी। आदमी जब छायावादी हो जाता है तो प्रेम करने के लिए निकलता है। पर प्रेम करने के लिए एक अदद प्रेमिका की जरूरत होती है। तो मीर साहिब प्रेमिका ढूढने निकले। वह अज्ञेय जी की प्ररणा से हरी घास पर प्रेमिका के साथ क्षण भर बठना चाहते थे। लेकिन शहर भर मे दूर दूर तक हरी घास का कही निशान भी नही था। जहा कभी बाग होते थे वहां अब सरकार ने अपने दफ्तरो की इमारतें

उठा दी थी, या दुकानें वनाकर नीलामी के इश्तिहार चिपका दिए थे। पर घास नही मिली तो क्या हुआ ? मीर साहिब के मन म प्रेम सहसा उछला, कि जस एक दिन एक कवि ने अपने आस पास के नजारो म एक वूद को सहसा उछलत हुए दख लिया था। घास का विचार छोड मीर साहिब वह उछलती हुई वूद देखन निकले। पर शहर के नुक्कड चौराहा पर नगरपालिका के नल सदा की तरह जलविहीन थे, और उनके गिद खाली बतनो की कतारें लगी हुई थी। यहा मीर साहिब को सिफ थकी हुई औरतें पानी का इन्तजार करती हुई मिली। पानी ही नही था, फिर एक वूद कसे महसा उछलती ?

पर उन्होंने हिम्मत नही हारी। सारा दिन शहर मे भटकते रहे, तो सहसा उन्ह यह वूद मिल गयी—माफ कीजिए बूद नही, प्रेमिका !

वह दफ्तर से लौट रही थी, और इस समय बस के क्यू म उनके बिल्कुल पीछे खडी थी। शाम का वक्त था, और भीड की धकापेल थी। हर आदमी घर पहुचन की जल्दी म था और हमेशा की तरह एक-दो लोकल बसें रूट पर बिगड गयी थी, इसलिए भीड लगातार बढती जा रही थी। मीर साहिब ने अपने पीछे खडी उस औरत की ओर देखा। वह उनकी गली मे रहती थी और चश्मा पहनने के बावजूद उन्ह अपने प्रति भावुक लग रही थी।

—आपको यह चाद कसा लग रहा है ? उन्होंने उस औरत को बस स्टैंड के पीछे उगता हुआ चाद दिखाते हुए कहा।

—लगता है, छह पच्चीस की बस नही आयगी। औरत ने हाथ झटक कर कहा।

—अजी छोडिए भी बस को। कभी तो आदमी रुटीन स अलग होकर जिये।

—रूट मे रुटीन वनता है, या रुटीन शब्द से रूट ? औरत न हँसकर जवाब दिया।

मीर साहिब इस हँसी से उत्साहित हो गये। झट मे बात को आगे बढाने लगे, "अरे वहा आसमान म एक बादल का टुकडा भी चला आया। देखिए चाद और बादल के टुकडे म कैसी आख मिचौनी हो रही है।

उन्होंने कहा। उनके सामने जैसे फिर एक बूंद सहसा उछल गया थी।

तभी स्टैंड के सामने एक बस आकर रुक गयी। भीड़ बेपनाह थी और बस का क्यू बहुत लम्बा। औरत ने बस की ओर और मीर साहिब ने औरत की ओर उम्मीद के साथ देखा।

—आइए इस क्यू से बाहर चलकर चांद की ओर देखें। मीर साहिब ने फिर सुझाव पेश किया तो औरत को अपनी बस मिस होती हुई लगी।

"हाए हाए बूढ़ा मुहझौसा ! इस उम्र में भले घर की औरतों को छेड़ रहा है।" वह जवाब में चिल्लायी। सब वहां हंगामा हो गया। दो-चार क्षण के लिए लोग बस को भूलकर मीर साहिब की ओर मुड़े, और इधर वह औरत इस भीड़ में से निकल गयी। मौके का फायदा उठाकर बस में सवार हो गयी। कंडक्टर ने सीटी दी, और बस यह जा वह जा। अब जिनकी बस छूट गयी उन्होंने मीर साहिब को घेर लिया और इस उम्र में उनके नापाक इरादों पर अपनी राय प्रकट करने लगे। मीर साहिब शर्मिन्दा होने के सिवा क्या करते। अब चांद की ओर देखा तो वहां भी जैसे एक बूढ़ी औरत उन्हें चरित्र पर भाषण दे रही थी। मीर साहिब रोटी के भाषण से बचे थे और यहां चरित्र पर भाषण मिल गया। क्या करते बेचारे ? क्यू से खिसक लिए, और पांव पांव घर की ओर रवाना हो गये। अभी जो बूंद सहसा उछली थी, वह शायद अब रास्ते में उनकी आंखों से गिरी होगी। तभी तो घर पहुंचते ही उन्हें बिस्तर पर गिर कर नींद आ गयी। मैं मिजाजपुर्सी के लिए उनके सिरहाने बैठ गया। सोचा जैसे ही उनकी आंख खुलेगी, आहिस्ता से समझा दूंगा।

'भाषण संस्कृति से अपनी नजात नहीं है मियां ! क्यों चांद की तलाश में यहां-वहां भटकते फिरते हो !'

उम्र भर का रोना

हमारे इलाके म सभी इम्तहान मुल्तवी कर दिए गए हैं, और नौजवान घर की छता पर कनकौए उडा रहे हैं। यहा इम्तहान मुल्तवी हाने से पहले की कुछ घटनाए बडी नाटकीय थी। एक छात्र सगठन सरकार ने गैरकानूनी घोषित कर दिया, क्योकि वे हथियारा के साथ हुडदग मचाने की ट्रेनिंग देने पर आमादा थे। वैसे तो हुडदग मचाना छात्रा का जन्मसिद्ध अधिकार है लेकिन बात जब हथियारा पर आ जाय तो खतरा जरा बढ जाता है। इस खतरे से घबराकर सरकार ने उस छात्र-सगठन को तो गैरकानूनी घोषित कर दिया, पर इस देश म आखिर कानून पर चलता ही कौन है? फिर किसी एक सगठन को गैरकानूनी घोषित करने से होता भी क्या? हा, सगठन को गैरकानूनी घोषित कर दिया, ता वे परीक्षाओ का गला काटने पर आमादा हो गये। राता रात कई कालिजा के रिकाड रूम जला दिये गये। पर भला इसमे क्या नुकसान हुआ? आखिर कालिजा के रिकाड रूमा म होता ही क्या है? यही न कि किस प्रिंसिपल न कितना पैसा छात्र कल्याण फड से खाया, या कि कौन सा कलर्क मागी गयी फाइल को रिकाड रूम के अधेरे मे फेंक आया। रिकाड रूम जले तो इन प्रिंसिपला और कलर्कों न सुख की सास ली कि न रहेगा बास और न बजेगी बासुरी।

पर बात यहा तो खत्म नही हुई। इसके पहले कि इम्तहान शुरू हो, पर्चे लीक हान लगे। पर्चे लीक होना भी कोई नयी बात नही है। हर बरस लीक होते हैं। पहुच वाले लोग दो चार पर्चों पर हाथ साफ करते हैं, फिर

उनकी फोटास्टेट कापियां सौ-दो सौ रुपया प्रति कापी हर शहर में बेच देते हैं, और सारा साल सिनेमा हाल में गुजारने वालों को परीक्षा हाल की वैतरणी पार करवा देते हैं। पर इस बार यह क्या हुआ ? पर्चे लीक हुए, और नेता लोगों ने पत्र प्रतिनिधियों में बांट दिये। अब पूछिये कि यह संवाददाता इन पर्चों का क्या करेंगे ? अखबार में छापने के लिए और खबरें थोड़ी हैं!

पर भाव कौन सुनता है ? पर्चा लीक होने की खबर अखबारों में छपी, और *यूनिवर्सिटियों के कुलपतियों ने इम्तहान मुल्तवी कर दिए।* इन अपनी परीक्षाओं के स्थगित हो जाने का असर कई स्थानों पर कई प्रकार से हुआ। सबसे पहले तो कालिजों के इम्तहान स्थगित हो जाने की खुशी में स्कूलों की छोटी कक्षाओं के इम्तहान भी स्थगित कर दिये गये। मुख्याध्यापकों ने आठवीं कक्षा तक सब छात्रों को पास घोषित करके दर्जा चढ़ा दिया। लड़के बच्चे तालियां घुमाते हुए घर की ओर लौटे। मेरे बच्चे ने खुशी के साथ चमकती हुई आंखों के साथ मुझे बताया—नया कानून पास हुआ है पापा। अब इम्तहान हमारी जगह टीचर लोग दिया करेंगे और दर्जा हमारा बढ़ेगा।

दूसरा जो थोड़ा बड़ा था उसने फरमाया—हमारी सरकार भी कभी समझदार है। कैसे अच्छे-अच्छे कानून पास करती है। इसे तो हर बरस इम्तहान के समय किसी-न किसी छात्र-संगठन को गैरकानूनी घोषित कर देना चाहिए।

इधर कालिजों में मुर्दनी छायी हुई थी। इम्तहान में पानी पिलाने *वाला वाटरमैन खुद ही पानी पी पीकर अपना गम भुला रहा था।*

मैंने पूछा—क्या परेशानी है ?

बोला—पानी किसे पिलाऊँ ?

मैंने कहा—नुक्कड़ पर प्याऊ लगा लो। राह चलते प्यासों को पानी पिला दोगे तो तुम्हारा दूसरा लोक सुधर जायेगा।

—पर इस लोक *का क्या करूं ? राह चलते लोगों को पानी के गिलास* के साथ पर्ची तो नहीं पकड़ा सकता। निरा पानी पीकर तो कोई दस पैसे भी नहीं देता।

उसका धधा वास्तव मे खोटा हो गया। नकलची छात्रा की इम्तहान का डर खत्म हो गया। व छत पर कनकौआ उडा रहे हैं। वाटरमैन, पर्ची किसे दन जाय ? परीक्षा के दिना मे तो वह सुवह का कुल्ला भी दूध से क्या करता था, अव तो पानी मे ही चाय की तासीर तलाश कर रहा है। उसकी तकलीफ जायज है।

वाटरमैन को उसकी तकलीफ के साथ छोडकर मैं आगे चला और छत पर कनकौआ उडाते हुए नौजवान के पास गया।

—अव आपकी अगली माग क्या है ? मैंने उससे पूछा।

—वो काट्टा ! उसने कहा, और पडोसी की पतग काटकर अपन कन कौए के साथ उलझा ली।

—अव आपकी अगली योजना क्या है ? मैंने उससे फिर पूछा।

—इस सडे गले निजाम को पूरी तरह से वदल देना। उसने अपनी वाहा की मछलिया को फुलाते हुए कहा।

—कैसे ?

—नौजवानो का साल नष्ट नही होने दिया जायगा। हम सब लोगो को बिना इम्तहान लिये पास करना होगा ! आठवी तक स्कूलो मे हो गया है, कालिजा मे हम करवा लेंगे। उसने मुझे जलती हुई आखो के साथ वताया।

—हा थड क्लास मे सवको पास किया जा सकता है।

—थड क्लास क्या ? वह तो हम नकल करके भी ले जाते। इस वार तो सब फस्ट क्लास मे पास होंगे। उसने वताया, और मुझे रास्ता छोडने का इशारा करत हुए अपनी डोर को माझा देने लगा।

मैं छात्रा की वात लेकर यूनिवर्सिटी तक गया। उपकुलपति के दरवाजे पर दस्तक दी।

—अजी, क्या वात करते हैं आप ? ऐसा भी क्या कभी होता है ! इम्तहान ता जरूर होंगे, चाह छ महीन के वाद हो।" उप कुलपति ने मेरी बात सुनी तो वह एकदम चिहुक कर वोला ! मैं कनकौआ उडाने वाले छात्र की वात का लेकर उस तक पहुच गया था, पर उसे मेरी वात फालतू लगी। मेरी ओर हिकारत की नजर से देखा, वाहर निकल जान का हुक्म

दिया, और खुद 'यूनिवर्सिटी सुधार कमीशन' की एक मोटी रिपोर्ट पढ़ने लगा, जिसमें लिखा था—इम्तहानों से छात्रों की योग्यता की सही परख नहीं होती।

मैं बाहर आया तो एक अध्यापक को हँसते हुए पाया। वह हँसकर बोला—इम्तहान नहीं, प्राइवेट कोचिंग ही छात्रों की योग्यता को बढ़ाना है। जितना इम्तहान स्थगित होंगे, यह योग्यता उतनी ही बढ़ेगी। अब मेरा कोचिंग सेक्शन बढ़ता जायेगा, क्योंकि इम्तहान का डर तो खत्म नहीं होगा! वाह, अच्छा फैसला हुआ—मैं बहुत खुश हूं।'

तो यूं इम्तहान स्थगित हो जाने पर सब लोग खुश थे, और देश का कल्याण हो रहा था। पर जब मैं आगे बढ़ा, तो एक लाइटपोल के नीचे बैठे एक लड़के को मैंने बुरी तरह से रोते हुए पाया। रोज रात को इस लड़के को यहां अपनी किताबें खोलकर पढ़ते हुए पाता हूं। आज वह पढ़ नहीं रहा था, रो रहा था।

—क्या हुआ? मैंने पूछा।

—इम्तहान स्थगित हो गये। मैंने सोचा था, जल्दी से इम्तहान खत्म करके किसी काम में लगूंगा। उसने बताया।

—कोई बात नहीं। कुछ दिन की तो बात है। एकाध महीने में सब निबट जायेगा, फिर इम्तहान दे देना।

—पर एकाध महीने में तो गर्मी बहुत बढ़ जायेगी। बिजली कट भी लगेगा। इस लाइटपोल में रोशनी नहीं होगी, और हमारे घर में तो मिट्टी के तेल के लिए एक छदाम भी नहीं। मैं कैसे पढ़ूंगा?'

लड़का रोता रहा। उसे शायद उम्र भर रोना था।

मैं एक ठंडी सांस लेकर आगे बढ़ गया।

एक नये नेता का जन्म

लद्दन मुस्करा रहे हैं, और आजकल सबसे जिंदाबाद की भाषा मे कम और मुर्दाबाद की भाषा मे अधिक बात करते हैं। जी हा, वह नेता हो गये हैं और आजकल सब काम छोडकर देश की चिन्ता कर रहे हैं। अपना देश है भी चिन्ता करने के काबिल। यहा लोग जब नम्बर दो का धधा करते हुए इस लोक से अघा जाते हैं, तो परलोक की चिन्ता करने लगते हैं। तस्करी से फुरसत मिल जाती है तो समाज-कल्याण मे हाथ बटाते हैं। अधेड आयु की वजह से पेट निकल आये और सिर टकला हो जाये, तो पडोसिने घास डालना बन्द कर देती हैं। ऐसे समय मे ये अधेड जीव उदास होकर समाज-सेवी हो जाते हैं। समाज सेवी हो जाने के बाद ये 'पीडित महिला-सुधार केन्द्र' खोलते है, और नारी जाति के सुधार के लिए अपना शेष जीवन अर्पित कर देते है। फिर देखते ही-देखते नारियो का सुधार शुरू हो जाता है और इस अधेड टक्ले पुरुष की उदासी दूर हो जाती है।

पर इधर यह क्या हुआ ? लद्दन अधेड थे, उदास भी। ब्योपार मे डडी मारने की वजह से टक्ले हो गये थे और कालाबाजारी के कारण पेट भी निकल आया था लेकिन तो भी लद्दन ने अपना जीवन समाज-सेवा के लिए अर्पित नही किया। शहर की पीडित नारिया पीडित ही रही। उन्होंने इनके लिए कोई सुधार केन्द्र नही खोला, और खुद जिन्दाबाद नही मुर्दाबाद की भाषा मे बात करने लगे। अब लद्दन नेता हो गये। शहर मे बहुत दिन से कोई नुमाइश नही लगी थी, कोई सर्कस नही आया था। लद्दन राजनीति

मे आ गय हैं—खबर फैली तो लाग उनके दशन करन के लिए आन लगे। मैं भी प्रणाम करने के लिए गया। उन्होंने मुझे अपन कमर म घुसत हुए देखा ता मुह फेर लिया। मैंने नमस्कार किया तो मुख नजर-अदाज कर दिया। मैंन अपना परिचय दिया, ता लगभग भूलन के से अदाज म मुह बनाकर बोले, "लगता तो है आपको कही देखा है!"

मुझे लगा वह सच ही नेता हो गये हैं। हमारे शहर म, इस पिछडे हुए मुहल्ले से देश की राजनीति के आकाश पर एक नया सितारा उभरा। मैं गदगद हो उठा। उसी भाव से उनका इटरव्यू लेन पर उतारू हो गया। इस बीच लट्टन मुझे वहा से भगा दन के लिए अपन कारिन्दा को इशारा कर चुके थे। कारिन्दे धमकाने वाले भाव से अपन भुजदण्डा को थपथपात हुए मेरी ओर बढ रहे थे। पर इसस पहले कि व मुझे गदन से पकडकर उस कमरे से निकाल देते मैंन जल्दी स अज किया कि जनाब यह हमारे मुहल्ल के लिए एक एतिहासिक गौरव की बात है कि आप नेता हो गय हैं। मैं एक टूटा फूटा लेखक हू और आपका इटरव्यू लेकर अपना जीवन धन्य करना चाहता हू।

शब्द टूटा फूटा ने गजब का असर किया। कारिदा न मेरी आर ध्यान से देखा। उन्हे लगा कि मैं सच बोल रहा हू। इस बीच लट्टन न भी सुन लिया कि मैंने इटरव्यू सम्बन्धी कोई बात कही है। नेता हो गय थ न। एकाएक उनकी आखा म मेरी पहचान लौट आयी। भया भैया' कहकर उन्होंने मुझे गले म लगा लिया।

—इटरव्यू के साथ फोटू भी छपगा न? उन्होंने पूछा। मैंन सिर हिला दिया ता कारिदा को फोटोग्राफर बुलाने के लिए भगाया। मरे सामन पकौडो की प्लेट आ गयी। बाद म शायद चाय भी मिलेगी। मैंने इटरव्यू शुरू किया।

—लट्टन महाशय, महात्मा गाधी के सामन भारत मा की गुलामी की बेडिया काटने की मजबूरी थी इसलिए वह नेता बने। आपकी एसी क्या विवशता है कि आज आपको नेता बनना पडा?

—मेरी विवशता तेरी भाभी धन्नो है। छाट महात्मा जी भारत मा के हाथा बबस हुए, और हम बीबी के हाथो। उसका तज स्वभाव ता जानत

ही हो। घर म किसी को बोलन नहीं देती। हरदम भाषण करती रहती है। आखिर हमें भी तो यही भाषण दना है। अब चार लाग आस पास जुटे रहते हैं। हमने उन्हें भाषण दिया ता लोगा न कहा कि हम नना हा गय।

—धन्य हैं धन्नो भाभी ! एक वह नारी थी जिसने तुलसीदास का कवि बनाया, और एक यह महान नारी है जिसन आपको नता बना दिया। हमन श्रद्धा भरे स्वर से कहा।

—देखो जी, इटरव्यू हमारा हो रहा है। तुम हमार बहाने धन्ना की बात मत छेडो, हम पर से पाठक का ध्यान हट जायगा। जो पूछना है, हमारे बारे में पूछो। हमारी बात से लल्लन भभक उठे। उन्होंने हमार हाथ स पकौडी की प्लेट छीन ली और सामन तिपाइ पर रख दी।

नता लाग अपना इटरव्यू नहीं बाटते हम जानते थे। पर प्लेट छिन जान स हम भी गुस्सा आ गया। हमने अब सीधा सवाल दागा—"हर नेता की राजनीति का कोई अथ होता है, लल्लन। कोई भ्रष्टाचार-उन्मूलन का अलख जगा रहा है और कोई बेकारी दूर करो अभियान में लगा है। अपनी राजनीति का अथ और उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।"

—अजी हमारी राजनीति का अथ तो बडा साफ ह। बरसात आ गयी ह। इस मुहल्ले के सब घरा की छतें गिरन वाली हैं। इन्हे पक्का करवाना है। तर घर की छत भी ता टपकती है। सबको सीमेंट चाहिए, और सीमट हमार गोदाम मे है। उधर छुट्टन न बिना नक्शा पास कराय दो छप्पर डाल दिये, ता नगरपालिका वाले उस पर चढ दौडे। हमने चार पैसे कमाकर सीमट बचना चाहा, तो हम पकडने क लिए आये। बस अब तो हम सबको साथ लेकर कानून उन्मूलन की राजनीति करेंगे—खुले-आम आपके छप्पर डलवायेंगे—खुद अपन दाम पर सीमट बचेंगे।'

—राजनीति के बार म आपके विचार जानकर मुझे बडी प्रसन्नता हुई। हमने पुन पकौडी की प्लेट की ओर हाथ बढ़ात हुए अज किया। फिर ध्यान आया अभी इटरव्यू बाकी था।

—आपकी राजनीति की राजनीति क्या होगी? हमन पूछा।

—वही जो आज हर नय नेता की है। हम अपनी पार्टी बनायेंगे, एक नयी पार्टी।

—इस पार्टी का नाम क्या होगा ?

—"लद्दन देशम । इस जजर देश में लद्दन के सम विचारकों के लिए एक नया देश बनाने की माग, कि जहां हम अपने कायदे-कानून से जी सकें, अपने धर्म का पालन कर सकें।"

—लेकिन हमारा देश तो भारत है, और हम सब भारतीय। फिर आप इस देश में कौन से नये देश की मांग कर रहे हैं ? और यह किस धर्म की बात छेड़ दी आपने ? हम सबका तो एक ही धर्म है, इन्सानियत !

—अजी आजकल सब ओर यही तो हो रहा है। भारत तो पीछे रह गया। आजकल कोई भारतीय नहीं है। सब पजाबी, बगाली, गुजराती हो गये हैं। और छोटे ! इन्सानियत कोई धर्म नहीं, महज एक किताबी बात है जिसे आज कोई नहीं मानता।

—तो आपका धर्म कौन सा है ?

—लद्दन धर्म। आज इस धर्म के झण्डे के नीचे बहुत से लोग इकट्ठे हो रहे हैं। वे लोग कि जिनकी अवैध इमारतों के नक्शे पास नहीं हुए और वे सब कि जिन्हें कालाबाजारी कहकर तुम्हारा इस्पैक्टर पकड़ने के लिए आया। जानते हो इस देश में कानून तोड़नेवालों की सख्या बढ़ती जा रही है, इसलिए हमारा धर्म कभी मरेगा नहीं—सदा फलता फूलता रहेगा।

—इस नये धर्म के नेता के रूप में जनता के नाम आपका सन्देश ? मेरा आखिरी सवाल था।

—मेरे देशवासियो, आज आपका लद्दन धर्म खतरे में है। जानते हो, जो कौम अपने धर्म की रक्षा नहीं कर सकती, वे खत्म हो जाती हैं। इसलिए हे लद्दनधर्मियो आगे बढ़ो, और अपने धर्म की रक्षा के लिए जीवन देने के लिए तैयार हो जाओ !

अपनी बात कहते हुए लद्दन की वाणी में अजब ओज आ गया था। लगा आजकल यह ओज मैंने देश में उभरते हुए और भी बहुत से नेताओं के चेहरे पर देखा है। लद्दन अकेले नहीं हैं।

यह सच नही है

भाई हद हो गयी। बरसो हमने आपकी इतनी सेवा की। अपना पसीना बहाकर आपके खून की कमाई इकट्ठी की। आपके भले के लिए इस कमाई का ट्रस्ट बनाया और इसके अध्यक्ष बने। और आपने हमारे ही खिलाफ हगामा खडा कर दिया, हमे अदालत मे घसीट लिया। और तनिक इन अखबार वालो को तो देखो, कहते हैं हमारे एक भाई ने नेता होने के बावजूद हवाई जहाज का सफर करते हुए दो घूट चढा ली, अपने साथ यात्रा करती महिला यात्री को छेडा, परिचारिकाओ की शान मे गुस्ताखी की। बस बावला खडा कर दिया। अरे भाई, क्या कहर आ गया ? हम तो कहे, झूठ की भी कोई हद होती है। लिखते हैं कि हमारे भाई को नियन्त्रण मे रखने के लिए हवाई जहाज के कर्मचारियो को उनके ऊपर बैठना पडा। अरे भाई, वह आदमी थे कि घोडे, कि कर्मचारियो को उनकी लगाम सभालने के लिए उनके ऊपर बैठना पडा ?

यही बस नही। ये झूठ बोलने वाले तो दो जूते आगे चले गये। कहते हैं—हमारे भाई जब विदेशी हवाई अड्डे पर पहुचे, तो वहा औरतो की खूबसूरती देखकर भौचक्के रह गये। सडको पर खूबसूरत औरतो के पीछे भागने लगे। लीजिए साब कि जैसे वह कोई नेता न होकर मजनू हो गये, कि जहा औरत देखी, चप्पल उतार कर उसके पीछे हो लिये।

हम नेताओ के साथ यही सब होता रहता है। जनाब, हमसे जलनवाले ऐसे ही टुच्चे टुच्चे आरोप लगाने के बाद हमसे त्याग-पत्र मागते हैं। जैसे

ही बाई जासयर मन्त्री बनता है य छुटमय्य उसर पीछे पड जाते हैं। देखा, य झूठे षडयन्त्र रचके हमारे खिलाफ खड़े कर दिये फिर हमारे नम भाई को नपट लिया। पर हम आपको साफ बता दें, हमन बहुत राजनीति की है। हम इन चालों म नही आने वाले। हम कुर्सी का लाभ नही। हम जानते हैं आज यह कुर्सी छोड देंगे, कल इससे बड़ी कुर्सी पा लेंगे। इसलिए यह लो त्यागपत्र और हम जैसे निर्दोष आदमी पर कीचड उछालना बन्द करो।

क्या फरमाया आपने ? कि अगर हम निर्दोष हैं तो सारे मामले की निष्पक्ष जाच करवा लें। नही जी, हम यह मजूर नही। हम क्या करवाएँ जाच ? एक तो हम षडयन्त्र झेले और दूसरे जाच भी करवाएँ—ये दो काम नही होंगे। हाँ हम आपको स्पष्ट बता दें कि हम लोगो के खिलाफ जो हगामे खडे होते रहते हैं यह सब विरोधी दलो की कारिस्तानी है। कभी हमसे त्याग-पत्र मागते हैं कभी हम राजनीति छोड जाने के लिए कहते हैं। अब आप ही बताइए कि हम राजनीति छोड देंगे तो देश की चिन्ता कौन करेगा। आज ही देश म निष्काम सेवकों की कितनी कमी हो गयी है।

हा यह आपने ठीक कहा कि ऐसी कुचर्चा से हमारी बदनामी हुई है। हम निर्दोष हैं, तो हमें इन कुचर्चा करने वालो के विरुद्ध मानहानि का मुकद्दमा करना चाहिए। निर्दोष तो हम हैं ही साहिब। पर जब राजनीति म आ गए तो मान अपमान की क्या चिन्ता ? आजादी की लडाई मे पुलिस ने न जाने कितनी बार हम हथकडी लगाई जूतो से पीटा जेल की अँधेरी कोठरियो म फेंका। जब तब हमने मान-अपमान की परवाह नही की तो य बातें तो हैं ही बहुत मामूली। हम विशुद्ध गाधी भक्त है। खुद मुकद्दमा चलाकर किसी को कष्ट देने म विश्वास नही रखते। हम तो कहते हैं, अगर आप हमसे इतने ही नाराज है तो हमारे खिलाफ सिर्फ बावला क्यो करते है। हम पर मुकद्दमा चलाइए। मुकद्दमा चलेगा तो अखबारो म हमारा नाम कुछ और छपेगा दूध का दूध और पानी का पानी हो जायगा।

आप सिर्फ बावला करते है, मुकद्दमा नही करते, तो हमे दिल्ली जाना पडता है। देखिए हम अभी दिल्ली से लौटकर आ रहे है। बात करने के लिए प्रधानमन्त्री जी ने पूरे दस मिनट दिए। हमने भी उनके सामने एक

एक आरोप के बखिए उधेड कर रख दिए । खुदा, झूठे न बुलाए। ट्रस्ट बनाया तो क्या गुनाह कर दिया। खुलेआम बनाया है, [illegible] की सेवा के लिए बनाया ह। फिर हम नेता लोगो पर मदिरापान का आरोप। यह सच ह कि नेता लोग कभी-कभी थोडी सी मदिरा ले लेते है, पर इसमे अपराध ही क्या ह? मदिरा आखिर पीने के लिए ही तो बनी है। फिर इस दश की कितनी भयानक समस्याओ का बोझ हर समय हमारे दिमाग पर बना रहता ह। गरीबी है, बेरोजगारी है, कीमतें बढ रही हैं, और भ्रष्टाचार का कोई अन्त नही। भारत के नौनिहाल भूखे प्यासे दर दर भटक रह हैं, और अमीर तथा गरीब के बीच भेद बढता जा रहा है। देश की ऐसी हालत दखकर नताओ का दिल तो आठ-आठ आसू रोता है। ऐसे मे थाडी सी पी ली तो क्या हुआ? विश्व के सारे बडे-बडे नेता जनता की समस्याओ को हल करन के लिए इसका सहारा लेते रह है। यहा सहारा लेने वाले वह मित्र भी दिल्ली आए हुए थे—अपन आरोपो का बखिया उधेडने। हम मित्र। हमन पूछा— अरे, कस हो गया यह सब? इतना वावला?"

बोले, "जरा हमारा कसरती बदन तो दखिए। है किसी और नेता म इतनी ताकत। सब वाय से फूले हुए हैं। दो कदम भी छडी के बिना चल नही सकते। इसलिए तो हमसे जलते हैं और हमारे खिलाफ यह बावेला खडा कर दिया।'

हमने पूछा, "कसरती बदन वगैरा तो ठीक है। पर विदेश की सडक पर क्यो भागा?"

बोले, 'क्या बताऊँ इतनी चौडी और सुदर सडकें थी। निक्करधारी लडकिया जौगिग कर रही थी। हमने साचा कि हम भी थोडी-सी कसरत कर लें, तो हमारा भी सुबह का भोजन पच जाए। हम जब अग्रेज की जेल मे थे, तो भी कसरत करना कभी भूलते नही थे। फिर यह तो विदेश की खुली सडक थी। अब बताइए क्या कसरत करना भी गुनाह है?'

फिर औरतो की बात चली। नेताजी न बताया—देखिए, अपने दश की आजादी के लिए जान कितने बरस हमन जेल म काट दिये। अच्छी और सुन्दर चीज पान के बार मे कभी सोचा भी नही। अब जब हम त्याग का फल मिला खुदा ने हमे कुर्सी दी, तो हम सुदर चीजो से दोस्ती कर रह

हैं कि जैसे माली गुलदस्ते म फूल सजाता है। हवाई जहाज म इतनी सुन्दर महिलायें देखी, तो हृदय गदगद हो उठा। नेताजी रह नही सके। उनका हृदय तनिक भावुक है। देश की गरीबी देखकर पिघलता है तो खुदा की खूबसूरती देखकर भी पिघलता है। वह पिघलकर सिर्फ खुदा की शान का कसीदा कर रह थे, चार लोगो ने मुफ्त मे ही बदनाम कर दिया। इह एक नुमाइश के उदघाटन के लिए जाना था। वहा भी नही जाने दिया। नुमाइश मे जाते स्टाल म खडी महिलाओ का गल से लिपटाकर शाबाशी देत। उनका दिल कितना बढ जाता। देखा नेताजी के न जान स देश कितना निरुत्साह हुआ।

उनकी बातें सुनी तो हमारा दिल द्रवित हो उठा। आप जानत है घायल की गति घायल जाने। हम तो प्रधान मन्त्री जी को भी सारी बात बोल आये, कि इन बातो को मामूली न समझिए। यह राष्ट्र द्रोहियो का एक गहरा षड्यन्त्र हम जनसेवको के खिलाफ ही नही आपक खिलाफ भी है। आपके स्वामिभक्त लोगो को इस तरह चुन चुनकर बदनाम किया जा रहा है। आप कह तो हम हँसते-हँसते अपना बलिदान दे दें। लेकिन अपना बलिदान देते हुए भी हम एक ही बात कहेंगे कि इन षडयन्त्रो के पीछे जरूर कोई विदेशी हाथ है। हम शक है कि सी० आई० ए० के एजेण्टो न नेताजी की मदिरा मे कुछ मिला दिया था। नही तो इतन बरस हो गय उन्हे पीते हुए। इसके पहले आपने कभी उनके आप से बाहर होन की खबर सुनी ?

तो फिर हमारी माग यह है कि इन षडयन्त्रो की तह तक जान के लिए आप तत्काल एक जाच-कमीशन नियुक्त करें। यह कमीशन यह पता करे कि नेताजी की मदिरा मे क्या मिलाया गया था ? इसमे कितना तत्व *विदेशी था और कितना देशी। और कि हमारे ट्रस्टो के खिलाफ आवाज* उठाने वाले इसी बहाने कोई अपना आवाज उठाओ ट्रस्ट' तो नही बनाना चाहते। आज देश के कोने-कोने से हमारे समर्थक यह कमीशन नियुक्त करने के प्रस्ताव पास कर रहे हैं। माग बल पकड रही है। आशा है आप *जनता की माँग की ओर ध्यान देंगे।*

पाठक की तलाश

जमाने के रंग बदलने के साथ-साथ आज-कल हर क्षेत्र में 'कामयाबी के गुर' भी तब्दील होते जा रहे हैं। कल के तीसमार खां आज 'क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा' हो गये हैं। पर कामयाब लोगों ने शोरबे की जगह सूप का इस्तेमाल शुरू कर दिया है। जिधर देखते हैं, हवा के बदले हुए रुख का ही अपना स्वागत करता हुआ पाते हैं। नेता लोगों का रुख बदल गया है, और वह जनता से भाषण की जगह दुनाली से बात करने लगे हैं। अभिनेताओं का रुख बदल गया है, और वे कामयाबी के लिए अभिनय नहीं स्कैंडलों का सहारा ले रहे हैं। इधर दुकानदारों ने भी माल बेचने के अपने तरीके बदल लिये। पहले वह बढ़िया वस्तु और आयातित माल कहकर अपनी वस्तु के ऊंचे दाम वसूल करते थे। अब सेल का जमाना आया है। वस्तु के दाम पहले दुगने कर दिये जाते हैं, फिर उसे पचास प्रतिशत डिस्काउंट की घोषणा के साथ बेचा जाता है। दो वस्तु खरीदने पर तीसरी वस्तु मुफ्त देने की रिआयत देकर ग्राहक बटोरे जाते हैं।

डिस्काउंट और रिआयत का जमाना आ गया और सेल का यह रोग संक्रामक हो गया। साहित्य भी इससे अछूता नहीं रह सका। पिछले दिनों एक ऐसी ही साहित्य की सेल में जाने का हमें मौका मिला। क्या खूब बाजार सजा था। लेखक लोग अपना-अपना माल सजाकर प्रकाशकों, आलोचकों, संपादकों और पाठकों को पटाने का प्रयास कर रहे थे। साहित्य की इस सेल में हमने अजीबोगरीब नजारे देखे। आइए, कुछ स्थलों पर

आपको भी ले चलें। यह पहला स्टाल प्रकाशकों के लिए था, जहां लेखक लोग अपना माल छपवाने के लिए कई आश्वासन दे रहे थे। प्रायः लेखक प्रकाशकों को एक पैकेज डील पेश कर रहे थे। इन प्रकाशकों को उपन्यासों की तलाश थी पर यहां कवियों का जमघट था इसलिए बहुधा कविगण कविता संग्रह छाप देने पर प्रकाशक को एक उपन्यास देने का वायदा भी कर रहे थे। जिस तेजी के साथ हमने वहां कवियों को उपन्यासकार बनते हुए देखा, उससे हमें लगा कि आने वाले बरसों में हिंदी उपन्यास के लिए कोई संकट नहीं है। अब पाठक लोग उपन्यासों के नाम पर महाकवियों के भारी पोथे पढ़ने के लिए तैयार हो जाएं। हम इन तेजी से उपन्यासकार होते हुए महाप्रभावों के घेरे से बच निकले। पर यहां से निकले तो पाया, स्टाल के दूसरे कोने में विद्यालयों के हिंदी विभागाध्यक्ष खड़े थे। हर विभागाध्यक्ष की जेब में अपनी लाइब्रेरी के लिए पुस्तकों की खरीद का आदेश-पत्र था, और हाथ में एक ऐतिहासिक पाडुलिपि थी। यह पाडुलिपि इस विभाग-अध्यक्ष के शोध छात्रों ने उन्हें एक अभिनंदन ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत की थी, और अब वह इसे छपवाकर हिंदी के आलोचना-साहित्य की श्रीवृद्धि करना चाहते थे।

—हिंदी में आलोचना पुस्तकें छपती हों कहां हैं साहिब! आप इस पाडुलिपि को छापिए पांच हजार का आर्डर मैं मिलवाता हूं। वे प्रकाशक के कोट का दामन थाम कर कह रहे थे।

प्रकाशक इस भारी भरकम पाडुलिपि को देखकर सहम गए, जिस पर उनका कम से कम चालीस हजार रुपया खर्च आना था। वे अपने कोट का दामन छुड़ा ही रहे थे, कि स्टाल के द्वार से कुछ और लेखक लोगों ने दयनीय मुद्रा के साथ प्रवेश किया। ये वे लोग थे जिन्हें इनके प्रदेश के भाषा विभागों या साहित्य-अकादमियों ने किताबें छापने के लिए अनुदान में कागज दे दिए थे या नकद ग्रांट। ये लोग प्रकाशकों को देखकर दांत निपोरकर हंसने लगे। इससे पहले कि प्रकाशक भी उन्हें देखकर हंसते एकाएक एक फलां प्रदेश से लेखकों के एक दल ने इस स्टाल पर धावा बोल दिया। ये लेखक अपनी हर पाडुलिपि के साथ अपने प्रदेश की सरकार का ग्यारहसौ प्रतियों की खरीद का हुक्मनामा भी साथ लाए थे। इन्हें देखते ही

प्रकाशकों की बाछें खिल गयी।

—असल लेखक तो अब आये हैं। वे चिल्लाये, और ग्यारह सौ प्रति खरीद के हुक्मनामे वाले इन लेखकों के पीछे-पीछे चल दिये। अब बाकी लेखक हाथ मल रहे थे।

—सही लेखन की तो अब कोई कद्र नहीं रह गयी है जनाब! लेखकों ने यह स्टाल छोड़कर आलोचकों के स्टाल में पहुंचकर दुहाई दी।

आलोचकों के इस स्टाल में अलग अलग पीठ सजे थे। भक्तजन गुरु-जनों के इर्द गिर्द बैठकर उनके घुटने दबा रहे थे। इतना शोरशराबा हुआ, तो पीठाधीशों की नींद टूट गयी। वे चौंक कर बोले—

'प्रेमचन्द जी कैसे हैं? क्या खूब लिखते हैं धनपतराय जी।"

—जी, प्रेमचन्द तो अब नहीं रहे। अब तो जनवाद का जमाना आया है। हम सर्वहारा के हक में आवाज उठाते हैं, और ये बनिया प्रकाशक हमारी एक नहीं सुनते। लेखकों ने फरियाद की।

जनवाद के नाम से उस स्टाल में एक हलचल पैदा हो गयी। आलोचक अपनी अपनी गद्दियों पर पहलू बदलने लगे।

—आह जनवाद! एक ने ठंडी सांस भरी। वाह जनवाद—दूसरे ने मुशायरे में शेर पढ़ने के अंदाज में फरमाया।

और तब आलोचकों ने इन लेखकों को घेर लिया। कोई उनका कान पकड़कर घसीट रहा था और कोई टांग। "असल जनवादी है तो हमारे साथ आ।' वे इन्हें अपनी गद्दी की ओर खींच रहे थे।

—उधर जायेगा तो बुर्जुआ हो जायगा। आलोचक ने एक लेखक को हाथ से जाते देख अपना दुर्वासा नेत्र खोला।

—तू चुप रह! पाठकों को दिमागी कुश्त परोसने की सीख देने वाले सामन्ती मूल्यों की सन्तान!—दूसरा आलोचक जवाब में चीखा, और अपनी कलम का नश्तर तेज करने लगा।

आलोचकों का झगड़ा बढ़ रहा था। लेखक उनके बीच पिंगपांग हो रहे थे। हम यहां से बच निकले। बाहर आये तो देखा, बीच मैदान में कुछ नवांकुर एक बूढ़े आदमी की शोभा-यात्रा निकाल रहे थे। उन्होंने उनकी लिखी हुई किताब की एक एक प्रति को अपने सिर पर उठाया हुआ था

और उस 'हिन्दी-साहित्य का एक मोड़' घोषित कर रहे थे। और पास गये तो देखा, यह जुलूस एक स्वनाम धन्य सम्पादक महोदय का था। बहुत बरस हुए, यह महानुभाव कुछ लिखा करते थे, आजकल सिर्फ संपादन करते हैं, और नव प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देते हैं। हम उनके पास गये, पूछा, "कोई नयी पुस्तक आयी है क्या ? आपने फिर से लिखना शुरू कर दिया। हमारी बधाई लीजिए !"

संपादक जी न जाने क्या झेंप गये, 'ह ह हैं अजी, नयी कहां ? वह दस बरस पहले हमारा एक कहानी-संग्रह छपा था ! वही कहानियां हैं। भूमिका नयी दे दी है। पुस्तक का टाइटल भी लड़का ने बदल दिया है।"

—भाई साब की कहानियां अपने युग से आगे थीं। ये तो आज हमारे लिए लालटेन हो गयी है। ऐसी महान प्रतिभा की इतनी घोर उपेक्षा ! एक नवांकुर ने हमें बताया।

—आप इन्हें पढ़कर देखिये ! दूसरे ने पुस्तक का नया गेट-अप हमें दिखाया।

—लेकिन खरीदकर पढ़ियेगा। इतने बड़े आदमी से भेंट प्रति की उम्मीद न रखिये। तीसरे ने हमें लताड़ा। पर इससे पहले, कि हम कुछ जवाब दें, शोभा-यात्रा हमें छोड़कर आगे बढ़ गयी।

तब हमने सोचा, सब जगह घूम लिये, लेकिन उस भीड़ भाड़ में पाठक नाम का व्यक्ति तो हमें कहीं दिखायी ही नहीं दिया ! कहां है वह पाठक, जिसके लिए इतना सब कुछ लिखा जाता है ? सब घूम ली हमें पाठक नहीं मिला।

बाहर आये तो हमने एक व्यक्ति को फुटपाथ पर लगी चटपटी किताबों की एक दुकान को खंगालते हुए पाया। हमें देखकर वह खड़ा हो गया।

—जी मुझे पाठक कहते हैं। उसने हमारी ओर अपना हाथ बढ़ाकर कहा।

हम उसके हाथ में एक चटक कवर वाली किताब देखकर झिझक गये, फिर असली पाठक तलाश करने के लिए तेजी के साथ और आगे बढ़ गये।

एक चैम्पियन कप इधर भी

वन डे क्रिकेट में चैम्पियन कप की भली कही हम तो इस बार शरजाह से चाय का एक कप भी जीतकर नहीं ला सके। तीन टीमों के इस मुकाबिले में हम फिसड्डी रहे। पर तो भी हमें हारने का इनाम मिल गया बीस हजार डालर! शायद इसलिए कि अरब के बाजारों में आज सब कुछ बिकता है। झूठी शादियों के नाम पर औरत का जिस्म बिकता है और कला और संस्कृति के नाम पर हमारी असफल एक्ट्रेसें अपने कूल्हे मटका-मटका कर बिकती हैं। तेल के कुएं सोना उगल रहे हैं, और भारत का प्रवेश-द्वार बम्बई आजकल अरब शेखों का पायदान हो गया है। इस शहर के नर्सिंग होम अब सिर्फ अरब शेखों के बीमार पड़ने का इंतजार करते हैं, और पंचतारा होटलों की रिसेप्शन पर खड़ी बुलबुल सी लड़कियां होटलों में शेखों का हुक्का घुसते देखकर बाग-बाग हो जाती हैं।

पर इधर शेखों ने दिल बहलाने के लिए बम्बई तक चलकर आना बंद कर दिया लगता है। तेल के डालरों की करामात है—जिस ओर उंगली उठाओ, वही सर के बल उनके रेगिस्तान की तरफ भागा चला आ रहा है। फिर उन्हें हुक्का उठाकर देश-देश भटकने की क्या जरूरत?

औरत के जिस्म से लेकर गीत-संगीत तक, डिस्को से लेकर कुचीपुडी तक, क्या-क्या नहीं पेश किया, हमारे कला-जगत के सितारों ने शेख के दरबार में। तेल डालरों की धुन बजती है—'नाच मेरी बुलबुल! ताक धिनाधिन।'

तो एक तरफ शेखों के दरबार में दुनिया के कलावंत अपने इल्म का

मुजाहिरा कर रह हैं। ऊघते हुए शेख इन नजारा को अपन मुसाहिबा को देखन देते है, और फिर दो मुट्ठी डालर कलावता की झोली म डाल दत है। पर कलावत दो मुट्ठी डालर कमा लायें, और दुनिया के स्टडियमो म क्रिकेट खिलाडी अपने छक्का पर सिफ दशको की तालियो स ही सब्र कर लें, एसा कैसे हो जाता ? किसी न अरब शेखा का जाकर कहा "हुजूर, सारी दुनिया क्रिकेट के बुखार से ग्रस्त हो गयी है। क्रिकेट का थोडा सा नजारा हमारे यहा भी हा जाता।'

—लेकिन हमारे तो बाप-दादा ने भी कभी क्रिकेट नहीं खेला। क्सा वाहियात खेल है ! बैट गेंद के साथ ठिप्प ठिप्प !

—हुजूर, हमारे बाप दादा ने ता कभी डिस्को भी नही किया था। वह अमीर-उमरा ही क्या, कि जिसके दरवाजे पर सब हुनरमद अपना हुनर लेकर न आयें।

—ठीक कहते हा। तो फिर हमार दरवाजे पर क्रिकेट भी हागा ! हमार पास पाच दिन की फुसत तो नही है। हम एक दिन का क्रिकेट करवायेग और जीतने वाली टीम का एशिया कप इनाम म दगे। शेख न फरमाया।

—हुजूर सिफ एक कप के लिए कौन यहा तक मैच खेलन के लिए आयेगा ?

—आयगा ! हमारे पास हर कोई आयगा—जब हम कप के साथ *जीतने वाली टीम को हजारो डालर का नजराना पेश करेंगे।*

—और हारन वाला क्या खाली हाथ जायगा ?

—नहीं ! शेख की महफिल है। हारने वाला भी यहा से खाली हाथ नही जायगा। कम हारन वाले का तीस हजार डालर द दा और अधिक हारन वाले को बीस हजार। फरमान जारी हुआ।

फरमान जारी हा गया था, इसलिए हार कर भी हम बीस हजार डालर ता मिले। तीन टीमा के मुकाबिल म तीसर नम्बर पर ता आय। भारत स चले ता दमगन यह थे, कि लका म पिटी हुई भारतीय टीम इस बार वह हाथ दिखायगी कि वल्डकप के दिन ताजा हो जायेंगे। कपिलदव अपनी कप्तानी से फिर सिद्ध कर देंगे *कि नया सौ दिन और पुराना नौ*

दिन। लेकिन चैम्पियन कप खत्म हो गया, और हम हाथ दखने को तरसत ही रह गय। इस दल म नय खून क नाम पर किरमानी साहिब को भी अपन जौहर दिखाने के लिए शामिल किया गया था। जौहर तो कोई दिखायी नही दिया, हा यह नौ दिन वाला मुहावरा जरूर हमने पलटते देख लिया। खैर मुहावर की चिन्ता छोडिए। हारी हुई टीम की जिन्दगी के लिए अब नये खून की तलाश शुरू कीजिए। बिशनसिंह बेदी आजकल राष्ट्रीय सिलैक्टर नही रह बिल्कुल खाली बैठे हैं। हमारा सुझाव है कि उन्ह ही क्यो न दुबारा खेलने का मौका द दिया जाय। क्योकि आजकल अपन देश मे खेलो क लिए नया खून ढूढने का यही तरीका तो रहा है।

खैर, नय खून की तलाश तो बाद मे होगी। अभी तो हम यह सोच रह थे कि विजेता टीम की अगवानी के लिए फूलो के जो गुलदस्ते सातारूज हवाई अड्डे पर कतार बाधकर खडे रहा करते ह, और हम महान', 'हम महान का कोरस गाया करते हैं वह इस बार क्या करेंगे ? हमे जीतने के मौक ही कितन मिलत हैं ? तभी तो टीम अभी लौटती नही कि दिल्ली म इद्रप्रस्थ स्टडियम दुल्हिन की तरह सजाया जाने लगता है और लता जी गाने क लिए गला साफ करने लगती हैं "भारत चैम्पियन कप विजेता।"

इस बार भी हम जीत का इन्तजार था, और उधर खेल मन्त्री जी का भाषण भी तैयार था—' शरजाह मे भारतीय क्रिकेट दल की जीत एक महान जीत है और इसका श्रेय जनता क दिलो पर राज करने वाले भारत के चमकन हुए सितारे राजीव गाधी को जाता है। सच है, राजीव जी की प्रेरणा अगर भारतीय दल को न हाती, ता हम कभी शरजाह मे न जीत सकत।'

फिर इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम तालियो के शोर से गूजता, राजीवजी मन्द-मन्द मुस्करात उन्ह मुस्कराता दखकर खेलमन्त्री मुस्करात, और खेलमन्त्री का मुस्कराता दखकर भारतीय टीम का हृदय पुलकित हो जाता। बाहर इश्तिहार वाले अपन एग्रीमण्ट फाम और रुपये की थलिया लेकर खडे हा जाते, 'शरजाह म जीतन वाला भारतीय दल हमारी च्युगम का ही इस्तमाल करता था।" दूसरे दिन के अखबारा म च्युगम खाते खिलाडियो की तस्वीरें छपती।

लेकिन टीम ने हारकर सबका थाम गड़बड़ कर दिया। अब यह दल कब देश लौटकर आयेगा, किसी को कुछ पता नहीं चलेगा। सा यू चम्पियन कप के लिए क्रिकेट प्रतियोगिता चाहे खत्म हो गयी, पर हमने पाया अभी भी बहुत से लोग शरजाह का टिकट कटवाने के लिए तैयार बैठे हैं। कनकौआ वाले अपनी डोर और मांझा लेकर हवाई जहाज की टिकट कटा चुके हैं और कबूतरबाजों ने भी अपने कबूतरों के दड़बे समुद्र के रास्ते बुक करवा दिये हैं। लखनऊ खाली हो रहा है, और गोमती के किनारे सून हो गये हैं। क्या अब कनकौआबाजी और कबूतरबाजी के सारे अगले मुकाबिले शरजाह या दुबई में होंगे? तेल का डालर अभी न जाने कितने और चैम्पियन-कप पैदा करेगा। पिछले दिनों मियां रप्पन भी मिले थे। बोले—मियां, अब "नौचंदी में क्या रखा है। तीन सौ कप हो गये हिंदुस्तान में मेला लगाते हुए। लोग भी ऊब गये हैं। सोचते हैं अगली बार यह मेला दुबई में ही लगा दिया जाय।"

—लेकिन शरजाह में भारतीय दल के इस हश्र के बाद भी आप दुबई जाने की सोच रहे हैं? हमने पूछा।

—अरे तो क्या न सोचें?—मियां रप्पन कह रहे थे—"इस मेले में भारत का बटेर दुबई में लड़ेगा, तो अमीर-उमरा का कलेजा लहलहा जायेगा। फिर एकाध कप भी हम बटेरबाजी में जीत लाये तो हो सकता है हमारा अभिनन्दन भी इन्द्रप्रस्थ स्टेडियम में हो जाये और अगर जीत न सके हार ही गये तो भी बीस हजार डालर तो कहीं नहीं गये!"

उथले पानी पैंठ

महरबान ! कद्रदान ! मुलमान ! मैं न तो कोई वद्य हकीम हू, न कोई पीर फकीर। मैं कोई सिद्ध जोगी भी नहीं, और अभी-अभी हिमालय से उतर कर भी नहीं चला आ रहा। मरे अधपके बालो को देखकर आप मेरी नहीं उम्र का अदाजा लगा सकते हैं। मेरी थकी हुई चाल को देखकर अगर आप यह घोषणा कर दें कि मैं आज फिर राशन डिपो से खाली हाथ लौटा हू तो मुझे कोई हैरानी नही होगी। लेकिन फिर भी आज तक क्योंकि मैं जीवन के चालीस वसत देख चुका हू इसलिए आज आपको अपने अधपके अनुभवो में से कुछ ऐसे अनमोल रत्न भेंट कर रहा हू कि जो आपको उथले पानी पठकर प्राप्त किये हुए लगें।

रत्न नम्बर एक कि रत्नो का जमाना गुजर गया ! अब तो कोरे शीशो पर पानी चढ़ाना सीख लीजिए, कि जिससे आते जाते को रत्न का भ्रम हो सके। जितना अधिक भ्रम दे सकोगे, उतना ही तुम्हारा यह मिथ्या जीवन सफल हो जायगा। याद रखो जमाना आजकल दूसरो को अपने बारे म भुलावा देने का है कोई सायक ठोस काम करके अपने आपको नष्ट कर देने का नहीं।

तो मेहरबान ! सबसे पहले तो यह भुलावा अपने आपको देने का प्रयत्न कीजिए। आपमें कोई गुण नहीं, तो कम से कम लेखक हो जाने का भ्रम ही पाल लीजिए। कभी पत्र लिखने की नौबत आ जाय, तो बाकायदा पोज बनाकर लम्बा खत लिखिए, ताकि बाद में लोग जब आपकी जीवनकथा के

लिए कच्चा माल सकलित करने बैठें तो ये चिट्ठियाँ उनके काम आ सकें। गोष्ठियों में जाइए तो सीधे मंच पर बैठना जमाने की फिक्र में रहिए और अगर वहाँ में बेशर्म आयोजकों के द्वारा आपको धकिया दिया जाय, तो सभास्थल में ऐसा कोना तलाश कर लीजिए कि जहाँ से चित्र खींचने वाले फोटोग्राफरों के हर फ्रेम में आपका चेहरा उभर सके। भाषण करने का मौका मिले तो हिन्दी की दुर्दशा पर टसुए बहाइए, और हिन्दी साहित्य के लिए अपने त्याग का बखान कीजिए, पर सभा समाप्त होते ही किसी अंग्रेजी माध्यम वाले पब्लिक स्कूल के हैडमास्टर का चेहरा उठाने में भी झिझकिए नहीं, ताकि आपके बच्चों को उनके स्कूल में बिना फीस दिए दाखिला मिल सके।

पर बहुत जल्दी अगर आपको यह लगे कि साहित्य में रखा ही क्या है तो राजनीति की ओर आ जाइए। आजकल तो इसी क्षेत्र में पौबारह हैं। अगर आप राजनीति में आ रहे हैं, तो प्रधानमंत्री बनने का सपना रखते से अपनी आमद को शुरू कीजिए किसी न किसी क्षेत्र से म्यूनिस्पल कमेटी का चुनाव तो आप हार ही जायेंगे। चुनाव हार भी गये तो क्या हुआ, लोगों के सामने गले में हार पहने मुस्करा कर हाथ जोड नमस्कार का अभ्यास तो हो जायगा। अच्छा राजनीतिज्ञ वही है, जो दिन के धूपछाँही रंगों के बदलने के साथ-साथ अपना रंग बदल ले। ए कद्रदान जैसे तत्वज्ञानी अपने जीवन को मात्र एक चोला मानकर उसमें तनिक भी मोह नहीं रखते, एवं उसे बदलने के लिए सदा तत्पर रहते हैं इसी तरह से तू भी किसी दल से मोह न रखना। जो भी दल राजपाट संभालने के तनिक भी नजदीक पहुँचता लगे सदा उसी दल में जाने के लिए तत्पर रहना। नगरपालिका का चुनाव हार भी गये तो क्या हुआ? इसी बहाने शासक दल में शामिल हो गये तो विरोधी दल के संसद सदस्य से भी अधिक बाहुबल हो जायगा तेरा। थाना कचहरी हाटबाजार घर-आँगन में तेरे ही नाम का खोटा सिक्का चलेगा, और आखिर एक दिन ऐसा भी आयगा कि विरोधी दल का वही संसद-सदस्य तेरे घर तुझ से पूछने के लिए चला आयगा कि—महानुभाव! आपकी इस अभूतपूर्व सफलता का रहस्य क्या है?

नहीं सुलेमान! मेरी इन बातों से तू बोर मत हो। मैं जानता हूँ,

साहित्य म तेरी तिल्ता भर भी रुचि नही, और लेखका पर खुदा की मार ! तू उनके लिखन-पढने का दिमाग का खब्त ही मानता ह। इससे ता वहतर है, आदमी खाली समय मे सारे मुहल्ले के बिजली क बिल जमा करवाने का धधा ही शुरू कर दे। फालतू वक्त भी कट जायेगा, और कमीशन के चार पैसे भी बन जाया करेंगे। मेरा दूसरा उपदेश राजनीति मे फमन का था। पर राजनीति का खेल भी क्या सबके खेलने का है ! इसके लिए ता आदमी को बडा चतुर और चालाक, चुनावी दगल का बडा वीर योद्धा बनना पडता है। पर आज के इस डालडा युग मे वीर कैसे बनें ? असल समस्या तो यही ह। हो सकता है कोई पुरान वैद्य हकीम आपका इस सर्दी के मौसम म वीरता और मर्दानिगी प्राप्त करने के लिए रोजाना दो चम्मच च्यवनप्राश की शरण म जाने का नुस्खा वतायें।

पर मैं आपको यह वीरता प्राप्त करन के लिए एक और रिहसल करने का सुझाव द रहा हूँ। यह रिहसल इसलिए कि आज वीरता की परिभाषा ही बदल गयी है, और इस सिलसिले मे च्यवनप्राश टाय-टाय फिस्स हो गया है। याद रखिए आज के जमाने मे सबस बडा वीर वह है, जो किसी दफ्तर अथवा सचिवालय का चक्रव्यूह भेदकर अपनी फाइल निकाल लाय। इस दफ्तर रूपी चक्रव्यूह को भेदने के ही कुछ नुस्खे मैं आज आपकी सवा मे अपने आखिरी अधपके अनमाल रत्न के रूप म हाजिर कर रहा हूँ—इस उम्मीद के साथ, कि इस मोर्चे पर फतह हो गयी, ता राजनीति का किला भी आपको बहुत दूर नही लगेगा। तो फिर हो जाए शुरू !

दफ्तर मे अपन होठो पर एक विनम्र मुस्कराहट चिपकाकर ह ह करते हुए घुसिय और डीलिंग हाथ का कन्धा अथवा घुटना कुछ इस प्रकार दबाइए, कि वह अपनी मेज पर ऊँघने का सिविल सर्विस नियम निबाहने क बजाय आपके कागज पर अपना नोट चढाकर आग सरका दे। पर यह याद रखिए, जैसे ही यह कागज आग सरकेगा तो अफसर के कमरे की दहलीज पर आकर ठिठक जायगा। चक्रव्यूह के इस अदरुनी चक्कर के द्वार पर चपडासी नामक मल्ल का पहरा होता है। अब सवाल यह है कि इस कैसे पटायेगा तू ? ऐ सुलेमान ! याद रख सिगरेट बीडी देकर पटान के जमान लद गये। अब ता काम के मुताबिक प्रवेश शुल्क लगता है। तर काम की सहत

जितनी अच्छी होगी उतना ही यह शुल्क बढ़ता जायगा।

क्या कहा तूने ? कि तूने चक्रव्यूह का यह चक्कर भेद लिया है ! जरूर तूने चपरासी दयला का उनका शुल्क अदा कर दिया है। धन्य हो, धन्य हो ! अब आगे बढ़ ! अब तेरी मुलाकात कार्यालय के बड़े अफसर, नहीं-नहीं जनता के सच्चे सेवक से होगी। इनकी कुर्सी के पीछे लगे चित्र में बापू गांधी मंद मंद मुस्करा रहे हैं। पर यह महोदय, खुद तो बड़े चिन्तित लग रहे हैं तभी तो इनसे कोई काम नहीं हो रहा। देखा न, यह साहब इधर बहुत-सी समस्याओं में उलझ गये हैं। इनकी कोठी नये डिस्टैंपर के बिना भाय भाय कर रही है, और पत्नी नया बेडिया सैट लेने की जिद किये कोप भवन में बैठी है। अब ए मुनेमान तुम ही बताओ, तुम जनता के इस सच्चे सेवक की इन भयानक समस्याओं का हल कैसे प्रस्तुत करोगे, कि वह तुम्हारे कागज पर अपने हस्ताक्षर कर दे। क्या कहा ? हल पेश करने का तो एक ही तरीका है और वह तुमने पेश कर दिया। तो इस तरह तुम्हारे कागज पर हस्ताक्षर हुए। तुम्हें क्या लगा, तुम्हारी रिहमल पूरी हुई, और तुम्हारे जैसे वीरों के बल पर ही एक दिन पांडवों ने महाभारत में विजय प्राप्त कर ली थी। पर जी नहीं ! अभी आपका एक कदम बाकी है। इस चक्रव्यूह को भेदने के बाद तुझे वापस बाहर भी तो जाना है। अभिमन्यु, क्या तुम इस चक्रव्यूह से बाहर जाने का रास्ता जानते हो ? तेरा काम तो हो गया, पर तुझे अभी साहब के कमरे से बाहर भी तो आना है। बाहर हाल कमरे में डीलिंग हाथ तुझसे अपना बकाया लेने के लिए तैयार खड़े हैं। जिसका जो बकाया है, उसे ईमानदारी से चुका देना ही तेरी इस ट्रेनिंग का आखिरी हिस्सा है।

यूं वीरता की ट्रेनिंग पाकर जब तू बाहर सड़क पर आयेगा, तो राजनीति का दंगल तेरा इन्तजार कर रहा होगा। राजनीति की जिस शतरंज के बल पर तूने एक दिन अपने परिवेश को चमका देने का सपना देखा था, उसके राजा और वजीर तुझे अपना फील-प्यादा मानकर तेरे जिन्दाबाद के नारों की उम्मीद में तेरा इन्तजार कर रहे हैं। आगे बढ़, और गला फाड़ फाड़कर ये नारे लगाने का अभ्यास कर। आखिर अगला नगरपालिका का चुनाव लड़कर हारने के लिए तुझे भी तो एक अदद टिकट चाहिए !

खाली कुर्सियो की आत्मा

हाल मे कुर्सियो की कतारें लगी हुई थी, और सब कुर्सिया खाली पडी थी। सेमिनार धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता पर था, पर आयोजक किराय के श्रोता नही लाय थे। चाय पान का भी कोई विशेष प्रबन्ध नही था। सभापति महोदय ने खाली कुर्सिया का अपनी अगवानी करत हुए देखा, तो उदास हो गय, हाल मे घुसत ही आयोजको ने उन्ह फूल मालाओ से लाद दिया था, पर खाली कुर्सिया तालिया तो नही बजा सक्ती। उन्होने भरे हुए गले से अपना भाषण शुरू किया—"माताओ, बहिनो और खाली कुर्सियो !"

दद भरी आवाज हाल म मडरायी, तो हॉल मे पडी खाली कुर्सिया की आत्मा जैसे जाग उठी। यह पहला अवसर था, जब कोई नेता उनके साथ सीधे बात चीत कर रहा था। इससे पहले क्या-क्या काम नही किये हैं इन कुर्सियो न। जब भी कभी इन पर किसी सरकारी पदवी की वार्निश हो गयी, तो बैठने वाले ने मरते दम तक इन्ह कभी न छोडने का प्रयास किया है। कुर्सी मन्त्रीपद की हुई तो नेता लोग टोपी बेचकर भी इसे हथियाने के चक्कर म पडे रहे। राज्यपालो के सामने आयाराम और गयाराम भी कतारें लगाते रहे, ताकि एक-दूसरे के नीचे से यह कुर्सी खीच सके। फिर यह कुर्सी अगर वहा से उठाकर विधान सभा मे रख दी गयी, तो इसने विधायको के लिए ऊघने के बिस्तर से लेकर द्वन्द्व युद्ध के हथियार तक का काम किया। अपनी कारगुजारी दिखाने के लिए न जाने कितनी बार

स्वनामधन्य नेता लोगो ने इसी कुर्सी के साथ एक दूसरे का सिर फाड़कर अपन विधान सभा सत्रा की कारवाई को ऐतिहासिक बनाया है। अब तो अपन देश मे ज्यो ज्यो प्रजातन्त्र बूढा होता जा रहा है, इस कुर्सी का अथ भी बदलता जा रहा है। अब कुर्सी एक खानदानी शब्द हो गया है और मरते या रिटायर होत नेता लोगो के द्वारा बाकायदा इस कुर्सी की वसीयत अपने बेटो और पोतो के नाम की जा रही है। यह बीमारी फिल्मो से राजनीति मे आयी है या राजनीति स फिल्मो म, कुछ साफ नही कहा जा सकता। फिल्म उद्योग मे अगर सितारा बेट अपन बाप-दादा द्वारा करोडो की लागत से बनायी गयी फिल्मो के द्वारा सिनमाकाश पर धूमकेतु की तरह उभर आये हैं, तो राजनीति मे देश, जाति और धम के कणधार अपन बेटो और पोतो को कुर्सी दगल मे उतार रहे हैं। बात है भी जायज। अगर एक डॉक्टर का बेटा डॉक्टर, और एक वकील का बेटा वकील हो सकता है, तो आप ही बताइए कि एक नेता का बेटा नेता और एक अभिनेता का बेटा अभिनेता क्यो नही हो सकता? जबकि नेता और अभिनेता म आज बहुत कम फक रह गया है और दोनो को ही अपनी कुर्सी सलामत रखन के लिए देश के गरीबो की हालत पर आठ-आठ आसू बहाने पडते हैं।

पर बात तो खाली कुर्सियो की हो रही थी और उन सभापति महोदय की जो आज इन खाली कुर्सियो को ही अपना रटा हुआ भाषण देने के लिए मजबूर हो गय थे। धम निरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता की पैरवी करन वाले इन चुनीदा सवादो को सुनकर खाली कुर्सियो की आत्मा कराह रही थी। हर जुमले के बाद सभापति महोदय की उदासी भी बढती जा रही थी, क्याकि उन्ह इस हाल मे स्थानीय समाचार पत्रा के सवाददाता भी कही नजर नही आ रहे थे जो कल के अखबार म शीषक जमा सकें—'लल्लूराम विधायक की एक नये युग के लिए सिंह गजना। खचा-खच भरा हुआ हॉल तालियो से गूज उठा।'

भाषण करत हुए लल्लूराम जी न उन खाली कुर्सियो की कतारो की ओर दखा और फिर अपनी जलती हुई दृष्टि आयोजको पर डाली साल कहते थे कि दगा फसादो के बाद धम निरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता बड ज्वलत विषय हो गये हैं सेमिनार की घोषणा होते ही सुनन वालो म

कनारें लग जायेंगी। लो, जेब से दतन पस भी गय, और सुन रही है, ये ऊघती हुइ खाली कुर्सिया !"

कहा रह गये लल्लूराम जी के श्राता ? सारा दिन रिक्शा पर लाउड-स्पीकर रखकर पूरे शहर म उनके भाषण की मुनादी होती रही, और एक श्रोता भी उनका भाषण सुनन के लिए नही आया। अगर यही हाल रहा तो नतागिरी कैसे चलेगी ? लल्लूराम भाषण कर रह थे आर सोचत भी जा रह थे। उह ऐसा लगा, हॉल म पडी खाली कुर्सिया न जस हुकारे म सिर हिलाया हो। उह हैरानी नही हुइ। कुर्सी के साथ नता के सवाद का रिश्ता ता जस उसके जन्म से पदा हो जाता है। वह कुर्सी स नही, ता भला अपन इन निकम्म आयोजको स सवाद करें ? इतना पसा खच हा गया, और अब कहते ह राष्ट्रीय एकता पर आपका भाषण सुनन आ रही भीड चौराह म ही अटक गयी। दो दलो म झगडा हो रहा था, यह भीड उसका अगला सीन शूट करा लग गयी। लोग धम के नाम पर अपना-अपना करतव दिखा रह हैं, लल्लूराम का रूखा सूखा भाषण सुनने की फुरसत ही भला किसके पास है। -

तभी लल्लूराम जी को अपन आयोजको के चेहरे पर एक चमक लौटती हुइ नजर आयी। उन्होंने देखा हाल म मले-कुचैल मजदूरो के एक हुजूम ने प्रवेश किया। व खाली कुर्सियो की पिछली कतार म बैठ गये।

—आह सवहारा ! एक आयाजक न हर्षित हाकर कहा— 'वाह, सर्वहारा, देखिए, ये लोग आ गये। आपका भाषण सुनकर इनमे जागृति आयेगी। क्रांति के असल ध्वजवाहक ता यही ह !" दूसर आयोजक ने फुसफुसाकर लल्लरामजी के कान म कहा।

लल्लूराम जी का उत्साह दुगना हो गया। वह चीख चीखकर अपने इन नये श्रोताओ का कहने लगे, मै जानता हू भारत के प्राण उसक मज दूरो मे बसते हैं। देश की राष्ट्रीय एकता के लिए मजदूर अपने खून का आखिरी कतरा भी बहा देंगे।'

हाल मे बार बार तालिया बजन लगी। पीछे खड आयाजको न नारा उठाया "लल्लूराम विधायक जिन्दाबाद !" लल्लूरामजी को लगा कि जिन्दाबाद बहुत धीम स कहा गया है।

तब एक ठेकेदार किस्म का आदमी मजदूरो मे से उठा और आयोजकों के कान मे कुछ फुसफुसाने लगा। आयोजक लल्लूराम जी के पास आकर बोला—"बाहर मैदान मे आज डिस्को जगरात का इतजाम है। भारी भीड इकट्ठी हो गयी है। उधर कुर्सिया कम पड गयी हैं। यह ठेकेदार इन मजदूरों को साथ लेकर अपनी कुर्सिया उठवाने आया है, आपका भाषण सुनने के लिए नही।'

लल्लूराम तैश मे आ गये "नही, हमने कुर्सियो का पूरा किराया दिया है हम पूरा भाषण देंगे।" उन्होंने गुस्से के साथ आयोजकों को डाटा, और अपने भाषण को एक नया मोड दे दिया। राष्ट्रीय एकता के उद्गार फिर हॉल मे तिरने लगे, और खाली कुर्सियो की आत्मा उनके बोझ से लद गयी।

बाहर ढोल मजीरे पर थापें पडी, और डिस्को धुन पर किसी ने भजन के स्वर को उठाया। ठेकेदार कुनमुनाया। वह एक बार फिर आयोजक के पास जा फुसफुसाने लगा। ठेकेदार की बात सुन आयोजक का चेहरा दमक उठा। वह लल्लूराम जी के पास आया— 'ठेकेदार कह रहा है कि डिस्को जगराते का उदघाटन अभी नही हुआ। यदि आप हमे ये कुर्सिया ले जाने दें तो लल्लूराम जी हमारे साथ चलकर जगराते का उदघाटन कर दें।"

उधर बाहर मैदान मे फिर तबले पर थाप पडी। भीड का शोर भी बढ गया। लल्लूराम जी ने खाली कुर्सियो की ओर देखा। उन्हे लगा कि जैसे वे भीड मे जाने को आकुल हो रही हैं और उन्हे भी अपने साथ वहा चलने का आमत्रण दे रही हैं।

लल्लूराम क्या करते ? उन्होने इस आमत्रण को स्वीकार कर लिया। धर्म निरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता पर अपना भाषण बन्द कर दिया। जगराते का उद्घाटन करने के लिए चलने के वास्ते तैयार हो गये।

ठेकेदार अब इस हॉल मे से खाली कुर्सियां को उठवा रहा है।

एक अप्रेम कहानी

युग के बदलने के साथ-साथ आजकल आंसू टपकाती हुई प्रेम की सभी कविताएं गुडगोबर हो गयी हैं। मेरी पत्नी आजकल मुझे चितवन-सनी मुस्कराहट फेंककर सावनी प्रेम का संदेश नहीं देती, मेरे नाकारा हो जाने की शिकायत करते हुए मिट्टी के तेल की मांग करती है। समस्या गम्भीर है, आजकल की मई-जून की गर्मी जैसी। पर मैं इस गर्मी में भी सावन की कल्पना करता हूं, और सावन में झूलों का इंतजार करता हूं। पर सारे शहर में मुझे कहीं भी ला-ला-ला गाकर झूले की पेंग चढ़ाती हुई सुमुखी कन्याएं दिखायी नहीं दीं। हां, मिट्टी के तेल के डिब्बे उठाकर राशन डिपो के बाहर खड़ी लड़कियां अवश्य दिखायीं दीं। इन लड़कियों के चेहरे उतरे हुए थे, और हाथों में किताबें नहीं थीं। पर फिर भी उस दिन डेढ़ घंटा कतार में तपने के बाद मिट्टी के तेल का डिब्बा लेकर निकलती हुई एक सुकुमारी को देखकर मेरे मन में हिन्दी फिल्म प्रेम जाग उठा। प्रायः ऐसी *स्थिति में फिल्म में नायक नायिका से टकरा जाता है। नायिका के हाथ की* चीजें जमीन पर गिर जाती हैं। नायक और नायिका दोनों एक साथ जमीन पर गिरी हुई चीजों को उठाने के लिए झुकते हैं। हड़बड़ी में दोनों के सिर टकरा जाते हैं और नायिका घबराकर नायक से आंखें चार करती है। उसके बाद दोनों प्रेमीजन गला साफ करके गाना गाते हैं, 'ला-ला-ला सावन के नजारे हैं!' फिर अगला दृश्य बाजार से पहाड़ों में चला जाता है और गाने के पीछे डिस्को धुन बजने लगती है।

मेरे एक हाथ मे तो मिट्टी के तेल का डिब्बा था, और दूसरे म राशन कार्ड। उधर वह तेल लेने वाला की कतार म स निकल चुकी थी, और मैं कनार म खडा होने जा रहा था। उसका डिब्बा मिट्टी के तल से भर चुका था, और मेरा अभी खाली था। उसकी शादी अभी नही हुई थी, और चाल मे अल्हडपन था। यह शोखी उसकी तरुणाई की वजह से पैदा हुई थी, या मिट्टी का तेल मिल जान की खुशी म, मैं विश्वास से कुछ भी नहीं कह सकता। हा, इतना अवश्य जानता हू कि आज मरे घर म मिट्टी के तल की एक बूद भी नहीं थी, और शाम को चूल्हा न जलन की स्थिति मे पत्नी ने मुझे तलाक की धमकी द दी थी। तो जनाब, शाम तक मैं पति से भूतपूर्व पति हो जाऊगा, इस उम्मीद ने मुझे भी उस दिन फिल्मी बना दिया। मिट्टी का तेल लेकर जाती हुई उस युवती को देखकर मैं भावुक हो गया, जिसे कभी शहजादा सलीम अनारकली के हाथो मे अपना कबूतरो का जोडा देखकर भावुक हो गए थे।

अब मैंने ही उसकी ओर एक प्यार भरी चितवन फेंकी। उसने जवाब म 'अकल नमस्ते' कहके पूछा, "मिट्टी का तेल लेने आये हैं?"

मैं एकाएक अपने अकल हो जान की घोषणा से लडखडा गया। मुझे लगा कन्या की नजर कुछ कमजोर है। अगर बीवी कुर्ते की जेब म कुछ पैसे छोड दिया करती तो मैं उसे नजर का चश्मा जरूर खरीद कर भेंट कर देता। पर जेब मे मिट्टी के तेल के दाम से अधिक पैसे नही थे, अत मैंने उपहारो के बारे म सोचना बन्द करके शेक्सपीयर को याद किया, और फिल्मी हो गया। "पहली नजर मे प्यार"—मैं बुदबुदाया और लडखडाकर उस कन्या से टकरा गया। टकराने के बाद मेरी बकाया जिन्दगी म कुछ स्थितिया फिल्मी पैदा हुईं और बहुत-सी गैर फिल्मी। अब इन स्थितियो की कहानी बयान करता हू। फिल्मी स्थिति तो यह हुई कि मेरे यू टकरा जान से कन्या के हाथ से मिट्टी के तेल का डिब्बा जमीन पर गिर गया। चित्र पट पर नायक और नायिका दोनो उसे उठाने के लिए एक साथ झुकते हैं, और फिर दोनो की आखें चार हो जाती हैं। पर यहा मैं क्या उठाने के लिए नीचे झुकता? मिट्टी के तेल का डिब्बा लडकी के सीने से लगी हुई किताबें तो नही था कि जमीन पर गिरने पर भी उसका स्पर्श गुदाज लगता। यह

डिब्बा राम तो बडे ही कमबख्त निकले। जमीन पर गिरते ही लुढक गये, और मिट्टी का तेल सडक पर बिखर गया ! अब मैं झुककर उठाता, तो क्या उठाता ? खाली डिब्बा ? मुस्करा कर कन्या की ओर देखने का प्रयास किया। आखें चार करके कहना चाहा, "आई एम सॉरी !"

जी हा, लडकी से मेरी आखें चार हो गयी। पर गजब खुदा का, उसकी इन आखो से मौह नही, आग बरस रही थी। उसका मिट्टी का तल गिर गया। उधर डिपो पर लगी भीड मे भी इस खबर से सन्नाटा खिच गया। लडकी चिल्लायी। उसके स्वर मे तनिक भी भावुकता नही थी—"सॉरी के बच्चे ! मेरा मिट्टी का तल गिरा दिया—मैं तुझे जाने न दूगी।'

फिल्म मे जाने न दूगी कहकर नायिका नायक के इद गिद नाचती है, यहा कन्या मरा गिरेबान पकडने पर उतारू हो गयी। फिल्म मे जब गाना शुरू हो जाता है, तो पेडा के पीछे से नायिका की सहेलिया भी निकलकर कमर हिलाने लगती हैं—जाने न दूगी।"

पर इस लडकी की यह जाने न दूगी की घोषणा मुझे सगीतमय नही, कुछ बेसुरी लगी। वह अब चीखते चिल्लाते हुए रोने भी लगी थी, कि जैसे फिल्म का क्लाईमैक्स शुरू हो गया हो। मैंने पडो के पीछे से चुहलबाजी करती हुई सहेलियो के निकलने की उम्मीद छोड दी, क्योकि मेरे आस-पास दूर दूर तक कोई पेड नही था, सिफ राशन डिपो के बाहर लगी भीड थी, जो लडकी को रोता देखकर अब हमारे आस पास आकर जुटने लगी थी। मैंने अपने इद गिद इकट्ठी हो रही इस भीड को देखा। एक भी क़ुबूल सूरत चेहरा नही था, सिफ जिदगी के चद सताये हुए वृद्ध जन थे, जो अपने हाथ के डिब्बो को मेरे ऊपर हथियार के रूप मे इस्तेमाल करने की सोच रहे थे। फिर दादा मुनि अशोककुमार से लगने वाले एक वकीलनुमा बूढे ने मुझ से जिरह शुरू की। मुझे लगा, फिल्म का कोर्ट-सीन बाकी था, लीजिए, अब वह भी शुरू हो गया।

—नही, मेरा कोई दोष नहीं है। मैं मुजरिम नही हू। मैंने भरे हुए गले के साथ अज की कि शायद लडकी का दिल पसीज जाये।

—अधे ! मुहझौंस। मेरा एक महीने भर का तेल गिरा दिया, और कहता है कि मेरा कोई दोष नही। लडकी चिल्लाई। उसकी आवाज किसी

मेज पर नम्बर

शहर म शोर मचा था कि वह लापता हो गया है। एक महीने से उसका कुछ अता पता नही। कहा गया वह बेढब आदमी? इस चिलचिलाती धूप और बेपनाह गर्मी मे जब लोग घर से बाहर मुह नही निकालते, उसे आवारगी सूझी है।

नही जनाब माफ कीजिए। सिर्फ इस बार वह आवारगी पर नही था। चन्द कुलीन लोगो के साथ बैठकर देश के सकडों नौनिहालो की किस्मत का फैसला कर रहा था। हाथ पर सरसो उगाने का मुहावरा तो वह बहुत दिनो से सुनता आ रहा था, अब उसे हथेली पर नतीजा उगाने के लिए बुलाया गया था। पर कहा, किस यूनिवर्सिटी म? माफ कीजिए यह सब मैं आपको नही बता सकूगा। हा, इतना समझ लीजिए कि यह सब अपने ही देश म हो रहा है, और इसम कल्पना का अश बहुत कम है।

हा मान तो जैसा मैंने बताया उसे उत्तर पुस्तिकाओ का एक गट्ठर देकर उस हाल म मेज पर नम्बर लगाने के लिए ढकेल दिया गया था। जब वह उस हाल मे घुसा, तो उसके आगे पीछे कुलीन लोगो का एक समूह भी एम ही गट्ठर उठाये चल रहा था। ये प्राध्यापक गण थ जो दूर-दूर के शहरो से किस्मतो का फैसला करने आये थे पर अब तफरीह के मूड मे लग रहे थ। इनमे से चन्द लोग उसे अचानक बुढापे से यौवन म पदार्पण करते हुए लगे, क्योंकि उन्होने अपने सफेद होते बालो पर मेहदी पोत रखी थी, और अभी अधिक उत्तर पुस्तिकाओ के लिए क्लर्क साब स चिरौरी से लेकर

झगडा तक करके आय थे।

वह जब से इस समूह म शरीक हुआ था, उस लगा था, वह अचानक लोकप्रिय हो गया है। क्योंकि हाल के बाहर और अन्दर परिचित-अपरिचित लोग उस हस-हँसकर मिल रह थे, और बलात बगलगीर हो रह थे। आलिगनबद्ध होत ही वह उसक हाथो मे एक पुर्जा थमा देते। पहला बार तो उसन इस पुर्जे को प्रेम पत्र समझा लेकिन बगलगीर होने वाली कोई महिला नही थी, अत यह कल्पना बहुत मधुर नही लगी। फिर पुर्जा खोला, तो उसमे कोई न कोई आकडा निकलता। उसन दडा-सट्टा कभी नही खेला, फिर यह आकडे कसे?

पर तभी बगलगीर होने वाले महानुभाव उसके कानो म फुस-फुसा दत—हे-हे भाई साब आपके ही भाई भतीजे-पडोसी का रोल नम्बर है। जरा देख लीजियगा।

उसका भाई, भतीजा या पडोसी? पर इससे पहले कि वह चौंक, उसन देखा कि यह भरत मिलाप हाल के हर कान म हो रहा था, और वहा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का अजब नजारा था।

उसन इस नजार को और लम्बा नही होन दिया और जल्दी स अपनी सीट पर बैठ गया। पर वहा चन्द सज्जन उसस पहले ही अपनी-अपनी सीट पर बैठ चुक थे, और बहुत तन्मयता के साथ अपना काम कर रह थे। वह उनकी यह कत्तव्य-परायणता देखकर मुग्ध हो गया। उसका जी चाहा कि वह उनकी सीट पर जाकर उन्ह बधाई दे। भला ऐस परिश्रमी लोग आजकल कहा मिलत हैं? पर जब वह बधाई दन के लिए उनकी सीट पर गया तो पाया कि उनकी उत्तर पुस्तिकाओ के गट्ठर तो अभी खुले भी नही थे। व बडे मनोयोग के साथ एक लम्बा नील फाम भर रह थे। पता लगा, यात्रा भत्ते का बिल है। इस भरने म गलती नहीं होनी चाहिए। नही तो मेज पर नम्बर लगाने के बाद इस बिल की मेज पर ही अदायगी नही होगी, और आप तो जानत ही हैं कि दफ्तरी रुटीन म कोई बिल लटका तो फिर लटक ही गया।

खर खुदा-खुदा करके काम शुरु हुआ। और साब, उसक बाद मेज पर नम्बर लगाने वालो ने जो हाथ दिखाय इसे देखकर तो घुड दौड म शरीक

होने का मजा आ गया। हर नम्बर बाटने वाला एक-दूसरे से पहले इस काम का पटका देना चाहता था। एक साहब ने तो जरूर इस क्षेत्र मे ओलिम्पिक का रिकार्ड ही कायम कर दिया होगा, क्योकि उसने देखा कि उसकी एक जम्हाई से लेकर दूसरी जम्हाई के बीच उन्होंने पूरा गट्ठर पार कर दिया था। पर वह साहब काम खत्म करने के बाद भी उठकर नही गये, और वही बैठे सुस्ताते रहे। पता लगा कि उन्हें चाय और मठरी की इतजार है जो कापियाँ जाचते हुए मुफ्त दी जाती हैं। पर यह इतजार करने वाले सिर्फ एक ही सज्जन नही थे, उसने पाया कि सारा हाल ही इस प्रतीक्षा म व्यस्त था।

फिर चाय और मठरिया हॉल मे आ गयी। अब हर मेज पर बैठा सम्भ्रात पुरुष मठरी कुटक रहा था, और देवदूतो का इतजार कर रहा था। यह इन्तजार लम्बा नही हुआ, क्योंकि जल्दी ही कुछ देवदूत अपनी फेहरिस्तो के साथ इस हॉल म आ गये और एक एक मेज पर जाकर पूछने लगे, 'आपके पास यह रोलनम्बर तो नही है ?"

यह हालत देखकर उसका मन कडवा हो गया, क्योकि उसे अपनी गली की बर्तन माजने वाली विधवा बुढिया याद आ गयी, कि जो अपना पेट काट कर अपने बेटे को पढा रही थी। इस नौजवान को वह रात-रात भर जागकर पढते हुए देखता रहा था। इम्तहान खत्म हो गया, अब नम्बर लग रहे हैं। पर इस बेचारे का नाम किसी देवदूत की फेहरिस्त म नही है फिर विधवा बुढिया की किस्मत भला कैसे बदल सकती है ?

पर इधर वह बुढिया की किस्मत के बारे म सोचता रहा, और उधर महानुभावो ने अपना-अपना काम खत्म भी कर लिया। फिर काम खत्म होते ही वे सब ऊपर की मजिल की ओर भागने लगे। पता लगा, ऊपर की मजिल म दूसरी क्लास के नम्बर लगेंगे। ये सब लोग वहा भी खाली जगहो पर काम करने की इच्छा म थे। उसने उन्हें इस शुभ इच्छा मे व्यस्त रहने दिया, और उदासी के साथ हाल से बाहर आ गया।

बाहर एक नेता किस्म के महापुरुष देश के दुर्भाग्य पर चिन्ता प्रकट कर रहे थे। वह उन्हे अपनी दास्तान सुनाकर उनकी चिन्ता को बढाना चाहता था, पर उन्होंने उसकी बात सुनने से इन्कार कर दिया।

"बरखुरदार, किस किसकी कहानी सुनें ? यहा तो पूरे-का पूरा ढाचा ही बिगडा हुआ है । एकाध जख्म हो तो मरहम पट्टी भी कर दें ।"

नेता जी अपनी बात कहकर आगे बढ गये । उसे लगा, शायद वह ठीक कह रहे थे । अपने मरीज का इलाज सिर्फ मरहम पट्टी से नहीं होगा । उसके लिए शायद पूरा अस्पताल भी कम पडे ।

८

नाग देवता के वशज

हमारे शहर म एक औरत की कीमत एक भस से कम हो गयी है, आपके शहर का क्या भाव है, मैं नही जानता। पिछले दिनो हमारे शहर म एक औरत ने एक बेटा जना। बेटा पैदा होने की खुशी मे उसके ससुराल वालो न उस औरत के मा-बाप से माग की कि वे उन्हे एक ऐसी भैस का नजराना पेश करें, जिसने अभी-अभी बेटी जनी हो अथात भस दर भैस की सौगात। बेचारे मा-बाप भैस दर-भैस का यह उपहार पश नही कर सके, इसलिए ससुराल वालो न उस औरत को पीट पीट कर मार डाला। बाद म मुहल्ले म घोषणा कर दी गयी, कि उस औरत की साप के डसन से मृत्यु हो गयी है।

खबर सुनी तो हम लगा कि यह घोषणा बिल्कुल ठीक हुई है। अपने देश की औरत कितनी किस्मत वाली है कि उन्हे जिंदगी के हर मोड पर डसने के लिए साप मिल जाते है। साप तो नागदेवता के वशज हैं, एक बार जिसे डस लते हैं, वह सीधा परलोक जाता है। औरत के होश सभालते ही ये नागदेवता के वशज उसका उपकार करने के लिए उसके इद गिद इकट्ठे होने लगते है। लडकियो के स्कूलो और कालिजो के बाहर जीन और स्काफ म लिपटे हुए नौजवान आपने देखे होगे। दूर से देखने पर ये ब्रूसली के काटून लगते है। छू लीजिए तो नागदेवता की तरह फुकारते है। चाट पकौडी खिलाने के बहाने य हीरो-कट लोग मासूम लडकियो को स्कूलो और कालिजो स खिसकाने के पवित्र काम म लगे रहते हैं। फिर

जब इनके जहर से लडकिया का शरीर पीला पड जाता है ता य उन्हें पतित कहकर समाज से बाहर कर देते हैं। खुद अपनी शादी क लिए मंदिर की घटिया जैसी किसी पवित्र लडकी की तलाश म रहत है और उनका डसी हुई य लडकिया सोसायटी कन्या का चोला पहनन के लिए मजबूर हो जाती ह। जीन और स्वाफधारी इन हीरोकट नौजवानो ने देश का कितना उपकार किया है ! ये महिला कालिजा के इद गिद यू फिल्मी धुना म न फूत्कारे ता दश से सोसायटी कन्याओ का धधा खत्म हो जाय। फिर उन नौकरशाहा और धनासेठो की राता का क्या होगा, जिनकी रगीनी इन कन्याआ के दम से है। नागदेवता के य वशज देश का कितना कल्याण कर रह है। इनके बल से धन्ना सेठो को सोसायटी कन्यायें प्राप्त होती हैं। फिर वे इन कन्याआ को अफसरा का डाली के रूप म पेश करत है। अफसर की रात रगीन हा जाती है, तो वह तरोताजा होकर दफ्तर जा बैठता है, और सेठ की फाइल पर स्वीकृति के दस्तखत कर देता है। छह महीन का काम एक दिन म हो गया तो देश प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ। छठी याजना की महान सफलता के बाद हम सातवी पचवर्षीय योजना की ओर बढें, और प्रधानमन्त्री न लाल किले की प्राचीर स देश को नया नारा दिया—'श्रमेव जयते !'

ता यू देश श्रम कर रहा है पर देश के एक हिस्स म आदिवासी औरतें आज भी इसी तरह से खरीदी और बेची जाती हैं। पिछले दिना पत्ता, एक खाजी अखबार के सवाददाता दु खी है कि औरत वह खरीद कर लाये, अपनी खबर की सच्चाई जाहिर करने के लिए और यह बम्बई के एक फिल्म निमाता साहिब ह न। उन्हान उनकी खबर पर फिल्म बना डाली, 'कमला' ! उनमे अनुमति भी नही ली उन्ह रायल्टी भी नही दी अब अदालत म दोनो के बीच मुकदमा चल रहा है।

ता लीजिए अपने देश म आज भी औरत बिक रही है और उसकी खबर दन वाला और उसकी फिल्म बनाने वाला अदालत म जूझ रह हैं। पर अपनी दुनिया म औरत के बिकने की यह खबर कोई नयी नही है। सदिया पहल अरब देशा मे बुर्दाफरोशा की मण्डिया सजती थी, और औरत का जिस्म मुट्ठी भर दीनारा के लिए बिक जाता था। तब इस

बिकती हुई औरत का कनीज कहा जाता था। आज इस बिकी हुई औरत को दुल्हिन कहा जाता है। आज अरब देश के तेल के कुए सोना उगल रहे हैं। थैलीवान अधेड शेखो के जहाज अपने देश की बदरगाहो पर लगते हैं, क्योकि यहा बहुत गरीबी है। अधेड शेख हमारे यहा 'गरीबी हटाओ अभियान पर आये हैं। रोटी-कपडे के लिए तरसते हुए परिवार अपनी जवान बेटियो को सजा रहे हैं। शेख उन्हे थैली भर पैसा देंगे, और उनकी बेटी को बीवी बनाकर अपने साथ ले जायेंगे। शेखो के हरम बहुत बडे हैं और उनके अधेरे बहुत गहरे। इस देश की न जाने कितनी बेटिया वहा जाकर गुम हो गयी। लेकिन इससे हमे क्या लेना। औरत का काम ही है, हरम के अधेरो मे जाकर गुम हो जाना। सदियो से वह ऐसा ही करती चली आ रही है। लेकिन अब उसने खुद गुम होकर अपने परिवार की गरीबी दूर कर दी। जो काम हमारी सरकार उन्तालीस साल के 'गरीबी हटाओ अभियान मे न कर सकी, उसे इन औरतो ने सात फेरे डालकर पूरा कर दिया। नागदेवता की कैसी कृपा हो गयी अपने देश की इन औरतो पर।

पर जो औरतें यू शेखो की मण्डी मे बिकती है, उनकी सख्या तो बहुत कम होती है। अधिकतर औरतें तो हमारे शहरो की मडियो मे बिकती है। इन मडियो के दस्तूर बिल्कुल अपने हैं और इनमे होने वाले सौदो को शादी का नाम दिया जाता है। इन सौदो की घोषणा 'शुभ पाणिग्रहण' का चमकदार निमत्रण पत्र छाप कर की जाती है। लडकियो को अपने सौदे की इन्तजार मे बहुत दिन तक इन मडियो मे बैठना पडता है। पहले माल की आमद की घोषणा 'वर की तलाश' के विज्ञापनो द्वारा अखबारो मे की जाती है। नाते रिश्तेदारो मे गुहार करके की जाती है। फिर जब बहुत दिन बीत जाय, और लडकी बुढा कर औरत लगने लगे तो कही रिश्ता तय होता है। यह रिश्ता तय होना भी किसी सौदा पटने से कम नहीं होता, और इस सौदे का भी बिल्कुल अपना ही दस्तूर है। इसमे बिकने वाली लडकी अपने बिकने की कीमत खुद अदा करती है। यह कीमत किस्तो मे अदा होती है। पहली कीमत शादी के अवसर पर जिसे दहेज कहा जाता है, और फिर हर तीज-त्योहार पर इसकी एक और किस्त उसके मायके का अदा करनी पडती है। हर लडकी को एक पति मिलता है, जिसे चुप रहने

की बीमारी होती है। एक सास जो उसे 'कंगला की बेटी' कहकर समय समय पर उसका झाटा नाचने के लिए उतारू रहती है। कुछ ननदें होती हैं, जो पास पड़ोस की खबर लाकर बताती है कि उनकी भाभी तो दूसरों के मुकाबिले म कुछ भी नही लायी। हम तो सूखे ही टरका दिया गया। और एक जेठ जी होते हैं जो बहू के लिए मिट्टी के तेल का इन्तजाम करते हैं। आजकल लगभग हर घर म चूल्हे की जगह गैस का युग आ गया है लेकिन नयी बहू वाले घर म गैस की जगह मिट्टी के तेल का स्टोव पाया जाता है। बहू रसोई म काम करते हुए नायलन के कपड़े पहनती है, ताकि स्टोव फटने पर इन कपड़ो को आग पकड़ने म आसानी रहे। इस शुभ काम के लिए गैस के सिलेण्डर बहुत कम फटते देखे गये हैं क्योंकि गैस का एक सिलेण्डर कई दिन इन्तजार करने पर कतार म खड़ा होने के बाद मिलता है।

पर इस बार यह नयी खबर! महगाई के बढ़ते जाने के साथ-साथ हमारे शहर म शादी के नाम पर औरतो के इन सौदो मे इतना सुविधाजनक परिवर्तन। जैसा कि शुरू मे अर्ज किया कि इस महगाई के जमाने म कम से-कम औरत का बाजार भाव तो घट गया। औरत की जिंदगी की कीमत भैस से कम हो गयी, और अब इसके लिए अपना नया स्टोव कुर्बान करने की भी जरूरत नही। नागदेवता जब इन पर कृपा करने लगे हैं और हमारे शहर म मामला अब एक रुपये के जहर मे ही निबट जाता है।

आपके शहर की ताजा स्थिति और बाजार भाव क्या है, कृपया लौटती डाक से सूचित करें।

आदमी और चूहे

खवर गम है कि इस सदी के अन्त तक हमारे देश में इसान क लिए खडा रहने की जगह भी नही बचेगी। आकडा शास्त्री बतात हैं कि आजादी के बाद अपना देश जनसख्या विस्फोट की गिरफ्त मे आ गया है। सरकारी तौर पर लूप और निरोध की वेधडक इश्तिहारबाजी के बावजूद अभी तक इस विस्फोट मे बित्ता भर भी कमी नही आयी। ज्यो-ज्यो वक्त गुजरता जा रहा है इस जनसख्या विस्फोट ने हमारे समाज पर अजीबोगरीब तरीके स असर करना शुरू कर दिया है। एक खबर यह भी आयी है कि वह दिन दूर नही जब अपने देश मे आदमियो की सख्या चूहो से बढ जाएगी। प्राणी-विज्ञान के माहिर बताते हैं, कि पिछले दिनो अपने देश म चूहा की कौम अपन जीवन स्तर म आश्चयजनक रूप स सुधार लाने म कामयाब हो सकी। आम आदमी तो परिवार नियोजन अपनाने म, कामयाब नही हो सका है, लेकिन चूहो ने आपसी समझौता कर अपनी तादाद को घटा लिया है। वे अपनी नस्ल मे किसी नये जतु को आसानी से प्रवश नहीं करने दत और धीरे धीरे उहोने देश के तमाम महत्वपूण स्थानो पर अपना दखल कर लिया है।

इन चूहा के जीने का ढग बडा विचित्र है। ये आपको दफ्तरो की कुर्सिया से लेकर राजाध्यक्षो के गद्दा तक मे चुपचाप आराम करत हुए मिलगे। क्योकि परिवार नियोजन की वजह से इन सभी जगहो पर किसी नय चूहे को आसानी स दाखिला नही मिलता, इसलिए गद्दिया म फस हुए चूहा म

अशिक्षित बेकार नौजवानो का रोजी की तलाश म दूसरे देशो की ओर जाता हुआ देखते हैं। अत अब उनकी राय भी हो गयी है कि इस देश मे रखा ही क्या है। आजकल कानूनी अथवा गरकानूनी तरीका से यह कीट-समुदाय भी अपना पासपोट बनवाने की फिराक मे लग गया है। पासपाट दफ्तर के चक्कर काटते एक दु खी कीट ने हमें बताया, 'जुबीन मेहता के सगीत का पूरे देश ने किस प्रकार अपनी टोपी उतारकर स्वागत किया, आपने देखा ?'

हमने यह स्वागत देखा था। अपन देश मे कलाकार एडिया घिस घिस कर मर जायें पर उसे पहचान न देना अपने यहा का दस्तूर है। और जब यही कलाकार विदेश स स्वीकृति की माहर लगवाकर अपने देश म लौटते हैं, तो हम उन्हें सलाम बजान के लिए कतार में लग जाते हैं। रवान्द्र बाबू की *'गीताजलि' का अथ हम विदेशिया न समझाया, सत्यजित राय पाथर पाचाली' बनाकर महीना हाथ पर हाथ धरकर बठ रह। जब विदेशी फिल्म* साजा ने हम यह बताया कि अरे, यह तो तुम्हारी धरती का क्लासिक है, तो हम जागे। और आजकल ओमपुरी से बडा फिल्म अभिनेता और कौन है ? उसे कारलोवैरी का एवार्ड मिल गया है न। तो इसलिए हम कीट-समुदाय को पासपोट दफ्तर का चक्कर लगाता छोडकर अपने देश मे लौटे।

इधर अपन देश म परिवार-नियाजन असफल हो गया था, और जन-सख्या विस्फोट पूरे यौवन पर था। बसा की छतें तो हम शुरू से ही सामान की जगह सवारियो स लदी हुई देखत आ रह थे। लेकिन जब हमने देखा कि लोग रेलगाडिया की ढलवा छतो पर भा हजारो की तादाद म चिपककर सफर कर रहे थे। कौन कहता था कि भारत सापो और बाजीगरो का देश नही है। यू रेलगाडी की छत पर बैठकर सफर करना किसी बाजीगरी से कम तो नही। य रेलगाडिया जब तजी से भागती है, और काई किस्मत का मारा छत से फिसल कर, या राह के सिगनल से टकरा कर चल बसता है, तो चिन्ता न कीजिए ! बस, इसे आप परिवार नियाजन का ही एक नया ढग समझिए।

इसके अतिरिक्त परिवार नियोजन के कई और तरीके भी हमने प्रचलित होते हुए देखे। जहा बाजारो मे आजकल सौ के नकली नाटा का

पीढ़ी दर-पीढ़ी आराम करने की परम्परा भी पैदा हो गयी है। जब से परिवार नियोजन का अर्थ उन्होंने परिवार-पोषण से लिया है, इन चूहों की सेहत अच्छी हो गयी है। औसत उम्र भी बढ़ी है, और वे सख्या विस्फोट की समस्या से भी छुटकारा पा गए हैं। आम आदमी के लिए भी इन चूहों ने यही सदेश दिया है, कि परिवार नियोजन का अर्थ आप परिवार-पोषण से लीजिए। जग में भले की जगह घर में भले के बारे में सोचिए। आपकी सख्या स्वयमेव कम हो जायेगी। अनार कम हैं और बीमार अनगिनत। तो क्या न अनार को अपने बिल में ही रखा जाय। बीमार जब अनार के बिना दम तोड़ने लगेंगे तो जनसख्या विस्फोट की समस्या अपने-आप हल होनी शुरू हो जायगी।

जग का गुजरा देखते हुए हमने यह पाया है कि चूहों का यह सन्देश अपने देश में कुछ विशिष्ट व्यक्तियों तक भी पहुच गया है। उन्होंने देश की राजनीति, साहित्य कला व सस्कृति के अखाड़ों में इसे कार्यरूप देना शुरू कर दिया है। 'यह रास्ता आम आदमी के लिए नहीं है" के सूचनापट्ट इन अखाड़ों के बाहर लगा दिए गए हैं। स्वनामधन्य महामानव राजनीति, कला, साहित्य व सस्कृति की विरासत खुलेआम अपने बेटों पोतों और पड़पोतों के नाम करने की घोषणा कर रहे हैं। पूछने पर हमें यह बताया गया कि एक भीड़ से भरे मुल्क में राजनीति साहित्य व कला की उच्चतम परम्पराओं को जिन्दा रखने का यही एकमात्र तरीका है।

और इन अखाड़ों के बाहर जहा इन नक्काशीदार परम्पराओं की कोई आवाज भी नहीं जाती, इस देश की अंधी गलियाँ और बदबूदार नालियाँ में बजबजाता हुआ आम आदमी का जनजीवन है। देश के फुटपाथों से लेकर अंधी गलियों तक लोग कीट पतगों की तरह कुलबुला रहे हैं। पिछले उन्तालीस बरसों में जनसख्या विस्फोट के कारण इन लोगों की सख्या कुछ इस तेजी के साथ बढ़ी है कि इस देश के कीड़े भी शर्मसार हो गये हैं। सुना गया है कि अपनी आबादी के लिए देश की धरती को कम पड़ता देखकर वे सामूहिक रूप से इस देश को छोड़ जाने के बारे में सोच रहे हैं। वे अब किसी ऐसे देश में जाकर अपना डेरा जमाना चाहते हैं जहा का जलवायु उनके लिए मुफीद हो। हर बरस वे अपने आस पास के हजारों शिक्षित

अशिक्षित बेकार नौजवानों को रोजी की तलाश में दूसरे देशों की ओर जाता हुआ देखते हैं। अत अब उनकी राय भी हो गयी है कि इस देश म रखा ही क्या है। आजकल कानूनी अथवा गरकानूनी तरीकों से यह कीट-समुदाय भी अपना पासपोर्ट बनवाने की फिराक मे लग गया है। पासपोर्ट दफ्तर के चक्कर काटते एक दु खी कीट न हमे बताया, "जुबीन मेहता के सगीत का पूरे देश न किस प्रकार अपनी टोपी उतारकर स्वागत किया, आपने देखा ?'

हमने यह स्वागत देखा था। अपने देश मे कलाकार एडिया घिस घिस कर मर जायें पर उसे पहचान न देना अपन यहा का दस्तूर है। और जब यही कलाकार विदेश स स्वीकृति की मोहर लगवाकर अपने देश म लौटते हैं, तो हम उन्हें सलाम बजाने के लिए कतार मे लग जाते हैं। रवीन्द्र बाबू की 'गीतांजलि' का अथ हमे विदेशियो ने समझाया, सत्यजित राय पाथर पाचाली' बनाकर महीनो हाथ पर हाथ धरकर बैठे रहे। जब विदेशी फिल्म साजो न हमे यह बताया कि अरे, यह तो तुम्हारी धरती का क्लासिक है, तो हम जागे। और आजकल ओमपुरी से बडा फिल्म अभिनेता और कौन है ? उसे कारलोवैरी का एवार्ड मिल गया है न। तो इसलिए हम कीट-समुदाय को पासपोर्ट दफ्तर का चक्कर लगाता छोडकर अपने देश म लौटे।

इधर अपने देश मे परिवार-नियोजन असफल हो गया था, और जन-सख्या विस्फोट पूरे यौवन पर था। बसो की छतें तो हम शुरू से ही सामान की जगह सवारियो से लदी हुई देखते आ रहे थे। लेकिन अब हमने देखा कि लोग रेलगाडियो की ढलवा छतो पर भी हजारो की तादाद म चिपककर सफर कर रहे थे। कौन कहता था कि भारत सापो और बाजीगरों का देश नहीं है। यू रेलगाडी की छत पर बैठकर सफर करना किसी बाजीगरी से कम तो नहीं। ये रेलगाडिया जब तेजी से भागती हैं, और कोई किस्मत का मारा छत से फिसल कर, या राह के सिगनल से टकरा कर चल बसता है, तो चिन्ता न कीजिए ! बस, इसे आप परिवार नियोजन का ही एक नया ढग समझिए।

इसके अतिरिक्त परिवार नियोजन के कई और तरीके भी हमने प्रचलित होते हुए देखे। जहा बाजारो मे आजकल सौ के नकली नोटो का

धधा चल निकला है वहा धडल्ले से दवाओ की शीशियो म पानी भर कर बेचा जा रहा है। सौ के नक्ली नोट के साथ कोई नकली दवा खरीदिए और परलोक का टिकट कटवाइए। यू लागा का रामनाम सत्य' हाता देख नक्ली दवा वेचनवाले अपन आपको देश-सेवक कहला सक्ते है। जनसख्या की दर को घटान से बडी दश-सेवा आज अपने देश मे कोइ नही। इसीलिए शायद परिवार नियोजन की असफलता के बाद आज नक्ली दवा बनाने वाली कम्पनिया न इस सेवा का जिम्मा अपने ऊपर ले लिया ह।

जनसख्या घटाने की यह सेवा हमने अपने शहर मे एक और तरीक स भी होती हुई देखी। जिन्दा होते लोगा की खबर लेने के लिए हम अस्पताल मे गये, तो पाया कि इस अस्पताल म सभी बिस्तर ही नही फश का चप्पा-चप्पा भी मरीजा से भरा हुआ था। पता चला कि आजकल एक खास तरह का मलेरिया पूरे जोर से फल रहा है जो कि दिमाग को भी जकड लेता है और आदमी पल भर मे चल बसता है। इस रोग का हमला आप पर कभी भी हो मकता है दिन या रात मे कभी भी। दिन मे बीमार पडे आदमी को तो अस्पताल म लाना पडता है रात के मरीज का काम आसान है क्याकि अस्पताला की एम्बुलैंस प्राय विगडी होती है। टेलीफोन भी नही बोलता। इसलिए मरीज रात को यहा आयगा नही। आतकवादिया के डर से सरकार ने रात दस से सुबह पाच बजे तक सडको पर स्कूटर मोटरसाइकिल चलान की मनाही कर रखी है। सरकारी कानून का सवाल है सो डाक्टर भी रात मे उसे देखन के लिए उसके घर नहीं पहुच सकेगा। इस तरह रात भर म डॉक्टरी सुविधा के बिना कुछ मरीज जरूर टें बोल जायेंगे। यू लोग मरग, तो देश पर जनसख्या का दबाव कम होगा, और अस्पतालो म मरीजा के बिस्तरो की समस्या भी कुछ सीमा तक हल हो जायेगी। तो हमने पाया कि अस्पताल के एबुलैंस के नाकारापन और रात को सडका पर वाहन चलाने की मनाही न परिवार नियोजन अभियान मे अपना पूरा सहयोग दिया है—दश की जनसख्या कम हुई, और हम आर्थिक उन्नति की ओर अग्रसर हुए। सच है आजकल कौन सी बात देश का कहा कल्याण कर जायेगी, कुछ पता नही चलता। दश का भला हो जाता है, बो लाग चीखते है—अरे, यह ता देश की सेवा हा गयी!

समाजवाद की तलाश

पता चला है कि देश की खाद्य समस्या को हल करने के लिए कुछ नये प्रयास शुरू हुए हैं। ये प्रयास जयपुर में शुरू हुए, जहाँ मास्टर राणा नामक एक व्यक्ति साइकिल के टुकड़ों को गाजर मूली की तरह खा गया और बाद में मुँह का स्वाद बदलने के लिए एक जलती हुई ट्यूब को भुने हुए पापड़ की जगह खाता हुआ देखा गया।

एक ऐसे देश में जहाँ छः पंचवर्षीय योजनाओं की भरपूर कोशिशों के बावजूद हरी और सफेद दोनों क्रान्तियाँ असफल हो गयी हैं, खाने-पीने के मामले में इस क्रांति की सूचना बहुत शुभ है। महापण्डितों ने इसे 'लक्कड़-हजम-पत्थरहजम क्रान्ति' का नाम दिया है, और यह क्रान्ति हमारे देशवासियों के हाजमे के लिए बिल्कुल दुरुस्त बैठती है। उन्तालीस बरसों की आजादी में हमने खान-पीने में कितनी प्रगति कर ली है। हमारी तो खुराक का ढांचा ही बिल्कुल बदल गया। एक वे दिन थे, जब हमारे पूर्वज शुद्ध अनाज और शुद्ध देसी घी की बघारी दाल से अपनी मूँछें तरबतर करते थे, अब ये दिन आये हैं कि हमने गेहूँ के आटे में लकड़ी का बुरादा मिलाकर खाना सीख लिया है। देसी घी में कोलेस्ट्रल अधिक होता है, जो दिल के दौरे की गारण्टी देता है। अतः उसे छोड़कर हमने वनस्पति तेलों को गले लगाया है, और चोरबाजारिये हमें वनस्पति तेलों के नाम पर मोबिल आइल पिला रहे हैं। कौन कहता है, भारत का सीना अभी भी बैलगाड़ी-युग में धड़क रहा है? हमने खाद्य और अन्वेषण के मैदान में एक साथ न

जाने कितनी छलांगें लगा दी। ऊंची दुकानों वाले वैज्ञानिक हो गये और उन्होंने देश में एक नये मिलावट-युग को जन्म दिया! हींग में चूहे की मगनी और च्यवनप्राश में घोड़े की लीद खिला खिलाकर उन्होंने हमें इतना तगड़ा कर दिया है कि हमारे देश की औसत उम्र बढ़ गयी है।

ऐसे समय में 'लक्कड़हजम-पत्थरहजम शान्ति' के नाम पर साइकिल के टुकड़े और जलते ट्यूब खाने की खबर जयपुर से आयी है। ठीक भी है, जब आम आदमी के लिए देश में सही दाम पर खाने के लिए अनाज न हो, पर तब भी किसानों के संगठन अपनी फसलों के उचित दाम न मिलने की शिकायत से राजभवनों का घेराव करने के लिए मजबूर हो जायें तो सड़क के आदमी को तो अपने खाने पीने की आदतों में परिवर्तन करना ही पड़ेगा। आज अपने देश की धरती सोना उगल रही है, पर अकाल-पीड़ितों की समस्या बढ़ती जा रही है। देश की दो तिहाई जनसंख्या अन्न उपजाने में लगी है, लेकिन फिर भी किसान का बेटा भूख से बिलख रहा है। हम हर पांच साल के बाद एक और पंचवर्षीय योजना से अपने देश को आत्मनिर्भर बना देने का दावा करते हैं पर हमारे नेता लोग 'भिक्षा देहि' की मुद्रा में अपने कमण्डल उठाकर धनी देशों के दरवाजे पर दस्तक देते हुए दिखायी देते हैं। फिर आम आदमी अपने खाने पीने की आदतों को बदले नहीं तो और क्या करे?

हां, यह सच है कि हमारा देश प्रगति कर रहा है, और इस प्रगति को लोगों ने बहुमुखी करार दिया है। तभी तो धन्ना सेठों के भरे हुए गोदामों पर हमने भारी ताले लटके देखे, और उनकी दीवारों से टेक लगाकर भूखे लोगों को दम तोड़ते देखा। जी नहीं, हम इसे भुखमरी की मौत नहीं कहेंगे। क्योंकि हम भाग्यवादी हैं। 'पिछले जन्म के कर्मों का फल तो हर व्यक्ति को भुगतना है। इस व्यक्ति की आयी थी और यह चल बसा। धन्ना सेठ को क्या दोष देते हो?' —एक सड़क छाप ज्योतिषी ने हमें बताया। हमने इस ज्योतिषी के सामने रूखे बालों और उदास चेहरों वाले न जाने कितने नौजवानों को अपने हाथों की लकीरें फैलाते देखा है। इन नौजवानों की शिक्षा पूरी हुए न जाने कितने बरस बीत गये हैं। आजकल सारा दिन ये नौजवान रोजगार-दफ्तरों की धूल फांकते हैं, और शाम को किसी सड़क

छाप ज्योतिषी को अपने हाथ की लकीरे दिखाते है। लकीरें दिखाने के बाद वे अपने खाने-पीने की आदतो को बदले नही तो क्या करें? चाहे इस बीच सरकारी सूत्रो के हवाले स हम खबर दी जाती रहे, कि इन बरसो मे बेहिसाब नये उद्योग धधे शुरू हो गये हैं, बाध खडे हो रहे हैं नयी नयी मिलो की चिमनिया धुआ उगल रही है, और हम हरी और सफेद क्रांति के बाद एक औद्योगिक क्रांति की ओर बढ रहे है।

हम क्रांति की ओर बढ रहे है—और इस क्रांति के साये-तले भूख और बेकारी जवान हो रही है। जवा होती हुई इस भूख और बेकारी को देखते हैं तो हमें लगता है अपना देश समाजवाद के नारे की ओर एक कदम और बढ गया है। बस, अब खान पीन का स्तर बराबर करने की जरूरत है।

अपने देश म समाजवाद का यह नारा राजप्रासादो से उभरता है, और फुटपाथ तक जाता है। डिस्को सस्कृति की तरह आजकल हम समाजवाद की नामलेवा सस्कृति मे जी रहे हैं। अपने यहा क्रान्ति की बात करना एक फैशन हो गया है, और समाजवाद रूप बदल-बदलकर पहले ड्राइग-रूमो मे से प्रकट होता है, फिर फुटपाथ पर करवट बदलते आदमी की जिन्दगी मे रोशनी भरने का दम भरता है। कही इस समाजवाद का नाम गाधीवादी समाजवाद है तो कही मार्क्सवादी क्राति के यह अलबरदार सब को एक ही आख से देखते हैं। इसीलिए तो आज अपने देश म न जाने कितने नये-नये तरीको से वर्ग भेद मिटने लगा है। आदमी और आदमी बराबर होता जा रहा है।

अपने देश म वर्ग भेद के ये तरीके बिल्कुल नये हैं। वनस्पति तेलो मे मिलावट करने वाला हमे मोबिल आइल परोस रहा है और अमीरों व गरीब का भेदभाव किये बिना परोस रहा है। शक्ति बढाने के लिए कुश्ते पर घोडे की लीद की खुराक उसने हर वर्ग के लोगो को उसी उत्साह से साथ बाटी है।

इधर खान पान के तरीको म भी तेजी के साथ परिवर्तन आ रहा है। देखिये न क्या अमीर और क्या गरीब, आज अपने यहाँ कोई भी अधिक खाने की वकालत नही करता। हमने बडे घरो म, डनलप गद्दो पर जीते लोगो को सिर्फ एक जून खाकर ठण्डा पानी पीते हुए देखा है, क्योकि ऐसा

करना उनके बढ़ हुए पेटों के लिए आवश्यक हो गया है, और उनसे डाइट-चाट उन्हें कम से-कम चपातियां खाने का आदेश दे रहे हैं। तो इधर बड़े घरों के वजनग्रस्त धनी लोग कम खा रहे हैं, और उधर देश की आय से अधिक जनसंख्या, जो गरीबी की रेखा के नीचे जाती है, उस तो खैर उम्र भर एक जून खाना ही है। कम से-कम चपातियां खाकर उठ जाना उनकी जेब की मजबूरी है। चलिये, कारण चाहे जो भी रहा, आज बड़े पेट वाले मिल-मालिक और पीठ से सटे पेट वाले लटखड़ाते हुए मजदूर ने रोटी तो एक जून ही खायी। सब ओर बराबरी पैदा हुई। फर्क सिर्फ इतना है कि कहीं इस बराबरी का कारण डाइटिंग की मजबूरी है और कहीं बढ़ती हुई कीमतों और दम तोड़ती जेब का विवश रुदन। पर कारण मजबूरी हो या रुदन, नेताजी ने बताया है कि इससे एक नयी क्रांति पैदा हुई। इस क्रान्ति में अमीर और गरीब सब मिलकर लक्कड़हज़्म-पत्थरहज़्म हाजमे को पैदा करने की चेष्टा कर रहे हैं और सौ साल जीने की तमन्ना रखते हैं। आज अमीर आदमी की खाने की मेज से अन्न गायब हो रहा है, और उसकी जगह पर गाजर मूली आ रही है, जिसे उसने सलाद नहीं सडल का नाम दिया है। और इधर देखिए, जयपुर के मास्टर राणा ने भी गाजर-मूली के नाम पर साइकिल के टुकड़े और जलते ट्यूब चबाकर देश के गरीबों के सामने एक नया सेडल नहीं, सलाद रख दिया है। अब हो सकता है भूखे लोग पानी पी-पीकर ही इस सलाद को निगलने का प्रयास करें। हमारा विचार है इस प्रयास से देश का भारी लाभ होगा। यूं खाने-पीने के एक-सा हो जाने के कारण हम समाजवाद के करीब सरकेंगे और उसके साथ ही देश का अन्न संकट हल हो जाने में भी मदद मिलेगी।

चोर दरवाजा सम्कृति

बात हमारे शहर की है पर इसे आप अपने शहर की भी मान सकते हैं। यह बात हमारे शहर मे बडे चौराहे पर घटी। चौराहे के पूर्व से एक गधा आ रहा था और पश्चिम मे एक मोपेड-सवार। यातायात नियंत्रण करने वाले सिपाही ने अपनी धुन मे गधे को जाने और मोपेड सवार को रुकने का आदेश दे दिया। गधे ने तो सिपाही के आदेश का पालन कर दिया, पर मोपेड-सवार न रुका। वह उसी तरह तेजी के साथ अपने मोपेड को बढ़ाता हुआ आगे बढा। नतीजा, उसकी गधे से दुर्घटना हो गयी। लेकिन देखिये गजब युग का सिपाही का इशारा तोडने वाले मोपेड सवार को तो तनिक भी चोट नही आयी हाँ, कानून का पालन करनेवाला गधा अवश्य जख्मी हो गया।

पर गधे का यह हाल देखकर हमे कोई हैरानी नही हुई। आज पूरे देश मे कानून का पालन करने वाले और अनुशासन से जीने वाले गधे ही तो हो गये हैं। अनुशासन और कानून का दम भरते हुए वे जगह-जगह जख्मी हो रहे हैं और कतार तोडने वाला को बचकर निकल जाता हुआ देखने के लिए मजबूर हैं।

देखिए, आज अपने आस पास झुग्गी मे महल वही लोग हो रहे हैं जो किसी कानून अथवा अनुशासन के दकियानूसी तरीके मे विश्वास नही रखते। *ये लोग आजकल अपने लिए एक नयी संस्कृति की रचना कर रहे* हैं। आप इसे चोर दरवाजा संस्कृति का नाम दे सकते हैं।

हमने सुना था। आज हम एक मूल्य विहीन पर सांस्कृतिक वातावरण मे जी रहे है। पर ध्यान से खोजा तो पाया कि अगर हमने कुछ खोया है, तो बहुत कुछ पा भी तो लिया है। आजादी के इन उन्तालीस बरसों में अगर हमने राष्ट्र भक्ति खो दी है, तो देश के हर कोने में प्रांतीयता को अपनी नयी भक्ति बनाया है। अगर इन्सानियत को खो दिया है, तो साम्प्रदायिता को अपना नया धर्म बना लिया है। अगर परिश्रम खो दिया है, तो आपाधापी का नुस्खा अपना लिया है। मंजिल पाने के लिए बरसों तक ही रास्ते पर चलते जाने की धुन खोयी है, तो शार्टकट संस्कृति को उपजा लिया है। अगर पश्चिम से आयातित डिस्को, नशीली गोलियों और मुक्त यौन जीवन के बुखार ने हमारी वेद पुराण संस्कृति का लकवाग्रस्त कर दिया है, तो उसकी जगह इस चोर दरवाजा संस्कृति ने जन्म ले लिया ! फिर आप क्यों कहते हैं कि हम एक मूल्य विहीन समाज में जी रहे हैं? देखिये आजकल यह चोर दरवाजा संस्कृति कितनी तेजी के साथ नये मूल्यों का सृजन कर रही है। ये मूल्य रिश्वतखोरी भाई भतीजावाद, नौकरशाही और नैतिक पतन की बैसाखियों पर खड़े है, और धन के देवता कुबेर का एक नया मन्दिर बनाकर झांझ-करताल बजा रहे हैं।

निश्चय ही देश में इस नयी संस्कृति के अभ्युदय से लोगों का तो चोला ही बदल गया ! जो लोग दिन रात कानून व्यवस्था और अनुशासन की दुहाई देते थे, उन्हें हमने आदमी से गधा हो जाते देखा। ये गधे उम्र भर लकीर के फकीर होकर ढेंचू ढेंचू करते हुए अपनी जिन्दगी और गृहस्थी का बोझ ढोते हैं, और फिर किसी चौराहे पर कानून तोड़कर बढ़ते हुए मोपेड सवार से टकराकर जख्मी हो जाते हैं। फिर बाकी बची जिन्दगी को किसी गुमनाम काजी हाउस में कैद होकर अपने जख्मों को सहलाते रहते हैं।

याद रखिये, आज वही लोग सफल हैं जिन्होंने जिन्दगी का नया मर्म पहचान लिया। और जिन्दगी का नया मर्म यह है कि आप जिन्दगी की इस शतरंज में कितनी सफलता के साथ प्यादे से फर्जी हो सकते हैं। बिना कायदा-कानून की परवाह किये अपने टूटे हुए झोपड़े को कितनी तेजी के साथ भगा सकते हैं, कि लोगों का भ्रम हो जाये कि आप स्पूतनिक पर सवार हैं। याद रखिये अपने बारे में भ्रम पैदा करना आज की चोर-दरवाजा

सस्कृति का सबसे बडा सत्य है। इस भ्रम को पदा करने के कई आयाम हैं। अगर आप समाज मे अपना स्थान बनाना चाहते है तो अमीर उमरा, अफसर हुक्मरान के सामने बडे-बडे नेताओ के साथ अपनी दात-काटी रोटी होन का दावा कीजिए। इस दावे को सिद्ध करने के लिए आप इन वडे नताओ क जीवन वृत्त अपन साथ रखिय। उनके ज"म दिन और उनके चुनाव जीतन या हारने पर उन्हे पत्र लिखना न भूलिए। नेता लोग आज-कल एक ही इबारत के धयवाद के टकित पत्र भेजने लगे है। एक पत्र आपका भी आ गया तो शहर के ये भद्र पुरुष आपका दावा मान लेंगे, और 'भाई जान ! भाई जान !' कहकर आपको अपने गले से लगा लेंगे। बस, आपका धधा चल निकलेगा।

अगर राजनीति मे कूदना है तो इस भ्रम को एक और मोड दीजिए। पहले किराय के आदमी लेकर शहर मे अपने जिदाबाद हो जाने का जुलूस निकलवाइए, और लोगो म अपना लोकप्रिय नेता हाने का शुबहा पैदा कीजिए। फिर जगह बदलन के साथ-साथ अपनी बात का रग भी बदलते जाइए। दिल्ली म जाइए तो राष्ट्र की अखण्डता की बात कीजिए, और अपन क्षेत्र म लौटिये ता 'देश से बडा प्यारा' की घोषणा के साथ अपने इलाके के लिए अधिक अधिकारो को प्राप्त करन के वास्ते बगावत का झण्डा बुलद करने का वायदा कीजिए। फिर देखिए, आपकी नेतागिरी कैसे चमकती है। वह दिन गये, जब लोग भारत माता की जय कहकर हँसते हँसत फासी का फदा चूम लेते थे। आज ताहू न स्कूल जिन्दाबाद कहिये, और दश को एक व्यापारिक घराना मानकर उसकी कम्पयूटर सवा कीजिए। चूमने के लिए क्या दुनिया मे एक फासी का फदा ही रह गया है ?

अगर राजनीति नही, साहित्य आपका रणक्षेत्र है, तब तो काम और भी आसान हो जायेगा। साहित्य मे मुक्तिबोध और काफ्का जैसे लोगो के दिन लद गय, जो उम्र भर गधाइयो की तरह कलम घिसते रह पर किसी न उन्ह मुट्ठी भर घास भी नही डाली। जब मर गये तो महानुभावो न मसीहा बना दिया। पर जनाब, आजकल युग बदल गया है। लेखन की दुनिया म लाग पैदा पीछे होते हैं, और मसीहा पहले हो जाते हैं। साहित्य

और कला के क्षेत्र म तुरन्त स्थापित होने के कई नुस्खे हैं जो इस चार दरवाजा सस्कृति ने हम दिए हैं। पहला नुस्खा तो यह है कि लिखिए कम, पर उसका हल्ला अधिक करने और करवाने की कला म निपुण हो जाइए। इसके लिए आपको ऐसा भाषण करना आना चाहिए जिसम आप अपना साहित्य-सवाओ का खुद बयान कर सकें। ऐसी गोष्ठी आयोजित करवायें, कि जो आपका अभिनन्दन कर सके। ऐसा आलोचक पैदा कीजिए कि जो मच स गला फाड कर चिल्ला सके, कि आप से बडा क्रान्तिकारी लेखक आज तक पैदा नही हुआ। आप क्रान्ति करना चाहते हैं, समाज को बदल डालना चाहते हैं, तो इसकी शुरुआत अपने परिवेश से कीजिए। कल तक जिस अग्रज लेखक के घर आप 'भाई साब' 'भाई साब' कहते हुए हाथ जोड कर घुसते थे उसे गाली दीजिए। कल तक अगर आप उन अपनी प्रेरणा कहते थे, तो आज अपनी बात का रुख बदल दीजिए, और घोषणा कीजिए कि आप तो प्रेरणा रास्ता चलते सडक के लैप पोस्ट स भी ले सकते हैं। फिर उस लेखक न आपको प्रेरित कर दिया तो क्या बडा काम किया? याद रखिये कि उन्ही लेखको न क्रान्ति माग पर कदम बढाया है, जिन्होंने अपने पूववर्ती लेखको के नीचे से स्थापना की गद्दी खीच ली और इस प्रकार व्यवस्था को लात मार दी। तो यू व्यवस्था को लात मारिय और फिर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करने के लिए किसी अकादमी या बाड के बडे आदमी की लेखन प्रतिभा की खोज निकालिये। सच कहता हू चार दरवाजा सस्कृति झुककर आपका वरण करने के लिए चली आयेगी।

लेकिन अगर आपको मेरी ये बातें नागवार गुजरी यू नई सस्कृति का परिचय हासिल करके आपका जी मिचलाने लगा, और आप इसे सस्कृति नही, सस्कृति का ह्रास कहने पर उतारू हो गय तो आपके भविष्य की आशका से हमारा दिल काप रहा है। हम देख रहे हैं कि आने वाले दिनो मे आपका हुलिया भी उस जख्मी प्राणी की तरह से बिगडने वाला है उसकी तरह अब आप भी बरसो हरी बत्ती के इतजार म इस चौराहे पर ठिठके रहेंगे, और चौराहे की दूसरी दिशाओ से इशारा काटकर बढते हुए मोपेड सवार आपको कुचल कर निकल जायेंगे।

अंधेरे की नगरी

देश के दूसरे कोने से खबर आयी है कि एक जेल मंत्री जेल भेज दिये गये हैं। जी नहीं वह जेल का निरीक्षण करने के लिए नहीं पधारे। रात को दारू पीकर पिस्तौल उठाकर एक लड़की के पीछे भाग रहे थे। नशे में देशी फिल्मों की मारामारी के अन्दाज में भी आ गये। आखिर कानून को उन्हें अपनी गिरफ्त में लेना पड़ा। खबर सुन कर हैरानी नहीं हुई। अभी इससे कुछ दिन पहले ही तो एक नेता जी अपने हवाई सफर में दो-चार पैग चढ़ा कर एक एयर होस्टेस से प्रेम निवेदन करते हुए अपनी कुर्सी गंवा बैठे थे। आह! कितना जालिम है यह जमाना! क्या नेताओं को प्रेम करने का हक नहीं? सारा दिन देश-सेवा करने के बाद वे रात को थोड़ी सी मस्ती करने लगते हैं तो कानून अपनी हथकड़ियां उठा कर चला आता है। हमें समझ नहीं आती कि जब सारे देश में, जिसका जो मन चाहे वह करने का माहौल चल रहा है, तो नेताओं से ही लालटेन होने की उम्मीद क्यों की जाती है? जबकि पावरकट के इस जमाने में अंधेरा इतना गहरा हो गया है, कि कहीं कोई लालटेन जुगनू की तरह जगमगा कर इस अंधेरे को कम कर सकेगी, ऐसी उम्मीद हमें नजर नहीं आती।

इस नगरी को दूर-दूर तक काले अंधेरे ने अपने दामन में समेट लिया है। कुछ भी हो जाय, आज कोई किसी बात से हैरान नहीं होता। आज बावर्दी सिपाही खुलेआम राह चलते लोगों को लूट लेते हैं, और लोग इसे एक और खबर समझ कर नजर-अन्दाज कर देते हैं। सीमाओं पर सुरक्षा-

वला की नाव में नीच म हथियारा की तस्करी हाती है और उन हथियारा से धमस्थला से एक मिनी युद्ध लडा जाता है लेकिन सरकार अपन श्वेत-पत्र मे साफ बात कहने मे सकोच कर जाती है। जनता के चुन हुए प्रतिनिधि रातो रात अपनी वफादारिया बदल कर नीलाम हो जाते है, और लोग उन्ह फिर दुनवर विधानसभाओ और ससद भवनो म भेज देत हैं। सारी उम्र भूख खेलने के बाद एक बार सत्ता पाया नेता करोडपति होकर ही सत्ता क महल स निकलता है। अखबार वाले लाख 'स्कडल-स्कडल' चिल्लात रह, नीरक्षीर विवक के लिए कमीशन बिठवात रहे—सत्ताधीश का चेहरा कभी काला नही हाता ! यह सब ता चलता ही है' कहकर सिर की एक हल्की सी जुम्बिश के साथ बात को भुला दिया जाता है।

जनता की याददाश्त कमजोर है, उसकी जिन्दाबाद का नारा लगान की शक्ति बहुत अधिक है। इसीलिए तो नता लोग कभी भी अपने आपको राजनीति से रिटायर नही मानत। जनता का सेवा की बहुत जरूरत है और जननवक चाह अस्सी वप मे ऊपर का हो जाय, उसका कोई विकल्प नही होना ! अगर कही उसका मत्री पद नही रह स्कडला क धूलबगूल उसके ददगिद मडरान लगें ता राजभवन उसके लिए खाली करवा दिय जाते है। देश सेवा की कडी मेहनत के बाद सुस्तान के लिए भला इसस अच्छी जगह और कौन सी हो सकती है ?

इन राजभवना म नया खून और नये चेहरे का अथ हवा पानी-परिवतन स हाता है। बहुत स लोग है जिन्होने राजनीति म शिक्षा मे, कूटनीति म अपनी पारी पूरी कर ली। अब भी वे यही बन रहे तो कुछ लोगा के लिए असुविधाजनक हो सकते हैं अत उन्ह हवा-पानी बदलने क लिए इन राजभवना मे भेज दिया जाता है। उम्र और सेहत की यहा कोई बदिश नही होती। आखिर उन्हे यहा आकर कौन सी तलवार चलानी है ? सिफ उद्घाटनो का फीता ही तो काटना है। वह कापत हुए हाथों स हिलती हुई गदन के साथ भी काटा जा सकता है।

तो ऊची कुर्सी पर जा बैठे हैं हिलती हुई गदनवाले वद्ध महापुरुष य कभी रिटायर नही होंगे और उनके नीचे शासन के दूल्हा क पीछे आया-राम-गयाराम' की बारात सजी है। अपने देश म य बरातें बिक जाती हैं।

वाराता की य नीलामी कब किसी को दूल्हा बना दे, और कब किमी दूल्हा को घाडी स उतार कर कन्यादान के लिए मजबूर कर द, कोई कुछ नही कह सकता।

इस बेगानी शादी मे कुछ अब्दुल्ला दीवाने भी हो गय हैं। य अब्दुल्ला दरबारियो का वेष धारण किये हुए हैं। राजदरबार मे जाते है तो कोर्निश की मुद्रा म झुक कर सलाम करते है। लौट कर आते हैं, तो अपन सामन पेश होन वाले लोगो से नजराने की उम्मीद रखते हैं। य अब्दुल्ला कहलाने वाले लाग आपको हर जगह मिलेंगे। थाना-कचहरी म, टैक्स-दफ्तरो के अन्दर और बाहर और वहा भी जहा आप सीमेट खरीदन की इजाजत लेने जात है। बेशक इन स्थानो पर आपको कुछ लाग ऐसे मिलेंग जा अपने काम का दाम सरकार स वसूल करके सतुष्ट हो जात है। लकिन देश की तरक्की हान क साथ-साथ इन सतोषी लोगो की नस्ल भी मिटती जा रही है और अब्दुल्लानुमा लोग अब उन पर हावी होते जा रहे है। य लोग अपन काम का दाम जनता से वसूल करना अपना कत्तव्य मानत है और सरकार जो कुछ उन्ह आय के नाम पर देती है, उसे रसीदा टिकट के खर्च स अधिक नही समझते। यह वही लाग हैं कि जब ये किसी थाने म बैठ हा, और आप कभी अपना स्कूटर चोरी हो जाने की रिपोट लेकर इनके पास चले जायें तो य आपको ही पकड कर थाने मे बिठा लेते है, फिर कहते है —अपने साथ स्कूटर-चोर का पकड कर क्या नही लाये ? नही ता, हा सकता है अपना स्कूटर तुमने खुद ही चुरा लिया हो।

रात को सडकों के मोड पर आपने इन्हे यातायात का नियत्रण और वाहनो की चैकिंग करते देखा होगा। इस चैकिंग मे य लोग हर वाहन-चालक मे कागज पूरे रहने पर भी जजिया उगाहना अपना अधिकार समझते हैं। हम बिना चू चपर किय इन्ह यह जजिया भेंट करते हैं क्योकि अपन देश मे अफसरी का यही अर्थ समझा जाता है।

तो ऊघते हुए वृद्ध इतिहास क साये-तले, मौज-मस्ती के लिए व्याकुल, पिस्तौलधारी जेल मत्री के सहयोग से अपनी नगरी का जीवन चल रहा है। आज मत्री जी जेल चले गये तो क्या हुआ ? कल बाहर आ जायेंगे। बाहर आकर सवहारा के हक के लिए फिर अपना सघर्ष शुरू करेंगे। अभी

राजगद्दी नही मिली तो दीन दुखियो के सेवा के लिए कोई ट्रस्ट बना लेंगे। जनता की स्मरण-शक्ति बहुत कम हाती है। उन्हे अतीत भूल कर वतमान को जिन्दाबाद कहत देर नही लगती। और जब जिन्दाबाद का नारा उभरता है, तो धन्ना सेठ के सामने आने वाले कल की कल्पना खुल जाती है। वह अपनी थैली ढीली कर देता है। आज वह नता को चन्दा देगा, कल उम कोटा-परमिट मिलेगा। 'एक हाथ दे और दूसरे हाथ ले' का यह सौदा सदिया से चला आ रहा है। हम कौन होते हैं, इसे किन्तु-परन्तु कहनवाले!

अत किन्तु-परन्तु नही कीजिए। आप यहा सिफ वोट दीजिए। इन लोगो को नही ता उन लोगो को दीजिए, जो एक नही अनेक हैं। आप उन्हें वोट दे सकें, इसलिए आज वे इकटठे हा रहे है। कल जब राजतिलक के बाद वे एक दूसरे का गिरेबान पकड लेंगे और यही कहानी स्क्रीन प्ले बदल कर दुहरायेंगे, तो आप चौंकियेगा नही। साहित्य पण्डिता ने कहा भी है कि लेखका के पास कहन के लिए विषय ही कितन होत हैं। सिफ कोण बदल बदल कर एक ही कहानी को वे बार-बार कहत रहते हैं। नग्मा वही रहता है सिफ साज बदल जाते हैं। देखिये, आज फिर साजिन्दो ने धुन बदलने की तैयारी शुरू कर दी। उधर जेल मत्री भी अब शायद अपना रूप बदलन के लिए जेल की सलाखा के पीछे पहलू बदल रहे है।

एक नया व्याकरण

युग बदलने के साथ-साथ हमारी जिन्दगी की व्याकरण भी बदलती जा रही है। मुहावरो के अथ बदल रह हैं। शब्दो एव उपमाओ की एक नयी दुनिया हमारे सामन खुल रही है। किसी न कहा था, भस स अक्ल बडी है। जरा भसा की मण्डी मे जाकर इनका दाम ता पूछ कर देखिय, आपकी आँखें खुल जायेंगी। अक्ल का आज कोई टके सेर नही पूछता। हा आपके घर भैंस है तो साहब के घर रोज सुबह दो किलो दूध पहुचाना शुरू कर दीजिए। दाम के बारे म पूछें, तो खीसें निपोर कर कहिए 'ह ह ह ! क्या शर्मिन्दा करत है ! हम आपके, हमारी भस आपकी।"

आपकी बात जादू का असर करेगी। साब भैंस को अक्ल स बडा मानगा, आर आपकी तरक्की की हिमायत करेगा। अक्ल वाला किरानी कलम टीपता रहेगा आप बस पानी मे दूध मिला-मिलाकर साहब के घर पहुचात रहिय, काम अक्ल वाला करेगा, तरक्की आपकी हागी।

यू भैंस अक्ल स बडी हो गयी, ता एक भैंस-सेवक ने जिन्दगी म आगे बढने के कुछ लासानी नुस्खे हमे बताय। उसने बताया कि हे तात, आज विशुद्ध मुहावरा का युग लद गया। पुरानी परम्पराए दम तोड गयी। पहले परम्परा थी ग्वाले दूध मे पानी मिला मिलाकर बेचा करते थे। दूध महगा हो गया ता यह परम्परा भी बदल गयी। अब पानी मे दूध मिलाया जाता है, और उसे चिकनाई रहित कहकर ऊँचे दाम पर बेचा जाता है। पहले दूध म पानी मिलान पर मुशी प्रेमचद के पचपरमेश्वर ऐसा न्याय करत थ

कि दूध का दूध और पानी का पानी अलग हो जाता। अब पंचों के सामने बड़ी गम्भीर समस्या पैदा हो गयी है। आज दूध में पानी कौन मिलाता है। पानी को तो आजकल सिर्फ दूध की छौंक लगायी जाती है, तभी तो इस अलग करना बड़ा कठिन हो गया है। आज अधिक से अधिक पंचपरमेश्वर इतना बता पाते हैं कि पानी का यह छौंक खालिस दूध की लगायी गयी है, या नकली दूध की। अगर खालिस दूध की छौंक लगी हो तो अनुमान लगाया जाता है, कि इस पंचायत पर सत्तारूढ़ दल का कब्जा है। अगले चुनाव नजदीक आ रहे हैं तो अब गांव की नालियां पक्की हो जायेंगी, और लिंक रोड भी बन जायगी। नकली दूध का अर्थ है, पंचायत पर विरोधी दल का कब्जा हो जाना। अब इनका सारा साल लड़ते-झगड़ते ही गुजरेगा। पंचों को खुद ही अदालतों का चक्कर काटने से फुरसत नहीं मिलेगी, वे भला दूसरों का न्याय करने के लिए समय कहां से निकालेंगे ?

अपने युग में एकाएक भैंस का महत्व बढ़ जाने के कारण इसे भैंस-युग का नाम दिया जाने लगा है। भैंस-युग में ठकुरसुहाती के आयाम बिल्कुल बदल गये हैं। लोग अपना काम निकालने के लिए अब साहब की प्रशंसा में जमीन आसमान के कुलावे नहीं मिलाते वे उसकी मेज पर अपनी जेब ढीली कर देते हैं। जेब ढीली करने की इस परम्परा ने आज जमीन-आसमान के कुलाबों की जगह ले ली है।

जेब जब ढीली हो जाय तो साहब का तना हुआ चेहरा गरिमायुक्त हो जाता है और मुखमुद्रा प्रसन्न। तब ज्ञानी लोग अपने इस भैंस-युग का दूसरा चरण शुरू करते हैं। इस चरण में साहब की महिमा का स्वीकार होता है। आज कोई साहब अपने आपको महनती या दफ्तर चिपकू कहलाना पसंद नहीं करता। उसकी योग्यता तो इस बात से परखी जाती है कि सरकार के दरबार में उसकी कितनी पहुंच है। अगर वह दफ्तर के समय में गोल्फ खेलने चला जाता है तो उसे शाही अफसर की संज्ञा दी जाती है। बड़े अफसर की पहचान ही यह है कि वह लंच समय के आसपास दफ्तर आये, और चाय समय तक गोल्फ खेलने के लिए क्लब चला जाये। बीच के समय में वह सात दिन का काम एक दिन में निबटाये। निबटाये क्या बड़ा बाबू फाइल का पन्ना पलटता जाय और साहब उस पर चिड़िया बिठाता

चला जाये। दस्तखत करते हुए साहब के माथा की भृकुटि देखते बनती है, और फिर भी आप कहते ह, कि देश मे लाल फीताशाही का बोलबाला है। फाइल के एक मेज से दूसरी मेज तक सरकते हुए बरसो लग जाते हैं। पर जनाब, फाइल सरकने का भी एक ढग होता है। जरा बडे बाबू को सलाम कीजिए, और फाइल के नीचे एक छोटा सा चादी का पहिया लगा दीजिये, फिर देखिये, फाइल कैसे बगटुट भाग निकलती है।

वैसे दफ्तरशाही की इस दीवार पर कमद लगाने का भी एक अपना ही कायदा है। हमारे देश म सबसे बडी कमी ही यह है कि हम कोई काम कायदे से नही करते, फिर नौकरशाही को गालिया देते हैं पर भैंस-युग की इस वचनावली म सब कायदे-कानून लिखे हुए ह। उन्ही के मुताबिक लैस होकर ही हमारे अभिमन्यु को दफ्तर के इस चक्रव्यूह म घुसना चाहिए। आइए इस वचनावली का पाठ करें। लिखा है, हे तात, जब तू उस चक्रव्यूह के द्वार पर पहुचेगा, तो वहा तुझे एक ऊघता हुआ चपरासी मिलेगा। वह तुझे देखते ही जाग जायेगा और कूदकर कहेगा, किधर घुसे चले आते हो? परे रहो। पर तू चपरासी राज की इस कटुवाणी से घबराना नही। तेरी जेब म बीडियो के बण्डल होने चाहिए। चक्रव्यूह का द्वार भेदन का यही अमोघ शस्त्र है। तू चपरासी राज को नमस्कार करना, और उसे एक बीडी का बण्डल प्रस्तुत कर देना। बण्डल देखकर वह चुप लगा जायेगा, और तेरा इस द्वार म प्रवेश हो जायेगा!

द्वार मे घुसने पर तुझे एक हाल दिखायी देगा, जहा बहुत सी पत्थर की मूर्तिया सिर झुका कर मेजो पर काम करती मिलेंगी। हो सकता है, तुझे यह माहौल बडा डरावना और तिलिस्मी लगे। लेकिन इन मूर्तियो से डरना नही, क्योकि अभी तेरे घुसने से पहले ये मूर्तिया या तो इन मेजो पर लेटी हुई थी या तीन पत्ता खेल रही थी। अब तुझे घुसते देखकर एकदम जड हो ये अपनी फाइलो मे डूब गयी। अब तू लाख इनकी मेजो के कोने के पास मुह बाय खडा रह, ये तेरी ओर सिर उठा कर ध्यान नही देने वाली। पर जैसे भूतनाथ अय्यार ने चन्द्रकान्ता और उसकी सन्तति का तिलिस्म तोड दिया था, उसी तरह से इन मूर्तियो को जिन्दा करने का भी एक खटका है। यह खटका दबायेगा तो ये मूर्तिया हिलने लगेगी, बोलने लगेंगी।

वे जो इस मेज पर बैठे हैं, वे इस दफ्तर के बड़े बाबू हैं। खटका उनके घुटने के पास लगा है। उनका घुटना पकड़कर दबा, मूर्ति बोलने लगेगी। तेरा मुहल्ला चाहे कोई भी हो, तू बाबू साब का मुहल्लेदार बन जा। बस, दूसरी मेजों की मूर्तियां भी चौंक जायेंगी। पर याद रखना, सिर्फ घुटना दबाने से काम नहीं चलेगा। भूतनाथ अय्यार का जमाना लद गया। बेशक ये मूर्तियां पत्थर की हैं पर इनके पेट लगा है। ये बाल बच्चेदार मूर्तियां हैं तू इनका खयाल रखेगा, ये तेरा खयाल रखेंगी। जब तू अपनी जेब खोल देगा, ये तेरी फाइल का पन्ना खोल देंगी। तेरी फाइल का पन्ना खुल गया, तो अब अफसर के हुजूर में हाजिरी ही तेरा अगला कदम होगा।

बड़े बाबू के कोट का दामन थाम ले, वह तुझे अफसरशाही की यह वैतरणी पार करा देंगे। पर याद रख, इस बड़े अफसर का बड़ा रुआब है। इसकी ईमानदारी के डंके सब ओर बज रहे हैं। अतः भैंस-युग की वचनावली तुझे सचेत करती है, कि घोड़े की पिछाड़ी और ऐसे साब की अगाड़ी कभी मत होना। सीधा इनके घर जा, और बाजार से खरीदा शुद्ध देशी घी का डिब्बा इनकी मेम साहिब को पेश कर। तू कह सकता है, कि यह घी तेरे घर की भैंस के दूध का है और यह घी आज साहब की चौखट पर आकर धन्य हो जायगा। मेमसाहब सुनेंगी तो गद्गद हो जायेंगी—फिर तेरा काम बनने में देर नहीं लगेगी और तिलिस्म के दरवाजे तेरे लिए 'खुल जा सिमसिम' की तरह खुल जायेंगे।

तो देखा आपने, यूं युग बदल गया, और आपके काम अटके नहीं, भैंस आयी। फिर भी आप कहे जा रहे हैं—अक्ल बड़ी कि भैंस!

तरक्की-पसदो के नाम

कातिक पूना की रात में गदहो का मेला सिफ उज्जैन नगरी में शिप्रा नदी के तट पर लगता था, पर आजकल सारे देश म गदहो के मेले और मण्डियां सजन लगी हैं। पता चला है कि पिछले उन्तालीस वरसा म अपने दश म गदहा की माग म अभूतपूव वृद्धि हुई है। बल्कि पिछल आम चुनाव के बाद तो इनकी कीमत म पाच गुणा वृद्धि हो गयी है। इधर गदहे भी आजकल बडी खुशी से बिकने लगे हैं। बल्कि एक एक गदहा कई-कई बार बिक जाता है, और किस गदहे को कौन स मालिक न खरीदा है, निश्चय स कुछ पता नही चल पाता। दश की तरक्की के साथ-साथ इन गदहो की खुराक का भी आधुनिकीकरण हो गया है। अब वह घास-पात देखते ही थू-थू करने लगत हैं। गदहे मेहत से अच्छे हो जायें, और कद-काठ मे छोटे लगने लग इसके लिए बाकायदा नये डाइट चाट बनाये जा रहे हैं। गदहा जब बिकने के लिए तैयार हो जाता है, तो उसकी खुराक मे घास की जगह दा किलो मूगफली देनी शुरू की जाती है। गदहा बिक जाता है तो यह खुराक बदलकर बादाम और किशमिश कर दी जाती है। पता चला है, चुनावा के सीजन म इन गदहो की माग और भी तेजी पकड लेती है। उनके बिकने स पहले उन्ह बादाम, काजू और किशमिश की खुराक के वायदे किये जाते हैं। सूचना मिली है कि ये वायदे वोट डालने के दिन तक किये जाते हैं।

गदहो की कीमत बढ जाने और उनकी खुराक के बदल जाने से देश

को बहुत लाभ हुआ है। इससे पहले नौकरी प्राप्त करने के लिए या कालेजों मे दाखिला लेने के वास्ते लोगों म आरक्षित और पिछडी जातियों की होने का जाली प्रमाण-पत्र बनवाने की होड लगी रहती थी। वक्त बदल जाने के साथ गदहो का भाव ऊंचा होते देखकर लोगो मे अब ऐसे जाली प्रमाण पत्र बनवाने की इतनी ललक नही रही। अमेरिकन उपन्यास 'द रूटस' के नायक की तरह आजकल प्राय लोग अपनी जडो की खोज म निकलने लगे हैं। व इस खोज क द्वारा गदहा के साथ अपने असल रिश्ता की तलाश करना चाहते हैं। प्राय ये लोग अपनी तलाश मे कामयाब भी हो जाते हैं, और अपना असल रूप गदहा म खोज पाने के कारण 'ढेंचू-ढेंचू' करते हुए लौटते हैं। इधर स्वर्ग लोक में डारविन महोदय को भी आपकी थिसिस बदलने के वास्ते कुछ अपीलें भिजवायी गयी हैं। तथ्य-खोजियों का यह कहना है कि नये प्रमाण-पत्र यह सिद्ध करते हैं, कि इन्सान के पूर्वज बन्दर नहीं, गदहे थे, अत डारविन साहब को अपनी थ्यूरी बदल लेनी चाहिए। देखिए न, इन्सान जब गदहे की तरह व्यवहार करता है तो कितना स्वाभाविक लगता है। आज गदहा हो जाने से बडा कोई सुख नही। अपने देश मे इन्सानो के गदहा हो जाने से सब स्वनामधन्य महानुभावो का बडी सुविधा हो गयी है। नताओ, थैलीवालो, धर्म के ठेकेदारो और कानूनी अलबरदारो ने एक सुख की सास ली है, क्योकि ये गदहे परेशान करने वाले सवाल नहीं पूछते। उन्ह जहा बैठे रहने के लिए कहो बैठ रहते हैं और जब समर्थन करने के लिए कहा जाये तो व झट स हाथ उठा देते हैं, और शेष समय ऊंघते रहते हैं। डिपो और राशन संस्कृति ने भी इन गदहो को बहुत-कुछ सिखा दिया है। वे कतार मे खडा होना सीख गये हैं। अत सिंहासन पर बैठे लोगो के लिए किसी कतार-तोड क्रान्ति का भय जाता रहा है। फिर कतार से निकल कर जब वे जुलूस की सूरत म चलते हैं तो सिर्फ 'जिन्दाबाद' की भाषा म बात करते हैं। अत आजकल ऐसे गदहो को इकट्ठा करके नेताओ के लिए अपने वास्ते रैलियां आयोजित करना बहुत सरल हो गया है। गदहे सिर्फ गदहे रहें कभी इन्सान बनने के बारे मे सोचें नहीं, इसलिए उन्हें यथास्थिति बहाल रखने की कोशिशो म भी व्यस्त रखा जाने लगा है। तभी तो शायद देश में एक अजब सन्तुलन की स्थिति पैदा होती नजर आती है, जिसम अगर एक

वर्षीय योजनाओं में करोड़ों रुपये खर्च करके बांध, बिजलीघर और उद्योग-धंधे स्थापित किये जाते हैं, तो इसकी ओर बेरोजगारों की संख्या को बढ़ने से रोका नहीं जाता। अगर एक ओर कर्मचारियों को महंगाई-भत्ते की नयी किस्तें अदा की जाती हैं, तो दूसरी ओर डंडीमार बनिया अपनी चीजों की कीमत बढ़ाकर इन किस्तों को वापस लेने की टोह में लग जाता है। एक नयी योजना खत्म होती है, और भारी भरकम उपलब्धियों के आंकड़ों के बावजूद हमारी असल प्रति व्यक्ति आमदनी एक रुपया कम हो जाती है। फिर इस सबसे क्रुद्ध होकर आप कहीं तेवर न बदलें, इसलिए पड़ोस के किसी धर्म-स्थान का ध्वनि विस्तारक चिल्लाता है, 'ऊधो, करमन की गति न्यारी।' यूं देश में लगने वाली गदहों की मण्डियों की चहल-पहल बढ़ जाती है, और गदहों के दाम और भी बढ़ा दिये जाते हैं। गदहा जब अपना दाम बढ़ा हुआ पाता है तो सब-कुछ भूल जाता है। उसे बड़ी कुर्सी, आयातित कार या एक भव्य अट्टालिका नजर आने लगती है। वह खुशी से फूलकर कुप्पा हो जाता है, और पत्नी को पुचकार कर कहता है 'डार्लिंग, पुराने मुहावरे बदल रहे हैं। अब अल्लाह के मेहरबान होने पर गदहा पहलवान नहीं होता, बल्कि गदहों के पहलवान होने पर ही अल्लाह मेहरबान होता है।"

आज हमारी सबसे बड़ी चिंता यह है कि किस प्रकार तेजी के साथ गदहे पहलवान बना दिए जायें। इसके लिए सबसे पहले उनकी खुराक बदल दी जाती है। खुराक बदलती है तो उनकी पुरानी खुराक अर्थात् घास-पात और रूखा-सूखा देश के पास फालतू बच जाता है। देश के पास घास-पात का यह चारा फालतू बच गया, इससे हमें कितना लाभ हुआ? इससे पूर्व भयानक अन्न-संकट के कारण जो इन्सान भुखमरी से दम तोड़ रहे थे, उन्हें अब मरना नहीं पड़ेगा। रोटी न भी मिले तो क्या? उन्हें अब घास पात का यह बना हुआ चारा खिलाकर तो जिन्दा रखा जा सकता है, और इस प्रकार हम कल्याणकारी राष्ट्र होने की दिशा में एक और कदम उठा सकते हैं।

गदहों के यूं प्रोमोट होकर पहलवान हो जाने से हमें वर्ग संघर्ष की समस्या को हल करने में भी मदद मिल रही है। इससे पहले पढ़े लिखे नौजवान बरसों बेकार भटकने के कारण असंतोष की ज्वाला में जल रहे थे,

और गरकानूनी धधा मे उलझ रहे थे, और आतकवाद का अपने गले से लगा रहे थे। अब गदहे प्रोमोट होकर पहलवान हो जायेंगे, अर्थात खुशहाल होकर महलो म सुरक्षित कर दिये जायेंगे, तो व अपनी झुग्गी बस्तियां खाली कर देंगे। जब वेअपने-अपने काम धधे भी छोड देंगे, तब य झुग्गी झोपडिया और ये खाली होती हुई नौकरिया उन लडने मरने पर उतारू नौजवानो के हवाले की जा सकती है। इतिहास साक्षी है कि जिस देश ने रोटी-कपडा और मकान की समस्या हल कर ली है, वहा कभी बगावत नही होती। हम अगर इस प्रकार इन लोगो की रोटी-कपडा और मकान की समस्या हल कर देंगे, तो फिर वे हमारे साथ उलझेंगे नही। पेट पालने की दिनचर्या की यह चक्की बहुत बडी चीज है। आप देखेंगे कि देखते ही-देखते इन नौजवानो की आखो मे जलते हुए क्रुद्ध मशाल मद पड जायेंगे, और एक दिन वे भी डारविन की उसी नयी थ्यूरी की तलाश म निकलेंगे जिसमे इन्सान का पूवज गदहे को बनाया गया है।

निस्सदेह डारविन साहब की इस नयी खोज को देश म लोकप्रिय होते हुए गदहो के इन मेलो म बल मिला है, और वह दिन दूर नही जब आपको हर आदमी इन मेलो म अपने आपको बेचता हुआ नजर आयगा। लोगो का यू प्रगतिशील हो जाना देश की सेहत के लिए बेशक बहुत अच्छा है, क्योकि इससे जहा एक ओर शासन की गद्दी कभी डावाडोल होने की स्थिति नही आयेगी, वहा दूसरी ओर कानून की शोचनीय अवस्था म भी सुधार होगा।

वयान हाजिर है

पहले यह जिला कालावाली के रोड़ गाव म होता था। इस गाव मे मन्दिर और शिवालय की जगह पुलिस चौकी ने ल ली थी। दूल्हा नयी दुलहिन लेकर आता तो सबसे पहले मन्दिर जाने के बजाय पुलिस चौकी म दरोगा जी को मत्था टेकने जाता, कि ह दयानिधान, हम पर दया दृष्टि रखना। दारोगा जी 'तथास्तु' कह देते, तो दूल्हा की जान मे जान आती। पुलिस वाले भी मुह मीठा करने के लिए गाव की हर बारात के लौटने का इतजार करते रहत थ।

पर इधर क्याकि देश ने बहुत तरक्की कर ली है, इसलिए देश भर मे कई जगह हमन इन वर्दी धारियो का तथास्तु कहते देखा है। वसे भी जिस प्रदेश को पहले एक आई० जी० सभालता था, वहा अब चार चार पुलिस-प्रमुख हो गये हैं। पुलिस के भी न जाने कितने रूप हैं। फिर काम करने के लिए और गुण्डा, बदमाशा और आतकवादियो का सिर कुचलने के लिए उनके कमाडो दस्त और टास्क फोस भी खडे किये जा रहे हैं।

पर जब इन कानून के रखवाला का हाल पूछिये, तो इनम से बहुत से अपनी चौबीस घण्टे की डयूटी मे दु खी लगते हैं। शायद इन्हे बहुत काम करना पडता है, तभी तो जब इनकी नाक के नीचे मारकाट और आतकवादियो की हिंसा बढ जाती है तो उन पर नियन्त्रण पाने के लिए सरकार को सेना बुलानी पडती है।

देश की तरक्की के साथ-साथ इन बलमा सिपहिया के कामो मे भी

और गरकानूनी धधा मे उलझ रह थ, और आतकवाद को लगा रह थे। अब गदहे प्रोमोट होकर पहलवान हो जायेंगे, अर्थ होकर महलो म सुरक्षित कर दिय जायेंगे ता व अपनी झुग खाली कर देंगे। जब वेअपने-अपन काम धधे भी छोड देंगे तब झोपडिया और य खाली होती हुई नौकरिया उन लडन मरने नौजवानो के हवाले की जा सकती ह। इतिहास साक्षी है कि रोटी-कपडा और मकान की समस्या हल कर ली है वहा क नही होती। हम अगर इस प्रकार इन लोगो की रोटी-कपडा अ की समस्या हल कर देंगे, ता फिर व हमार साथ उलझेंगे नही। की दिनचया की यह चक्की बहुत बडी चीज है। आप दखेंगे कि देखते इन नौजवानो की आखो मे जलते हुए क्रुद्ध मशाल मद प और एक दिन वे भी डारविन की उसी नयी थ्यूरी की तलाश म जिसम इन्सान का पूवज गदहे को बताया गया है।

निस्सदेह डारविन साहब की इस नयी खोज को दश मे होते हुए गदहो के इन मेलो स बल मिला है और वह दिन दूर आपको हर आदमी इन मेलो मे अपने आपको बचता हुआ नजर लोगा का यू प्रगतिशील हो जाना देश की सहत के लिए वेशक बहुत है क्याकि इससे जहा एक ओर शासन की गद्दी कभी डावाडोल ह स्थिति नही आयेगी, वहा दूसरी ओर कानून की शोचनीय अवस्था सुधार होगा।

पाइयों पर परोसी जायेंगी, और आपको सिर्फ उनकी खुशबू का आनन्द मिलगा। पन्द्रह दिन भी यदि यह तहकीकात चल गयी, तो आप पता नहीं पायेंगे कि आपके घर मे चोरी पहले हुई थी कि अब हुई। हो सकता है यह तहकीकात बन्द करवाने के वास्ते आप इस केस का हल करने के लिए इन बलिष्ठ दण्डधारियों की मदद करें। खुद ही दरोगा जी के सामने पेश हो जायें और कहें कि आपने अपने घर मे खुद चोरी की थी इसलिए तहकीकात का बन्द कर दिया जाय। ऐसा करके निश्चय ही आप एक अच्छा नागरिक होन का प्रमाण पश करेंगे, क्योंकि हर अच्छे नागरिक का यह कर्तव्य है कि वह अपराधियो का पकड़ने म कानून और पुलिस की सहायता करे।

अपन दश की पुलिस और अपने दश की फिल्मो का भी चोली-दामन का साथ है। पुलिस के ऊपर काम का कितना बोझ है, इसका कुछ अन्दाजा आप किसी भी फिल्म को देखकर लगा सकते हैं। आपन देखा होगा, कि जब नगर मे लूटमार और हत्या की घटनाएं बढ जाती हैं, तो फिल्म के मध्यांतर से पहले एक भारी आवाज वाले 'अफसर साब' प्रकट होते हैं, जो नौजवान अफसरो को देश भक्ति पर एक ओजपूर्ण लक्चर देन के बाद 'करो या मरो' का सन्देश देते हैं। इधर अपने प्रदेश म हत्या और लूटमार की घटनाओं म वद्धि के बाद एक ऐस ही भाषण की उम्मीद हमन भी उच्चाधिकारियो स की थी। पर पता लगा कि जो साहब यह भाषण दन के लिए अपन इलाके में भेजे गय थे, उनका वापस तबादला हो गया है, क्योकि स्थानीय नताओ ने उनके विरुद्ध प्रोटेस्ट किया था कि 'दबा देंगे कुचल देंग' के सब भाषण देन का अधिकार तो उन्हें है। अगर उच्चाधिकारी ही एस भाषण करन लगे तो वे जनता को क्या सदेश देंगे ? हिन्दी फिल्मों के क्लाइमक्स मे हमने देखा था, कि जब नायक अपराधी की खूब धुलाई कर लेता है, तब पुलिस वाले भी प्रकट होने म कोताही नही करते। "कानून के हाथ बहुत लम्बे होते हैं"—कहते हुए दारोगा जब आगे बढ़ते हैं तो अगला सवाद 'तुम्हारा खेल खत्म हो गया टीकमदास !" वाला आता है। इसके बाद 'एण्ड' होता है।

पर असल जिन्दगी म हमने पाया कि यह 'द ऐण्ड' कभी नही होता। हत्या और लूटमार की घटना के बाद अपराधी टहलते हुए निकल जाते हैं,

आश्चयजनक रूप से वद्धि हुई है। आज से लगभग पचास वप पहल मुशी प्रेमचन्द ने एक कहानी लिखी थी, 'दारोगा जी'। इसम दारोगा जी की अकड और उनको मिलन वाले नजरान की बात लिखी गयी थी। अब हमन पाया है कि इन पचास बरसा म यह नजराना चढाव क रूप म तबदील हो गया है। अब लोग मत्था टेकने के लिए सिफ रोडू गाव की चौकी म ही नही जाते, देश की अय बहुत सी चौकिया पर भी शीश नवाने वाले श्रद्धालुआ की कतारें लग जाती हैं। जो चोरी करता पकडा जाय उसे तो दरोगा की मूर्ति के समक्ष हाथ जोडकर गिडगिडाना ही है। जिसके घर चोरी हो जाये उसे भी रिपाट लिखवान स पूव यू ही शीश नवाकर अपना नजराना पेश करना पडता है। शायद उसका कसूर यह होता है कि उसके घर चारी क्या हुई।

पुलिस के रोजनामचे म रिपाट दज करवा सकना किसी ऐतिहासिक शिलालेख मे अपना नाम अकित करवा लेने से कम नही। रिपाट दज करने के बाद क्याकि अपनी कारगुजारी का हिसाब रखना पडता है, इसलिए बहुत सम्भव है कि आप रिपोट लिखवान जायें और आपको दफा सात/ इक्यावन मे पकडकर बद कर दिया जाय। वस भी असामाजिक और अवाछित तत्वो की रपट आजकल आकाशवाणी और दूरदशन के समाचारो मे प्रसारित होती रहती है। इसलिए आपका अदर हो जाना सामयिक ही होगा। पर नही, आपका भाग्य अच्छा था कि आप रिपोट लिखवान जसा अवाछित काम करने के वावजूद अदर हान स वच गय। शायद आप अपने साथ किसी स्थानीय विधायक या उच्चाधिकारी की सिफारिश ले गये थ। खैर, मुहावरा बदल गया है। पहले महनत रग लाया करती थी, आजकल सिफारिश रग लाती है।

आपकी रपट दज हो गयी है। अब पुलिस अपनी कारगुजारी शुरू करेगी। तहकीकात शुरू हुई। सादा कपडे पहने बलिष्ठ दीघकाय व्यक्ति आपके घर के इद गिद दिखायी देने लगे है। आप पडोसिया से चारपाइया माग लाइए। आपके घर मे आपके लिए चाह मूग की दाल भी न पकती हो, अब मुर्गे कटेंगे। सारा दिन ये बलिष्ठ देहधारी व्यक्ति इन चारपाइया पर ऊघेंगे क्याकि तहकीकात चल रही है। मुर्गों की तश्तरिया इन चार-

युवा-वर्ष का तराना

जरूरत है युवकों की ! फड़कते हुए भुजदण्ड—कसी हुई मांसपेशियां—सुर्ख गाल और लहराते हुए बाल। क्या आप हमें बता सकते हैं कि अपने देश में ये जवान हमें कहां मिलेंगे ?

जी नहीं, इन नौजवानों की जरूरत किसी शक्तिवर्द्धक टानिक में माडल के रूप में खड़ा करने की नहीं है। हमारे मुहल्ले की कन्याएं भी एकाएक जवान नहीं हो गयीं, कि उनके लिए हम शादी के इश्तिहार के मूड में आ गये हैं, और युवक वर तलाश रहे हैं। हमने कोई नाटक कम्पनी भी शुरू नहीं की कि उसमें युवक श्रवणकुमार के रोल के लिए हम अभिनेताओं का इंटरव्यू लेना है।

आप तो जानते ही हैं नया साल शुरू हो चुका है। इस वर्ष की नौजवानों की जरूरत पड़ गयी है। यह वर्ष दुनियाभर में अंतर्राष्ट्रीय युवा-वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। अपने देशवासी तो जन्म शतियां और मृत्यु दिवस मनाने के माहिर हैं ही। अब युवा-वर्ष आ गया तो इसे भी मनाने में पीछे क्यों रहें ? समस्या तो सिर्फ देश के जवानों नौनिहालों को ढूंढ कर लाने की है।

हम देश में से नौजवानों को खोजने के लिए निकले। 'जय जवान जय किसान' का नारा तो शास्त्रीजी के जमाने से सुनते आ रहे थे, पर सरहद पर बैठे जवान को आवाज कैसे दें ? वह तो एक साथ दो दो मोर्चे संभाल रहा है। एक ओर जनरल जिया का हिंदू-मुस्लिम भाई भाई का अफजल

था सा मोर्चा, और दूसरी आर कभी चीन और कभी बगलादश की भार स शत्रु के बघनखे। इससे थोडी-सी निजात पाता है, तो उस कभी पजाब और कभी असम मे आतकवादियो की चौकसी करनी है। एस म युवा-वप का तराना गाने की फुसत भला उसके पास कहा ? इसलिए 'जय जवान' नही, हमन 'जय किसान' की आर रुख किया कि चादनी रात म खेत म भागडा नाचत हुए धरती के बेटे को पकड लायेंगे, और उसकी जवानी का जयजयकार कर देंगे।

पाला मार हुए न जाने कितन सूखे खेत हम घूम लिये, हम कही भी भागडा नाचत हुए जवान दिखायी नही दिये। गाव गाव म लगता था कि उनकी जवानी को जैस हरी क्राति ने डस लिया हो। हमन देखा इधर दश मे हरी क्राति सफेद क्रान्ति को आवाज दने लगी, जमीदार के घर पर दूरदशन का एटीना लग गया और उधर गरीब किसान का भूखा पट अपनी पीठ के साथ और भी सट गया। उसका ओसारा अनाज स खाली हो गया, और उसका जवान बेटा या तो दुबई की टिकट कटा रहा था, या रोडवज डिपो क बाहर कडक्टर बनने की चाह से इटरव्यू के लिए गिडगिडा रहा था।

धरती का बेटा दुबई चला गया या बस म टिकट काटत हुए सवारियो स दस पैसे हथियान की फिराक म लग गया, उसे अन्तर्राष्ट्रीय युवा वप मनान की फुरसत भला कहा ?

युवको की तलाश मे हम सारा देश घूमे। न जान किस किससे उनका पता पूछा। लकिन जो सुनता, हमारी नादानी पर हँस देता। कुछ महा-मानवो न कृपा कर समझाया कि क्या हम नही जानत कि अपन दश म नौजवानो क जवान होन की प्रथा नही है। भूख, बेकारी और गरीबी के लिए मान हुए इस देश म अपना बच्चा बचपन से सीधा बुढापे म जाता है, और मिट्टी के तेल की ब्लैक को भागते हुए अपनी जिन्दगी का जश्न मनाता है। फिर युवा वप मनान के लिए हम नौजवान कहा से मिलेंगे ?

परन्तु हमन महामानवो की इस बात को नजरअन्दाज कर दिया, और देश की युवा पीढी की खोज के लिए कालिजो का रुख किया। कालेजो म हम अनपढ प्राध्यापक मिले जो महगाई भत्ते की एक किस्त स दूसरी किस्त

के सफर मे अपनी जिन्दगी काट रहे थे। बहुत से पढ़े लिखे छात्र मिले, जिन्होंने अभी-अभी क्रिकेट के आंकड़ा की विद्या म डाक्टरेट हासिल की थी। हम उन्ह युवा-वर्ष के आगमन की सूचना देना चाहते थे, लेकिन वे हम बता रहे थे कि सोलह जमात पास करने पर भी नौकरी का कोई भरोसा नहीं है, इसलिए क्या न इन सोलह वर्षों मे किताबों म सिर खपाने की बजाय क्रिकेट कमेंट्री से शिक्षा ली जाये। फिर अब नौकरी तलाशन की जरूरत भी क्या ? कालेजो के बाहर नकाबपोश मोटरसाइकिल-सवार आने लग हैं जो अपनी पिछली सीट पर बिठाने के लिए दो होनहारो की तलाश म रहत है। उनके साथ एक भी बक पार हो गया तो धम की सेवा हो जायेगी, और उम्र भर की रोटियो का इतजाम भी। हमन बहुतरा चाहा, पर इन कालिजो म किसी ने युवा-वर्ष के आगमन की ओर ध्यान नही दिया। वहा पर तो मोटर-साइकिल सवारो के आने की प्रतीक्षा थी, और फिलहाल वे क्रिकेट कमेंट्री सुनने मे व्यस्त थे।

और कालिजो के बाहर शहर मे क्लब थे। पचतारा होटल थे। उनके डासिंग हाल थ। यहा धनी बाप का जवान बेटा किसी कूमर नारायण स दीक्षा लेकर सरकारी अधिकारी की प्राइवेट सैक्रेटरी को पटा रहा था ताकि किसी गुप्त फाइल की जासूसी करके किसी विदेशी सरकार स कोई निर्यात आडर हथिया सके। अपने देश म अन्तर्राष्ट्रीय युवा-वर्ष मनाया गया या नहीं, यह जानने की फुरसत उसके पास नही थी। उसके लिए इससे कहीं अधिक जरूरी यह जानना था, कि माइकेल जैक्सन का कौन सा कैसट आजकल डिस्को मे बज रहा है—किस अफसर की कीमत सिर्फ एक डिस्को पार्टी है और किसकी विदेशी शराब की बोतल म देसी शराब का अद्धा या पौआ।

डिस्को नाचते और सरकारी फाइलो के लिए एक बोतल शराब की कीमत अदा करते इन धन-कुवरो न हम घास भी नहीं डाली, और हमने घास की तलाश म देशी फिल्मो की शूटिंग का रुख किया। हमे बताया गया कि पिछली एक सदी से अपने देश के जवान फिल्मी हीरो नायिका से प्रम का प्रगटावा करने के लिए बागा म दरख्तो के इद गिद नाच-नाचकर गाना गा रह हैं। हमने सोचा कि हम इन युवा नायको का फिल्म की शूटिंग म स

अपहरण कर ले, और उन्हे फिल्मी गाने की बजाय युवा वर्ष का तराना गाने के लिए मजबूर कर दें।

हम शूटिंग म गये। वहा बाग था, दरख्त थे, और फूल भी खिले हुए थ। साइलेंस कैमरा, साउड रैडी हो चुका था। उधर युवा हीरो था जो पिछले तीस बरसो से नायिका क गिद नाच-नाचकर गा रहा था, और वृक्ष की डाली से झूल रहा था। पर आज इससे पहले कि वह गाना गाकर डाली से चूल जाता, हम उस शूटिंग म कूद गय। हमने हीरो का हाथ पकडने का प्रयास किया।

—अन्तर्राष्ट्रीय युवा वष समारोह तुम्हारे गायन का इतजार कर रहा है बधु! चलो हमारे साथ। हमने उसे खीचते हुए कहा, पर हीरो छटपटा कर हमारे हाथ से छूटना चाहता था।

—मैं कहा गाता हू। यह तो प्ले-बैक है। उसने हमे ज्ञान देना चाहा, पर हम नही मान। खीचतान शुरू हो गयी। इस खीचतान मे हमारा हाथ उसके सिर को लग गया। हीरो ने झटका दिया। उसके सिर स बालो का विग उतरकर हमारे हाथ म आ गया। अब एक गजा और बूढा आदमी हमारे सामने खडा था।

—मैं अपनी जवानी की स्वण जयन्ती मना चुका हू और अब मैं चुनाव लडकर राजनीति म जा रहा हू। आपके अतराष्ट्रीय युवा समारोह म जाने की फुरसत मेरे पास नही है। उसने हमे झिडककर बताया, और हमारे हाथ से अपना विग वापस लेकर फिर उसी वृक्ष क गिद नाचने लगा। तो इस तरह फिल्म म अपना विग दुबारा पहनकर चौथाई सदी पुराना गायक एक बूढे गायक द्वारा गाये गय यौवन गीत पर अपने होठ हिलाता रहा और इधर राजनीति म अमिताभ-स्टाइल दोशाला ओढे लोगो ने मच सभाला। हमने देखा, एक रात मे ही इन लोगो के बाल खिचडी से श्यामवण हो गय थे और इनके दामन पाक और साफ। और इस प्रकार हमने पाया कि अतर्राष्ट्रीय युवा-वष का जो स्वागत शुरू हुआ, उसमे अभी-अभी युवा हुए देश के चन्द वृद्ध पुरुष आगे आगे थे। ये लोग इस स्वागत-समारोह की एक उपलब्धि हो चुके थे, और युवा-वष का तराना गाते हुए तनिक भी झिझक नही रहे थे।

एक फरहाद की मौत

बीसवी सदी दम तोड रही है, और इसके साथ ही कुछ पुरान और बासीदा शब्दा ने फालतू सामान की तरह कूडा घर का रुख कर लिया है। जमाने के बदलत रुख को न समम पाने के कारण हमने बहुत से साहित्यकारो का भी फालतू सामान मे तबदील होते देखा है। हमारा मन इन साहित्यकारो के दद से भीगा है इसलिए इस बदलते युग की कुछ जरूरी बातें आपस अज कर रहे हैं।

आज लेखक होन के लिए सबसे जरूरी बात यह है कि आप कितने बडे चपरकनाती है। वह दिन लद गये जब साहित्यकारो न दुनिया का दद अपन सीन पर झेल कर बरसा साधना की, और अमर साहित्य रचा। कहा गय हक्सले, जिहोने नशीले कैप्सूल खाकर अपनी आखा की ज्योति खोयी, और फिर आईलैस इन गाँजा जैसी किताब लिखी थी। और काफ्का और मुक्तिबोध की वह घुटन, जो उम्र भर उहे न जाने किन किन अधेरी बावडिया म भटकाती रही।

अब लिखने के लिए इतना कठिन रास्ता अपनान की जरूरत नही। लिखना विखना छोडकर चपरकनाती हो जाइए, और अपनी कनात कही भी गाडन के लिए तयार रहिए। बस, बरसा आप चर्चित लेखक के रूप मे याद किए जाते रहगे। किसी चपरकनाती का पहला पुनीत काम यह होता है, कि वह खुद लिखने की बजाय दूसरो को लेखक बनाने म अधिक दिलचस्पी लेता है। पर मे दूसरे सडक पर चलते हुए आम लोग नही, शक्तिशाली

खास लोग होते हैं जो कॅरियर की सब सीढ़ियां पार करने के बाद अब कला-कार हो जाना चाहते हैं, या शासक दल के नेता जी, जो अपनी पढ़ा लिखा होने की छवि भी बनाना चाहते हैं। एक अच्छा चापलूस नाती इन महापुरुषों को लेखक बनाने में कोई शर्म महसूस नहीं करता, और मौका पड़ने पर उनके लिए भाषण से लेकर लेख तक की रचना कर देता है। ऐसा करने के बाद उस अपनी कलम उठा अंधेरी बावडियों में घूमने के बजाय सरकारी समारोहों की अध्यक्षता का मौका मिलता रहता है। समय के शिलालेख पर अपना नाम अंकित करवाने की इच्छा उसे है। पर इसके लिए उसे कोई अमर रचना करने के लिए अपनी दृष्टि खोने या मुक्तिबोध की तरह निर्वासन को गले लगाने, या निराला की तरह बावला होकर सड़कों पर भटकने की जरूरत नहीं। इससे कहीं आसान रास्ता है, कि ये अमरत्व-कामी लेखक समीक्षक हो जायें। इनकी समीक्षा में शरलक होम्स की जासूसी के सभी गुण होने चाहिए। यह समीक्षा हिन्दी साहित्य का इतिहास अथवा लेखक कोष लिखवाने वाली अकादमियों के काम का मूल्यांकन करे। उनके बैठने, उठने और कपड़े पहनने के तरीके से हिन्दी साहित्य को उनके अमूल्य योग दान का पता चलाया जाय। ये पता चलाने के बाद हमारा अमरता-कामी लेखक इन लोगों में बड़े खुले दिल से हिन्दी के अनन्य सेवी होने का फतवा बांटता चला जाता है, और जवाब में उसके लिए भी इन सब इतिहासों और कोषों में एक एक पराग्राफ सुरक्षित होता जाता है। आप तो जानते से हैं, आजकल एक हाथ से देने और दूसरे हाथ से लेने का जमाना है। हो सकता है लेन देन का यह सिलसिला ठीक बैठ जाये, तो इस लेखक को कोई साहित्य इतिहास या लेखक कोष लिखने का काम भी मिल जाये। मेहनत का काम है पर घबराने की जरूरत नहीं। इन्कार न कीजिए, क्योंकि इन कोषों पर प्रतिपृष्ठ की दर से खूब पैसा मिलता है। आप यह पैसा अकादमी से लेकर उससे आधी दर पर किसी जरूरतमंद नये लेखक को दे दीजिए, और यह काम करवा लीजिए। नाम आपका रहेगा, और काम नये लेखक का। इस प्रकार साहित्य की सेवा भी हो जायेगी, और नवलेखन को प्रोत्साहन भी। कौन कहता है मठाधीश नये लेखकों का प्रोत्साहित नहीं करते।

लेखन धर्म के बिल्कुल नये तरीकों में आजकल नींबू-पानी बेचना भी शामिल हो गया है। पर अगर आपके शहर में सड़े-गले नीबुओं का अभाव हो तो आप एक परचून की दुकान भी खोल सकते हैं या बारह मसाले की चाट बेच सकते हैं। आपकी इस दुकानदारी की व्यवस्था से विद्रोह का नाम दिया जायेगा। आप तो जानते ही हैं आजकल हर लेखक विद्रोही या क्रान्तिकारी घोषित होना चाहता है। इसके लिए इस शार्टकट का हमें अभी-अभी पता चला है। लेकिन परचून की दुकान खोलने का काम अधूरा रहेगा अगर आप अपनी तस्वीर के साथ इसकी पूरी खबर देश के सभी अखबारों में नहीं छपवा देते। वैसे भी आजकल अखबार की खबर और लेखन का बहुत गहरा संबंध हो गया है। वह लेखक युगबोध से कटा हुआ है, जो अपनी बारात के आगे खुद दूल्हा बनकर नाच नहीं सकता। बे-बात में बात पैदा करने की कला आप में होनी चाहिए। यह कला-सम्मेलनों से वाक-आउट करके या आयोजकों को गाली देकर, या अपनी उपेक्षा और दुर्दशा की कल्पना करके अपनी तुलना किसी शहीद से कर आंसू बहाते हुए पैदा की जा सकती है। पर ये आंसू भी बेकार हैं अगर बाद में इनका चित्र पत्र-पत्रिकाओं में नहीं छपता। अतः इस हालत में पहुंचने से पहले सदा किसी प्रेस फोटोग्राफर को अपने साथ रखिये।

आजकल लेखक का विद्रोह पूरा हो जाता है, जब उसका अभिनन्दन कर दिया जाय। अभिनन्दन प्राप्त करने के इस अभियान में लेखक को कलम चलाने की नहीं, बिस्तर बांधने की कला आनी चाहिए। जो लेखक सदा अपना बिस्तर बांध कर दूर-दूर के शहरों और गांवों की साहित्य गोष्ठियों की यात्राओं में जाने के लिए तत्पर रहता है, जान लीजिए कि उसके अभिनन्दन होने के दिन अब बहुत दूर नहीं। इन गोष्ठियों की भी अपनी ही दुनिया है, जो कैमरा के फ्लैश बल्बों और फूलों के हारों से शुरू होकर लड़कियों को आटोग्राफ देने पर खत्म होती है। हमारा लेखक इस गोष्ठी जगत को भोगता रहे, इसके लिए यह जरूरी नहीं कि वह निरन्तर साहित्यिक कृतियों का प्रणयन करता रहे बल्कि अधिक जरूरी यह है कि वह अपने शहर के किसी ऊबे हुए धनिक को अध्यक्ष बनाकर एक साहित्य-संस्था बना ले। दूर दूर के शहरों के गोष्ठी-आयोजकों को अपनी संस्था की

आर से यात्रा-भत्ते सहित सस्नेह निमन्त्रण भिजवा सके, ताकि बदले म उस भी अपना बिस्तर बाधन का अवसर मिलता रह। यह अवसर ही आज के लेखक की साहित्य साधना है, जो अतत किसी अभिनन्दन या ऊची कुर्सी के मील पत्थर तक पहुचने के बाद खत्म हो जाती है।

फिर लिखना अब किसी लेखक का निजी काम भी नही रह गया है। दादा लोगो ने हमे बताया है कि लेखन आज एक सामूहिक कम हो गया है। इसम लेखन की जमीन पार्टी मैनिफेस्टो से और कथ्य नता के नारे से मिलता है। ऐसा लेखन करने के बहुत बडे लाभ हैं सबसे पहले लेखक को पाठको और प्रशसको की एक बनी बनायी सेना मिल जाती है, जो उसकी रचनाओ की प्रशसा अपने दलगत अनुशासन के अधीन करती है। फिर उसके लेखन को जमाने के लिए उसके साथ गाष्ठी-यात्राए करने क लिए तैयार रहती है। इन साथ यात्रा करने वालो मे कुछ लोग उसकी बात पर वाह्-वाह करने और तालिया बजाने वाले कुछ उसके नाम पर मच पर कब्जा करने वाले, और कुछ मुख्य अतिथि का हार छीन कर उसके गले मे डालने वाले हैं। याद रखिये, हार छीन कर पहन सकने वाला लेखक कभी मरता नही, और साहित्य के हर युग मे उसकी जयजयकार होती रहती है।

और जो बावला नये युग के सब कम्प्यूटर तवर अपनाने की बजाय अपनी कलम से ही अपनी जमीन तलाशने मे लगा है उसे आप आज का नही, फरहाद के युग का मानिये। फरहाद तो शायद पहाड तोड कर अपनी शीरी के लिए दूध की नहर ले आया था, पर इस दीवाने को तो आखिर मे इन पत्थरा मे ही सिर पटक पटक कर अपनी जान देनी होगी।

पीठ पर लदी परम्पराए

मुगल बादशाहो के जमाने की बात है। जब बादशाह लोग अपनी बेटी ब्याहते थे ता शादी मे नौशामिया को कुछ कनीजें सेवा-टहल के लिए दहेज के रूप म दे देते थ। आज अपना देश आजाद हो गया है। देश को एक प्रगतिशील समाज बनाने की घोषणा कर दी गयी है। देश भर म तख्त और ताज उछाल दिये गय। रजवाडाशाही खत्म हो गयी। प्रिवी पर्सो का जमाना लद गया। पर चूकि अपने देश की पीठ पर सदियो की ऐतिहासिक परम्पराए लदी हुई हैं इसलिए हमने पाया कि इस देश के बडे लोगो ने अपने रजवाडाशाही तेवर अभी छोडे नही। राजा लोगो ने राजदरबारो म अपना स्थान त्यागा, तो देश के नये दरबारो, ससद भवन एव विधान-सभाओ म अपना स्थान ग्रहण कर लिया। उनके सिर पर ताज की जगह टोपी ने ले ली, और व मुख्य मन्त्री पद के चाहवान हो गये। हम बरसो से मूर्तिया पूजते आ रहे हैं इसलिए इन राजाओ के जिन्दाबाद का नारा लगाकर ही हम आश्वस्त हुए।

हमने रजवाडाशाही के ये कीटाणु तेजी के साथ देश के सभी हिस्सो म फैलते हुए देखे। यहा तक कि इन कीटाणुओ से नौकरशाही भी बच न सकी। जरा किसी बडे अफसर को अपनी कुर्सी पर तनकर बैठा हुए देखिये! बस सिर पर ताज की कमी लगती है। पिछले जमाने म किसी राजा के महल की प्राचीर पर बडा घण्टा लगा होता था। अब अफसर की मेज के नीचे घण्टी लगा दी गयी है। जरा-सा पैर दबाओ तो अहलकार

दौडे चले आते हैं। पहले रिआया राज दरबारो के बाहर अपनी फरियाद लेकर खडी रहती थी। आज अपनी अर्जी उठाकर इन दफ्तरो के बाहर मडराती रहती है। दरबान की जगह 'चपरासी जी' ने ले ली है। इस पटान पर दफ्तर म दाखिला होता है। नजराने की प्रथा वैसी ही है सिफ आजकल उसे 'जनाब, आपके चाय पानी के लिए" कहा जाता है। पिछले दिनो म इन दफ्तरो म रजवाडाशाही की इस परम्परा का और भी इमानदारी म पालन किया गया जबकि हम पता चला कि एक बडे सरकारी अफसर ने अपनी बेटी की शादी म अपने चतुथ श्रेणी के कमचारी दहेज के रूप म भेंट कर दिय, जो उसकी ससुराल मे जाकर कई महीन सेवा-टहल करेंगे। हिसाब यू है कि अगर हर कमचारी के जिम्मे तीन महीन की सेवा लगायी जाय, तो चार कमचारियो म साल निबट जायगा। फिर इसी क्रम को दोहराकर एक स्थायी बन्दोबस्त किया जा सकता है।

हम बडे साब की इस समझदारी की दाद दिये बिना नही रह सकत। सरकार लाख दहेज विरोधी अधिनियम बना ले, समझदार लाग एसी दूर की कौडी लाते है, कि राजा राजा ही रहता है और प्रजा नियम का पालन करती हुई दिखायी देने लगती है। इससे पहले हमने समाज-सुधारक नताओ के द्वारा सादा शादियो की बहार भी देखी। एक नताजी बिना बैंड बाजे के पाच आदमियो के साथ अपने घर बहू ले आये थे, और फिर उनके स्वागत म दस हजार लागो की चाय-पार्टी का आयोजन किया गया था। नेताजी ने दहेज नही लिया। हा, बहू को लाग लाखो रुपय के उपहार दे गये तो यह किसी का हाथ तो नही पकड सकते। लागो की श्रद्धा है न जाने क्या-क्या रंग लेती है। कोई इस पार्टी का बिल चुका रहा है और कोई उपहारो की गाडी भरकर ला रहा है। नताजी ने सदा 'सादा जीवन उच्च विचार' म विश्वास रखा। उन्होने तो इन उपहारो को छुआ भी नही, सीधा घर के अन्दर भिजवा दिया। अब यह उनका दोष ता नही कि यह नागर दन म हैं और अपने शासको के प्रति सम्मान प्रकट करने की हमारी पुरानी परम्परा है।

[illegible] शासक तो शासक ही होता है। क्या हुआ जो आज वह राजा नही कहलाता। मात्र नाम बदल जाने स पुरानी परंपराएं ता

खत्म नही हो जाती। और अब नाम ही बदलना है, तो आप भी नजराने का देखो और कह लीजिए, हमे कोई एतराज नही, पर अपनी परम्पराओ का जरूर कायम रखिये, क्याकि आप जानते हैं कि इनके बल पर ही तो अपना देश सदियो से सिर ऊचा किये खडा है।

जिक्र परम्पराओ का चल रहा है, इसलिए हम अपने देश के खरीद बाजार की एक और परम्परा याद आ रही है। यह खरीद बाजार वस्तुओ का नही, प्राणिया का है। यहा कन्या नाम के प्राणी की खुलेआम बिक्री हाती है। इस बाजार के चलन निराले हैं। प्राय खरीददार जिस वस्तु को खरीदते है, उसकी कीमत अपनी जेब मे अदा करते है। पर इस बाजार मे कन्या बिकते समय अपनी कीमत खुद अपने खरीददार को अदा करती है। जो कन्या अपनी जितनी अधिक कीमत अदा कर सकती है, उसे उतना ही अच्छा खरीददार मिल जाता है। नारी मुक्ति आदोलन के इस जमाने मे भारत की कन्याओ मे भी हमने अभूतपूर्व जागति पदा होते हुए देखी है। वे अब स्कूला और कालिजो के इम्तहानो म लडको को छकाकर बडी से बडी डिग्री हासिल करती देखी जाती हैं। फिर पढाई खत्म करने के बाद स्कूला, कालिजा और दफ्तरो म सारा-मारा दिन नौकरी करके अपनी बिक्री के पैसे खुद जमा करती हैं। आप जानते ही है, हमारी पारम्परिक भाषा मे इन बिक्री के पैसो को दहेज कहा जाता है। देश मे नारी मुक्ति आदोलन की प्रगति के साथ उन्होने बिक्री के ये पैसे चुकाने का बोझ अपने माता-पिता के कधो से हटा लिया है। खुद काम करके जब उनकी कमर दुहरी हो जाती है आखो पर चश्मा चढ जाता है तो उनका सौदा तय होता है। कीमत किस्तो मे चुकाने की बात होती है। पहली किस्त शादी के समय चुकायी जाती है। बाकी किस्तें व शादी के बाद उम्र भर दफ्तरो और स्कूला मे खट कर चुकाती हैं। कई बार महगाई बढने के कारण खरीददार इन किस्ता को बढाने का हुक्म भी कर देते है। न बढने की सूरत मे उन्ही पसा से मिट्टी का तेल खरीदा जाता है, और फिर एक स्टोव फट जाता है। पर कई बार स्टोव फटने के बावजूद और नायलान के कपडे पहने रहने पर भी कन्या बच जाती है। तब उसका एक ही बयान होता है कि स्टोव अचानक फट गया था, और उस समय पतिदेव घर पर नही थे। हम यह

बयान पढते है, तो लगता है कि अपने देश मे पतिव्रत धम निवाहने की एक गौरवशाली परम्परा रही है। देखिय, नारी मुक्ति आदोलन का होहल्ला भी इसे काई नुक्सान नही पहुचा सका।

और इन्ही परम्पराआ के इतिहास का एक और पन्ना आज हमार नये रजवाडा न खाल दिया। अपने चतुथ श्रणी कमचारी को दहेज म भेंट कर दिया। हमारे पडौसी बुलाकीदास जी न सुना तो वह बहुत चिन्तित हा उठे। बुलाकीदास जी गरीब आदमी हैं। शहर की कुछ फर्मों का हिसाब-किताब बनाने का काम करत हैं, और उनका बेटा प्राइवेट ट्यूशन करता है। अब बेटी जवान हो गयी, ता उसकी शादी की तैयारी म लग है। यह खबर पढी तो उदास हो गये। हमारे पास आकर बोले, 'लीजिए, दहज मे सेवा टहल के लिए अब गुमाश्त भी दिय जाने लग। हमार घर की औकात टहलुआ रखने की कहा? अब हम यह भेट कस देंगे?" उन्हान फिक्र के साथ पूछा।

बुलाकीदास सच्चे प्रजातन्त्रवादी हैं। राजा और प्रजा म काई फक नही मानत। अफसर की परम्परा उन्हें अपनी समस्या लगी। पर हमने समस्या का समाधान किया, "देखिये बुलाकीदासजी आप परम्परा वहन करना चाहते हैं जरूर कीजिए। अफसर के पास कमचारी थे, उसन भेंट कर दिये। आपके पास नौकरी नही ता खुद दहज म भेंट हा जाइए। बेटी की ससुराल का व्यापार है। चार छह महीन मुफ्त उनका हिसाब मिला दीजिए। फिर इम्तहान के करीब बेट का भिजवा दीजिएगा। बटी की ससुराल के बच्चा का मुफ्त ट्यूशन पढा जायगा।"

लीजिए, पल भर म समस्या का समाधान हो गया। बुलाकीदास बटी के दहज म भेंट होन के लिए अपना विस्तर बाधन लग। उन्ह विस्तर बाध देखा ता हम लगा, अच्छा परिवतन आया। अब परम्पराए सबकी साझी होन लगी। राजा और प्रजा का भेद मिटा। रजवाडाशाही खत्म होन मे अब दर नही।

परीक्षाओ का मोसम

हम जब वहा पहुचे, तो बन्दूकधारी लाल पगड़िया को फिर से चौकसी पर मुस्तैद देखा। अन्दर मैदान मे छावनी लगी थी, और बाकायदा कवायद हो रही थी। हम यहा इस कालिज की खोज खबर लेने आये थे। परीक्षाओ का सीजन शुरू हो गया था। मन मे आया, नौजवानो को डिस्को करते हुए तो बहुत देख लिया, चलिये, आज एक नया नजारा देख आयें। परीक्षाए आ गयीं। शायद नौजवान अब क्रिकेट की कमेंटरी सुनने की जगह पढते हुए नजर आ जायें। आजकल हमें भारत के भविष्य की चिन्ता बहुत सताने लगी है। सुना है देश का बोझ युवा कन्धो पर आ गया है और इन कधो के ऊपर का दिमाग ? हमारा विचार था कि हमें कालिज के मैदान म बहुत से ईश्वरचन्द्र विद्यासागर टहल-टहल कर पढ़ते हुए मिलेंगे। पर यहा आय तो पाया कि मैदान में लाल पगडी कवायद कर रही थी। अध्यापक कालिज से वक मार रहे थे, और छात्र नेता आखा म लाल डोरे लेकर अपनी सहपाठिनो को परीक्षा की वैतरणी पार करवा देने का वायदा कर रह थे, और पीछे एक लाउडस्पीकर चिल्ला रहा था, 'जो वादा किया वो निभाना पडेगा। —इतना पुराना गीत !

तभी एक उदास से व्यक्ति उससे भी उदास चश्मा पहनकर प्रिंसिपल के कमरे से बाहर निकले। हमने सोचा, शायद कालेज की घटी बजाने वाले हैं, प्रिंसिपल साब से घटी बजाने की इजाजत लेकर बाहर आये हैं। लेकिन वह घटी बजाने वाले साब नही थे, खुद प्रिंसिपल साब थ, जो घण्टी

बजाने वाले को घण्टी बजाने की इजाजत देने जा रहे थे। हमें लगा, अजीब माहौल है। जो सोचते हैं, उससे उल्टा ही नजर आता है। हमने प्रिंसिपल साब से दुआ सलाम की और पूछा, "हुजूर, आप इतने उदास क्यों है ? अब तो परीक्षाएं शुरू हो गयी अब तो लाठी पटाने का भी कोई चक्कर नहीं।"

जवाब में सर और भी उदास हो गये—'क्या करें भाई ! एक मुसीबत खत्म भी नहीं हुई, कि अब यह दूसरी आ गयी। सुना है, हमें उपद्रवियों से बचाने के लिए इस बार फिर खाकी वर्दी कालेजों में आ रही है।"

—यह तो अच्छा ही है। सारा काम शान्ति से निबट जायगा। और इनकी चौकसी में नकल भी नहीं होगी।

—अजी, यही तो गम है कि वे आ गये तो नकल ही रुक जायगी। जानते हैं, पिछली बार नक्ल नहीं हो सकी तो हमारी यूनिवर्सिटी का पास प्रतिशत आधा रह गया। आप ही बताइए, हम छात्रों के मां-बाप को क्या जवाब देंगे ? आखिर उन्होंने सारा साल फीस अदा की है और हम उनके बच्चों को नक्ल की सुविधा भी नहीं दे सके।"

हमें लगा, सर की उदासी वाजिब थी। तभी एक लाल पगडी ने आकर सर को बताया कि सेना को इस इलाके से पूरी तरह से हटा लिया गया है, और परीक्षा हाल की निगरानी का काम अब पूरी तरह से हमारे जिम्मे है।

—यह हुई न बात ! सर का चेहरा खिल उठा ! ये लोग अपने हैं हमारी पोजीशन समझते हैं। इनका सदियों से जनता के दुख जड से उखाड देने का अपना ही रिकार्ड है। हमारे छात्र इनसे टांका फिट कर लेंगे। अब चिन्ता की कोई बात नहीं।"

लाल पगडी नौजवानों के साथ अपना टांका फिट करने चली गयी और पीछे बजता हुआ लाउडस्पीकर फिर तेज हो गया—जो वादा किया, वो निभाना पडेगा ! वही पुराना गीत !

जी हां गीत बहुत पुराना था, क्योंकि परीक्षा हाल की ओर परीक्षा की स्टेशनरी लेकर जाता हुआ क्लर्क ठिठक गया। वह गीत सुनकर पहले एक बार हँसा और फिर रोने लगा। हमने उस बैताल मानकर रोक कर पूछा, ऐ बाबू साब, आप पहले हँसे क्यों और फिर रोये क्या ?

बाबू ने आखें पोंछी और बोले, 'क्या करें भय्यन ! गीत सुनकर हँसे तो हम बरसो पुरानी आदत की वजह से । यह गीत तो छात्रो का प्रेरणा-गीत है। जब-जब वे यह गीत सुनते हैं, कुछ कर गुजरने पर आमादा हो जाते है। पहले यह गीत सुनते ही वे हम लोगों से नकल का सौदा पटाने के लिए निकल पडते थे, यह याद करके हम हस दिये। पर तभी ध्यान आया, अब युग बदल गया भय्यन । ये लाल पगडी वाले बीच मे आ गये । अब तो सौदा उनके द्वारा सीधा ही निरीक्षकों से पट जाता है। अब हम रोये नही तो और क्या करें ?"

जिसे रोना था वह रोता रहा। लेकिन परीक्षा हाल के बाहर खडा मुन्निदूत, जो अभी-अन्दर जाकर नौजवानो को पानी पिलाने का काम करेगा, उसी तरह हँस रहा था। वह बरसो से दस महीने बहुत हँसता है, और अपनी जेब से दस दस रुपये के बहुत से नोट निकालकर हमे दिखाता है। हम उसके पास गये तो उसने सूचना दी, "जी नही, युग नही बदला, सिर्फ महगाई बढ गयी है। पिछले साल मेज पर नकल की पर्ची पहुचाने का रेट फी पर्ची दस रुपया था, इस बार बढकर बीस रुपया हो गया है।" हमने देखा उन रुपयों मे बीस के नोट अधिक थे।

पानी पिलाने वाला तो सुखी हो गया, लेकिन एकाएक अन्दर परीक्षा-हाल मे दंगा हो गया। शोर-शराबा और नारो के स्वर गूंजने लगे । हम शक मे पड गये कि यह परीक्षा हाल है कि पचायत घर। तभी अन्दर से एक सफाई मजदूर अपने सिर पर एक बोरी उठाये हुए बाहर आया। पता लगा नकल की पर्चियां हैं, छात्रो की मेजो से इकट्ठी की गयी हैं। हम गद्-गद हो गये। श्रीमान स्वच्छ के आते ही माहौल कितना धुल पुछ गया। देखिये, परीक्षाओ मे बरसो से चली आ रही नकल की लानत भी खत्म हो गयी।

पर पर्चियों की बोरी अभी बहुत दूर नही गयी थी, कि नौजवानो के झुड-के-झुड परीक्षा हाल के बाहर आ गये । उन्होंने हाल का घेराव कर लिया। वे छातियां पीट रहे थे, और 'मुर्दाबाद' के नारे आसमान की ओर उछाल रहे थे। बीच-बीच मे कोई मनचला तान भी उठा लेता, "जो वादा किया वो निभाना पडेगा।"

हमे गुस्सा आ गया। हमने आगे बढकर उनके नेता से पूछा, "आप लोग यह क्या कर रहे हैं?"

—निरीक्षकों का घेराव चल रहा है। नेताजी बोले।

—क्यों? क्या इसलिए कि इन्होंने आपको नकल करने से रोका? हमने पूछा।

—जी नही, बल्कि जिन शर्तों पर हमारा उनके साथ नकल का सौदा पटा था, वह आज उसे तोड रहे हैं। पर्चा मुश्किल आ गया, तो अधिक रेट मागने लगे।'

—हमारी माग है कि हमारी बोरी वापस लायी जाय, और हम उन्हीं दरो पर नकल करने की इजाजत दी जाय।' एक पैंट धारिणी बोली।

कुछ देर यू ही नारेबाजी चलती रही। आदोलन खिंचता देखा तो हमे डर पैदा हुआ कि नकल की दरो का यह प्रश्न भी कही अधिकारियो को किसी न्यायिक कमीशन के सुपुर्द न करना पडे। पर नौबत यहा तक नही आयी। अब निरीक्षको की एक सब-कमेटी हाल से बाहर आ गयी थी। ठीक भी था। आजकल जमाना कमीशनो का नही, सब-कमेटियो का हो गया है। यह सब कमेटी कुछ क्षण नेता लोगो के साथ गुपचुप बतियाती रही, फिर मुर्दाबाद के नारे जिदाबाद मे बदल गये। फैसला हो गया। फैसला एकपक्षीय नही था जैसा कि इधर अदाजा लगाये जाने लगा था। फिर पर्चियो की बोरी का रुख लौटा। परीक्षार्थी हाल मे वापस जाने लगे।

बाहर ब्लैक बोर्ड पर ईसामसीह का एक सूत्र वाक्य लिखा था 'मेरे खुदा! सब कुछ करना, पर मुझे कभी परीक्षा मे न डालना।'

हमे लगा, जैसे किसी ने इस सूत्र-वाक्य को बदल दिया है—ए खुदा, मुझे ऐसी परीक्षा मे तो बार-बार डाल। चट से प्रथम श्रेणी आयगी, और मेरिट भी ले जाऊ तो कोई हैरानी नही।"

उधर अब कालिज के पास मे पूरी शाति है। कही कोई विघ्न बाधा नही। परीक्षा देने वाला खुश है और परीक्षा लेने वाला भी—और बाहर बैठा लाल पगडी वाला भी।

"हमारे यहा परीक्षाए बिल्कुल ठीक-ठाक हो रही हैं।' इधर उदास सर ने ऊपर रिपोर्ट भेजी है। वह अब उतने उदास भी नहीं लगते।

भीड मे अकेले

आज तक हम अपने देश से खच्चरों का निर्यात करते रहे, लेकिन फिर भी विदेशी व्यापार में हमारा भुगतान शेष प्रतिकूल ही होता चला गया। वैसे भी ये खच्चर विदेशों में जाकर हमारे देश का नाम बहुत ऊंचा नहीं कर सके। जो भी काम उनके हवाले किया गया, उसे उन्होंने उससे भी अधिक ढीले-ढाले ढंग और धीमी गति से किया कि जिसके लिए अपना देश मशहूर है। इतने बरस तक अपने देश से खच्चर निर्यात करने का चाहे कोई और लाभ हुआ हो या नहीं, लेकिन इतना अवश्य हुआ कि अपना देश जो कभी दुनिया में सांपों और मदारियों के देश के रूप में प्रसिद्ध था, अब ढीले खच्चरों के देश के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इधर इस नाम को प्रमाणित करने के लिए हमने कुछ और ऐतिहासिक कदम अपने देश में उठाये हैं। पहला तो यह कि अपनी सातों पंचवर्षीय योजनाओं में करोड़ों रुपया खेतीबाड़ी की उन्नति पर खर्च करने के बाद अपना देश जो कभी दुनिया भर को अन्न का निर्यात करता था, और भी अधिक अन्न-संकट से घिर गया। अब हम आपत्त मुसीबत के दिनों में अन्न पान के लिए विदेशों का मुंह देखना पड़ता है। अन्न-संकट को दूर करने के लिए हमने दूरदर्शन पर परिवार नियोजन के विज्ञापनों का एक धुआंधार अभियान भी इधर चलाया है। यह अभियान इतना अश्लील है कि छोटे-बड़े तो क्या, बच्चे भी शर्म से मुंह फेर लेते हैं। पर इस विज्ञापन अभियान का असर हमारे देश पर यह हुआ, कि हमारी वृद्धि की दर में कमी नहीं आयी। हम बदस्तूर जनसंख्या विस्फ

समस्या से घिरे हुए है। उम्मीद है कि इस सदी के अ त तक हमारी सख्या कुल मिलाकर सौ क्राड हो जायगी। और यही हाल रहा तो अपने देश की धरती पर आदम जात के लिए खडे रहने का जगह भी कम पड जायगी।

पर आजकल आप जानते हैं, कि हमारी युवा सरकार देश की विकट समस्याओ को हल करन के लिए बडे बडे साहसपूण कदम उठा रही है। चाहे ज मजान आलाचको का य कदम बाजीगरो की कलाबाजी स अधिक नही लगत लकिन आलोचको की परवाह करके तो काम नही किय जात। इसलिए पिछले दिनो विदेशी व्यापार के क्षेत्र म भी एक साहसपूण कदम उठाया गया। यह कदम इस व्यापार मे गदहो का नियात शुरू करन का ह। इस कदम को उठान के कई कारण ह। पहला तो यह कि देश म जगह कम पड गयी है। गदहो का निर्यात कर दिया जायेगा, ता लागा के रहन क लिए जगह बन जायगी। फिर खच्चरा के नियात के कारण अपन दश की गिरती हुई साख को बचान का सवाल भी है।

पर विश्वस्त सूत्रा स ज्ञात हुआ है कि इस नयी नियात-नीति का गदहो न बहुत बुरा मनाया ह। इन्होने इस निर्यात-नीति के खिलाफ सरकार को एक पिटीशन दी है। हमन कही से इस पिटीशन की एक प्रति प्राप्त कर ली। इस पढा ता पाया कि इस अभियाचिका मे कहा गया था, कि यह नियात-नीति अतत देश, समाज और शासन के लिए हानिकर होगी। प्रश्न उठाया गया कि इस निर्यात के लिए आखिर आदमिया और घाडा को छोडकर सिफ गधा को ही क्या चुना गया है जब कि आज दश म शाति स्थापित रखन के लिए और भव्य अट्टालिकाओ का माथा ऊचा रखन के लिए आदमिया और घाडा के स्थान पर गधा अधिक काम की चीज है। इतिहास साक्षी है कि गधे सबसे अच्छी जनत साबित होत हैं। जहा-जहा भी इन्हे घाडा अथवा आदमी बनान का प्रयास किया जाता है, वहा-वहा मठाधीशा की गद्दिया डावाडाल हान लगती हैं। य मठाधीश राजनीति क हा सकत हैं धम क अथवा कला समाज एव सस्कृति क भी। अत इस अभियाचिका म दश भर के मठाधीशो स अपील की गयी थी कि व निर्यात-नीति क इस फैसल का बदलवान म उन्ह सहयोग दें और गधा क स्थान पर आदमिया का नियात शुरू करवायें।

अपने देश म पिछले कुछ बरसा म नेगृदभ जोवि की बदौलत ही कुछ नये धधे बहुत फलने फूलने लग हैं। इसम एक धधा नेताओं की रैलिया करवाने और जुलूस निकलवाने का है। इस फैसले से हम रैलों और जुलूसो आयोजक बहुत दु खी दिखायी दिये हैं। उनका यह विचार था कि गधो का यह निर्यात उनके धधे पर सीधा प्रहार है। दश म आदमिया के रट पहले ही गधा स ज्यादा है, अब इ हे इन रैलियो और जुलूसा म इकट्ठा करन के लिए और भी अधिक देना पडेगा। इसके कारण देश म महगाई का और बढावा मिलगा। बजट की कृपा से आम आदमी के लिए मिट्टी का तेल, गैस और चीनी पहले ही महग हो गय है अब रैलियो को महगा कर दना भी एक दु खदायी फैसला है। सरकार का कीमतो पर नियत्रण रखन क लिए इस फसले पर पुनर्विचार करना चाहिए।

इस फैसले से हमन फिल्मी दुनिया म भी बहुत मुदनी छायी हुई देखी। कुछ सिल्वर जुबली निर्माताओ ने हम बताया कि आज तक फिल्मी दुनिया म एक ही कानून चलता रहा है कि अल्लाह मेहरबान तो गधा पहलवान। लेकिन अगर सब गधे विदेश भेज दिय जायेंग ता अल्लाह मेहरबान किस पर होगा? उन्होंने हम बताया कि इस फसल से भारत का फिल्म उद्याग बहुत बडे सकट म घिर जायेगा। खोया पाया फामूला की सभी कहानिया नाकारा हा जायेंगी, और मुशी तोताराम किस्म क व सभी लेखक बकार हा जायेंगे, जो मुशी प्रेमचद को कलम पकडने को तमीज सिखला देन का दम भरते हैं। और इस माड-सगीत का क्या हागा कि जिसकी स्वर लहरी हरी घास चरती जाति के मन म एक तूफान पैदा कर देती है और वह इन स्वर लहरियो के रिदम पर अपन ढेंचू-ढेंचू की ताल देने लगत हैं। अत फिल्मी दुनिया मे खोया-पाया के क्लासिक साहित्य को जिदा रखन के लिए, और दश भर मे मॉड सगीत के रिद्म को लहरात देखने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि इस फसले को तत्काल वदल दिया जाय।

इस नीति का एक हिस्सा यह भी था कि जहा गधा का निर्यात किया जायेगा वहा अच्छी नस्ल के मणिपुरी और कठियावाडी घाडा के निर्यात की अनुमति नही होगी। घोडा के साथ इस पक्षपात के विरुद्ध भी इस अभि-याचिका म बहुत-कुछ कहा गया है कि गधो के साथ यह सौतली मा जैसा

व्यवहार इसलिए किया जा रहा है, क्योकि वे अल्पमत म हैं। पिटीशन का यह कहना था कि इस नीति से सरकार पर विरोधी पक्ष का यह आरोप सिद्ध हो जाता है कि भारत मे अल्पसख्यका के हित सुरक्षित नही हैं। क्या घोडा को सिफ इसलिए हाथ नही लगाया जा रहा, क्याकि उनकी सख्या अधिक है, या कि इसका कारण चित्रकार हुसैन के घोडो की वह पेंटिंग है, जिसमे घोडो को गति और शक्ति का प्रतीक माना गया है ? लेकिन हम इस पेंटिंग से किसी भ्रम म नही पडना चाहिए। ये कलाकार तो सदा लोगा को भटकाते हैं, और अपनो से जुदा कर देते है। फिर सदिया स अपने देश के विकास की गति गदभराज की चाल से अधिक नही रही। साम्राज्यवाद से प्रजातत्र, गुलामी से आजादी, पूजीवाद से समाजवाद, न जाने कितनी यात्राए अपन देश ने आज तक तय की हैं, लकिन देख लीजिए, आम आदमी आज भी वही-का वही खडा है। उसकी पहनी हुई कमीज के कालर आज भी फटे हुए हैं, और वह नयी खरीदारी के लिए इसी तरह रियायती सेल-योजनाआ की प्रतीक्षा करता रहता है। ता एसे माहौल म इस नयी निर्यात-नीति स देश भर के गधो को विदेशा म भेजकर आम आदमी को अकेला कर देना भला कहा तक उचित है ? जब कि उसे तो भीड म अकेला हा जाने जैस फैशनेबल वाक्य का भी अथ अभी तक पता नही चला है।

वसुधैव कुटुम्बकम्

आज के इस स्पूतनिक युग म किसी साइकिल की वकालत करना एक बहुत बडे गुनाह से कम नही। लोग तेजी से आगे बढ रह है और एकदम साइकिल स मोटरसाइकिल, मोटरसाइकिल स कार और कार से हवाई जहाज हो जाना चाहते है। आदमी जब साइकिल से हवाई जहाज हो जाता है, तो इसे विकासवाद का एक लक्षण मानत हैं। जिनकी झोपडियो पर कल छत का चदोवा भी नही तना था आज वह अपनी भव्य अट्टालिकाओ के कगूरा से खास रह ह। झोपडी से अट्टालिका हो जान की इस यात्रा म उन्होंने कई प्रकार के पापड बलने म निपुणता हासिल की। इतिहास साक्षी है, किसी देश की साहित्य, सभ्यता और सस्कृति का विकास पापड बेलकर ही होता है। पापड बेलन की यह शुरुआत राजनीतिज्ञो की ठकुरसुहाती से शुरू हाती है। फिर कोटा परमिट और आयात लाइसेंस इसका आधार बनते हैं। तब इस आधार पर एक ऐसा गोदाम खडा हो जाता है, जिसका दरवाजा सिफ किसी चोरबाजार मे ही खुलता है। और इस प्रकार दखत-ही-देखत आदमी झोपडी से अट्टालिका हो जाता है।

काल माक्स महोदय अपनी 'दास कैपिटल' म लाख चिल्लाते रह कि अट्टालिका हो गये आदमी का यह लाभ मजदूर की मजदूरी की चोरी है या यह भौतिकतावादी द्वद का जन्म देगा। लेकिन इन दकियानूसी बाता की आज कौन परवाह करता है! एक साइकिल वाला दाढी बढाकर जलती हुई आखो के साथ मावस साहिब की इन्ही बातो को दुहराता है, और फिर

समय की दौड म पिछड जाता है। चोरी की बात सुनकर आज कोई चौंकता नही। दिल वगैरह चुराने की बातें ता बहुत दर स साहित्य म चली आ रही थी। आदमी सुनता था, और दिल चुरान वाले के प्रति रोमाटिक भावुकता से भर जाता था। पर युग बदल जान के साथ आजकल दिल वगैरह नही चुराया जाता। स्पूतनिक युग म ऐसे फालतू काम करन की फुरसत ही भला किसके पास है। आजकल ता दूसरा का हक चुरान का फशन हा गया ह। अब ता दूसरा का हक चुरान वाले को हानहार बिरवान माना जाता है। लोग एसे होनहार का देखत हैं तो उसके भविष्य के प्रति आश्वस्त हो जाते ह। साचते हैं कि यह ठीक राह पर चल निकला है बहुत जल्दी साइकिल स हवाई जहाज हो जायगा। एस हानहार के पात बहुत जल्दी चिकने हो जाते हैं, ऐसा मुहाविरे म भी लिखा है। अत मुहाविरे को सत्य सिद्ध करन वाली इस महान विभूति को आते जाते लोग नमस्कार करन लगते हैं, और मेहनत करन वाल का सडक पर पत्थर कूटन के काम पर लगा देत है, ताकि वह भरपूर मेहनत करक अपने परिवार के लिए दा जून चने चबेन का इतजाम कर ले।

देश के विकासशील होन का एक और लक्षण, हमार राष्ट्रीय चरित्र का अतर्राष्ट्रीय हा जाना है। हम जितन अतर्राष्ट्रीय होंगे, उतने ही सफल होगे। ऐसी बहुत सी समस्याए ह, जा देश प्रान्त की सीमा को लाघकर विश्वव्यापी हो गयी हैं। अपन देश की बचारी सरकार भला इन समस्याओं का समाधान कस कर सकती है ? वह ता उन्ह एक सामान्य बात के रूप म स्वीकार कर लने के लिए ही मजबूर हो जाती है। अब भ्रष्टाचार की समस्या का ही ले लीजिए। आप क्या समझत है, यह समस्या क्या सिफ आपके शहर या आपके प्रदेश म ही है ? जी नही। नता लोगा ने हम बताया है कि अब यह एक विश्वव्यापी समस्या है। आज दुनिया भर क दशा म रिश्वतखारी एक नये मूल्य के रूप म स्थापित हो चुकी है। पुरान नतिक मानदण्ड जजर होकर टूट गय हैं, और मन्दिरो म नय दवता उभर आय हैं। नये युग का नया दवता कुबेर है। रिश्वतखोरी के द्वारा शायद इसकी पूजा हो रही है। दुनिया भर म नेता से जनता तक अफसर से किरानी तक, साहब स जमादार तक इसी कुबेर की पूजा म लगे दिखायी दे रह हैं।

इसलिए आप भी भ्रष्टाचार-उन्मूलन को केवल नारो तक ही सीमित रहने दीजिए। भ्रष्टाचार को एक नये युगसत्य के रूप मे स्वीकार कर लीजिए, और अपने हर काम मे इसे सेलटैक्स की तरह अदा करते चलिए।

तो इस तरह से अपने देश के विकास के मूल्याकन के लिए अपनी राष्ट्रीय समस्याओ को अन्तर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य मे देखना बहुत आवश्यक है। देखिये न हमारे महान नेता भी तो कहते है—ऐ भारतवासियो ! कब तक कुए मे मेढक बने रहोगे। जरा कुए की मुडेर पर आकर अपने परिवेश को ऊपर तने आसमान की ओर तो देखो। आपको अपनी हर समस्या, हर दुख का हल मिल जायेगा ! कुए से बाहर आओगे तो देखोगे कि आपकी समस्या आपकी नही, पूरे विश्व की है। आपका दुख सिर्फ आपका नही, सबका है। कहा भी गया है, 'नानक दुखिया सब ससार', फिर उन्तालीस वरसो की इस आजादी मे यह समस्याए हल नही हो पायी तो क्या हुआ ! विश्व भर का यही हाल है। अपनी सरकार को दोष क्या देते हैं ? इसलिए हे वोटर जब भी महाचुनाव आयें, तुम उन्हे वोट देना, दोष नही।

माना कि आप महगाई के बोझ तले पिस रहे हैं। कीमतें आसमान की ओर कुलाचें भर रही हैं। आम आदमी का जीना दूभर हो गया है। पर क्या आप जानते है कि महगाई की यह समस्या सिर्फ अपने देश की नही। आज सारा विश्व इसी महगाई के बोझ तले कराह रहा है और विश्व की सरकारें कुछ भी नही कर पा रही। इग्लैंड का उदाहरण आपको दे। क्या आप जानते हैं कि इग्लैड मे कीमतें बढने की दर हमारे देश से अधिक है, और मादाम थैचर के पूरे प्रयत्नो के बावजूद अधिक है, तो आप ही बताइए कि कीमतो की जिस बाढ को मादाम थैचर नही रोक पायीं, उस पर हमारी सरकार कैसे जादू की छडी घुमा दे ? इससे बेहतर क्या यही नही कि हम इस निरन्तर बढती महगाई को भी एक नया जीवन-सत्य मान लें, और इसे और बातो की तरह अपने पूर्वजन्मो का फल मानकर स्वीकार कर लें।

तो लीजिए भ्रष्टाचार और महगाई की समस्या को यू हल कर लेने के बाद अगर अब आप चाहे तो अपने देश की बेरोजगारी की समस्या को भी इसी प्रकार हल कर सकते हैं। हम मानते है कि हमारी हर पचवर्षीय योजना की सबसे बडी उपलब्धि यह रही है कि हर योजना के खत्म हो

जाने पर देश के बेरोजगारों की संख्या उससे अधिक हो जाती है जितनी कि योजना शुरू होने के समय थी। पर इसमें घबराने की क्या बात है? बेरोजगारी की यह समस्या सिर्फ भारत की ही तो नहीं। जरा दूसरे देशों की ओर तो देखिए। बडे-बडे धनी देशों में रोजगार दफ्तरों के बाहर काम मांगने वालों की कतारें लगी हुई हैं। फिर अगर ये बेरोजगार निराश होकर अव्यवस्था को जन्म देते हैं, हिंसा की ओर प्रवृत्त होते हैं या आतंकवादी बनकर बन्दूक पिस्तौल थाम लेते हैं तो इसमें भी बेचारी सरकार का क्या दोष? आज दुनिया भर में बेरोजगारों ने बन्दूक पिस्तौल उठा लिये हैं। और यूं ही गैरकानूनी काम में लगे हुए हैं। बल्कि हमारे विचार में तो अपने देश में हिंसा और अव्यवस्था की ये गतिविधियां इतनी संगठित नहीं, जितनी कि दूसरे देशों में हैं। संगठन का यह अभाव हमारे पिछड़ेपन का द्योतक है। हमें यह समझ लेना चाहिए कि जैसे जैसे अपने देश में शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति का विकास होता जायेगा ये गतिविधियां और भी मुखर होकर सामने आयेंगी। यह विकास की कीमत है, जो आज दुनिया के हर देश को अदा करनी पड रही है। हमें भी बिना किसी चूं चपर के इसे अदा कर देना चाहिए।

बल्कि बेहतर तो यह है कि अब आप देश की चिन्ता छोडकर अपनी चिन्ता कीजिए। पूरी बेशर्मी के साथ हर वह हरबा इस्तेमाल कीजिए कि जिसके द्वारा आप अपने आपको जल्दी से जल्दी एक साइकिल से एक कार में तबदील कर सकें। शब्द बेशर्मी के इस्तेमाल से चौंकिएगा नहीं, क्योंकि यही हमारी जिन्दगी का नया सच है, एक अन्तर्राष्ट्रीय सच।

इक्कीसवी सदी की दस्तक

इक्कीसवी सदी ने अपने देश के दरवाजे पर दस्तक दे दी, और हमे खबर भी न हुई। इस खबर के न हो सकन के बहुत से कारण हो सकते हैं। एक कारण तो यह कि दूरदर्शन के जनवाणी कार्यक्रम मे मत्री महोदय के वायदा के बावजूद हम अभी भी पानी मिली चीनी और मिलावटी मिट्टी का तेल प्राप्त करने के लिए राशन डिपो की कतार मे खडे थे, और डिपो-होल्डर हमे कल आइए कहकर टरकाने की कोशिश कर रहा था। गाव के गरीब किसान का बेटा आज भी दुबइ का टिकट कटवान के लिए असामाजिक तत्वो के पास वधक पडा हुआ था, और उत्तरप्रदेश और विहार से आती हुई फसल काटने वाले भैय्या मजदूरो की डारे दोजून रोटी के लिए फिर पजाब की ओर चल दी थी। रेलगाडिया की छतें उसी तरह उनकी भीड से भरी हुई थी, और रास्ते के पुलो से टकरा कर वे क्षत विक्षत हो रहे थे। हमे आजाद हुए उन्तालीस साल बीत गये। उन्तालीस बरसो के बाद भारतीय रेलवे ने इक्कीसवीं सदी के दरवाजे पर दस्तक दी है, एक और रेल-बजट के द्वारा। इसमे रेल भाडे म वृद्धि के साथ आम आदमी की जब मे एक और छेद कर दिया गया है और भैया मजदूर आज भी रेल डिब्बे के अदर प्रवेश करके यात्रा करने का साहस नही जुटा सका। वह यू ही भारतीय रेलवे की छत स चिपका हुआ है और राह के रेलवे पुलो पर अपनी जान न्यौछावर करके अपने भारतीय होने का सुबूत द रहा है।

जी हा, एक और पुराना वष अपने दश के सिर से गुजर गया और अब राजीव भाई ने देश के नाम सदेश दिया है कि अगले वष हम अपने आपका इक्कीसवी सदी का स्वागत करने के लिए तैयार रखना चाहिए। प्रधानमत्री का यह वाक्य देश के अलग-अलग क्षेत्र क लोगो के सीने मे कही गहर उतर गया, और हमन उन्ह अपन तरीको स इस सदी का स्वागत करने के लिए तयार हाल देखा। अब इस तैयारी की ही कुछ चर्चा हो जाये।

हमे पता चला है कि आने वाली सदी कम्प्यूटर सदी होगी और इस युग के सभी महत्वपूण फैसले अन्तरिक्ष मे किये जायेंगे। देश की युवा पीढी की चिता भी अब कम्प्यूटर के द्वारा ही करन का विचार महानुभावो के मन म आया है। आकडा शास्त्री अपना चश्मा ढीला करके हमे बतात है, कि हर पचवर्षीय योजना म बेकारी भगाओ अभियान' पर करोडो रुपया खच करन के बाद जब योजना खत्म होती है, तो दश म बेकारो की सख्या पहले से अधिक हो जाती है। पर अब सुना गया है कि महानुभावो न निणय किया है कि आकडो के विश्वस्त सकलन के लिए आकडा शास्त्रियो की जगह कम्प्यूटरो को दे दी जाय। इसस देश का दा लाभ हागे—एक तो यह कि ढीले चश्मे वाल आकडा शास्त्री भी बेकार हा जायेंगे, और इस प्रकार दश मे हर बरस बेकारो की सख्या बढान की महान परम्परा को कायम रखा जा सकेगा, दूसरे, स्पेस युग क स्वागत के लिए इन नये बेकारो का अन्तरिक्ष मे निर्यात किया जा सकता है, जहा व सटलाइटा के साथ अपने दश के इद गिद चक्कर लगात हुए भारत माता की जय' का उदघोष कर सकत हैं। लेकिन स्पष्ट है कि इन बकार नौजवानो म वह जुझारू वर्ग शामिल नही है, जो आज मोटरसाइकिला पर सवार हाकर धम के नाम पर कुर्बान हा रहा है और इस कुरबानी के बदले म किसी मित्र देश से राजनीतिक शरण पान म कामयाब हा जाता है।

पर इक्कीसवी सदी के इस स्वागत म कुरबानी सिफ नौजवान ही नही ये नेता लाग भी दे रह है जा हर दूसरे दिन राजधानी म जाकर हमार यहा लाकतत्र को भ्रष्ट पुलिस की सहायता से जिदा रखने की माग करते हैं। उनके विचार म हमारे यहा इक्कीसवी सदी का स्वागत इस

माहौल मे हो हो सकता है। क्या हुआ अगर ईफ्लू सिव[illegible] म सन सैतालीस का इतिहास यहा दुहराया जाये या दो चार हजार लोग मर जाये। इस भीड-भरे देश मे ता लोग मरते ही रहत हैं। कोई डेगू से मर रहा है, ता कोई रेलगाडी की छत से फिसल कर। कुछ लाग यू भी मर गय तो एक ता देश म जनसख्या नियन्त्रण म सहयोग मिलेगा, और दूसरे, नेता लोग मत्री की कुर्सी पर बैठकर आने वाली सदी के स्वागत म भाषण देत रह सकेंगे। देखिए न, सडक से दिय गय भाषण का कुछ असर ही नही होता। दूरदशन वाले समाचारो को छाड अपन 'सरगमिया' कायक्रम तक मे इसे जगह नही देत।

जब जगह मिलने का ही सवाल आया है, तो हम इक्कीसवी सदी की इस नयी सोच को कृपि क्रान्ति मे भी जगह मिलती देख ले। हमने देखा, खेतो मे फसलो की कटाई का मासम आ गया था, और हड्डिया के ढाचे से दुबल किसान अपनी सदियो पुरानी दरातियो के साथ फसल काटने मे जुटे थे। तभी आसमान मे बादल घिर आये, और पानी गिरने का अदेशा होने लगा। किसान का चेहरा आशका स काला पड गया। उसके पास समय नही था कि वह दूरदशन के सेटेलाइट से मिलने वाली मौसम की भविष्य-वाणी की प्रतीक्षा करे। पानी गिर गया, तो दानो भरी बालिया सहमकर दम तोड देंगी। ओसारे म खाने के लिए एक दाना भी नही है। किसान ने अपनी दराती फेंकी और उसने वही किया जो वह बरसो से करता चला आ रहा है। वह कम्प्यूटर की ओर नही, गाव के पण्डित पाधे की ओर भागा आने वाले दिना का हाल जानन के लिए। हाल ता अच्छा नही है। कभी होता भी नही। अपने बाप दादा की तरह उसन भी अपनी खडी फसल महाजन या साहूकार को बच दी, और अपनी हाड-तोड मेहनत के आधे-पौन दाम लेकर इक्कीसवी सदी का स्वागत किया।

और वह कम्प्यूटर कहा गया? जी हा, वह भी है। खबर मिली है कि देश के बडे बडे स्कूला म कम्प्यूटर श्रेणिया शुरू कर दी गयी हैं जहा देश के नौनिहालो का कम्प्यूटर से शिक्षा देकर इक्कीसवी सदी का नागरिक बनाया जायगा। खबर का खुशी मिली तो हम कुछ गहरी खोज मे निकले। पता चला कि कम्प्यूटर शिक्षा के भारी खर्चों के कारण इन स्कूला मे फीस

डयोढी कर दी गयी है, इसलिए मध्यवग के कुछ लोगो ने अपने बच्चे इन स्कूलो स निकाल कर वापस टाट स्कूल मे डाल दिये हैं, जहा दो दूनी चार की शिक्षा कम्प्यूटर से नही बेंत से दी जाती है। देखिय न शिक्षा म कम्प्यूटर के प्रवेश ने समाज के ढाचे को बिगडने नही दिया। गरीब अपनी जगह पर रहा, और अमीर ने आगे बढ कर इक्कीसवी सदी का स्वागत किया! देश को अफरातफरी स बचाने का इससे अच्छा उपाय और क्या हो सकता है, कि जो जहा है वही खडा रहे, और परिवतन के लिए शोर न मचाये। बल्कि इस शोर को फिल्मी दुनिया स ही शुरू होन दे।

जी हा अन्तत परिवतन का यह शोर हमने बवइया फिल्मा मे थ्रीडी तकनीक के हगामे से ही शुरू होते देखा। हमे पता चला कि इक्कीसवी सदी के स्वागत के लिए थ्रीडी फिल्मा का निर्माण बडे जोरो मे शुरू हो गया है। अब घूसा चित्रपट पर चलेगा, और आप सिर अपनी कुर्सी पर बचाते हुए नजर आयेंगे। फिल्मो की इस तकनीकी क्रान्ति से हमारा सिर गव से ऊचा हो गया। इधर महानुभाव भी चिन्तित नही है, क्योकि फिल्मी पण्डितो का मत है, कि इस तकनीक मे सबस अधिक सफलता धार्मिक फिल्मो को ही मिलेगी, इसीलिए बबई क प्रगतिशील निर्माता थ्रीडी मे धार्मिक फिल्म बना रहे है। ये फिल्मे बनेंगी और सिनेमाघरो मे भक्तिरस की गगा बहेगी। थ्री डी को कामयाब होना ही चाहिए क्योकि इससे देश म इक्कीसवी सदी का स्वागत डिस्को सगीत के साथ नहीं आरती की घण्टियो के साथ किया जा सकेगा। इक्कीसवी सदी की इससे बडी उपलब्धि भला और क्या हो सकती है!

भागो, चूहे आये

उल्टा जमाना आ गया। हमने बिल्लियों को चूहों के डर से सहम कर भागते हुए देखा। सदियों से जिन कुर्सियों पर बिल्लियां बैठी हुई थी, एकाएक उनकी जड़ें चूहों ने कुतर डाली। अब इन कुर्सियों पर चूहे बैठे है और बिल्लियां रोजगार दफ्तर के बाहर कतार मे खडी है या अपने आपको चूहा घोषित करवा लेने का एक जाली सार्टिफिकेट बनवाने के लिए दिन-रात एक कर रही है।

पिछले उन्तालीस बरसों में अपने देश में चूहों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। खबर गर्म है कि इस समय सत्तर करोड आदमियों की आबादी वाले अपने देश में दो सौ चालीस करोड छोटे मोटे चूहे पैदा हो चुके हैं। ये चूहे बरस भर में लगभग एक अरब रुपये का अनाज और फसलें भकोस जाते हैं, जिससे देश में अन्न के संकट ने और भी गहरा होने में सफलता प्राप्त कर ली है। चूहा जब छोटा होता है तो दिन में सिर्फ दस ग्राम अनाज खाता है, और इस प्रकार सौ चूहे मिलकर साल भर में तीन सौ चौंसठ किलो अनाज या एक पूरा राशन डिपो डकार जाते हैं। पर छोटे चूहों की यह समस्या इतनी गम्भीर नहीं है, क्योंकि राशन डिपो का यह अनाज तो वैसे भी काला बाजार में ही बिकता था। अधिक गम्भीर स्थिति यह है कि हर छोटा चूहा बहुत जल्दी बडा हो जाता है। इसके लिए उसने हर इलाके में इतने अधिक चोर दरवाजे और सुरक्षित सुरंगें खोल ली हैं, कि चन्द दिन भी नहीं गुजरते और छोटा चूहा एकाएक बडा होकर आपके

प्रार्थना-पत्र तस्दीक करने लगता है। आपको पता भी नही चलता, और ये चूहे बड होकर देश समाज, सभ्यता, संस्कृति, कला व साहित्य का उद्धार करने पर उतर आते हैं। उद्धार करने का यह सिलसिला उनकी भूख के कारण कई गुणा बढ जाता है। अदाजा लगाया गया है कि एक छोटा चूहा अगर दिन में सिर्फ दस ग्राम अनाज खाता था, तो बडा चूहा होकर उससे चार सौ तीस गुणा ज्यादा यानी तिरतालिस सौ ग्राम अनाज खाने लगता है। इसके कारण आम आदमी के लिए देश म अकाल की सी स्थिति पैदा हो गयी है। ये चूहे खाना खाने के बाद आम आदमी की भुखमरी, बेकारी और गरीबी की भयावह स्थिति पर मच से आसू बहाते देख जाते हैं। इसके *बाद व समाजवाद का एक बिल्कुल निजी सस्करण प्रस्तुत करते हुए समाज* को बदल डालने का दावा करते हैं। इस दाव को पूरा करने के लिए फिर वे आपस अपने वास्ते वोट मागते हैं, क्योंकि शासन मे नया खून आना चाहिए। खोज करने पर पता चला कि यह नया खून अपने सफेद बालो को रँगने से पैदा होता है। यह रग खिजाब सा काला नही मेहदी सा भूरा होना *चाहिए, क्योंकि भूरा रग इसानी 'खून के अधिक पास हैं।* दुकानदारो ने हम बनाया कि शायद इसी कारण आजकल बाजार म खिजाब की माग बहुत घट गयी है और मेहदी की माग बढ गयी है। वही मेहदी जो पहले किलो क हिसाब से बिकती थी, अब खूबसूरत पुडिया में हिना के नाम से ग्राम के हिसाब से बिकने लगी है। महदी के हिना होकर महगा बिकने के पीछे हमे राजकपूर की फिल्म *'हिना' का भी कुछ हाथ लगता है, कि जिसे* बनाने की बार-बार घोषणा होती रहती है।

बदरूया फिल्मो की यह कृपा सिर्फ मेहदी पर नही हुई हमारे देश के सास्कृतिक रूपातरण मे भी इस देश की फिल्मो ने एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। सेंसर बोर्ड की कैंची की पूरी कोशिश के बावजूद हम इन फिल्मो का कर्जा कभी उतार नही पायेंगे। आज अपने *देश की सडको* पर सरे बाजार दिन दहाडे गोलिया चलती है बम फटते हैं, और राह चलते मासूम कत्ल कर दिये जाते हैं। लोगो के घरो क द्वार खटखटाये जाते हैं और उन्हे उनके घरो से निकालकर कत्ल कर दिया जाता है। यू सडको और बाजारो का माहौल धाय धाय और ढिशुग ढिशुग की ध्वनियो से भर

जाता है तो लगता है कि किसी बवइया फिल्म का क्लाइमेक्स शुरू हो गया, अब सिनमा का टिकट खरीदने की जरूरत नहीं। आमतौर पर कत्ल के बाद कातिल मौकाए वारदात से बचकर निकल जाते हैं और हिन्दी फिल्मों की परम्परा मे पुलिस हमेशा वक्त से बहुत बाद मे पहुचती है। और सारे शहर की नाकाबंदी करके स्कूटरो के पीछे बैठी हुई दूसरी सवारी को सडक पर उतार देती है।

पर इसके साथ ही हम यह भी लगा है कि समाज क इस बदलत हुए रूप पर इन बवइया फिल्मो के अतिरिक्त चूहो के एकाएक बहुत बडे हो जाने का भी कुछ असर जरूर रहा होगा, क्योकि इन सब घटनाओ के बाद हमने कुछ सहमी हुई बिल्लियो को राष्ट्रीय एकता के नारे लगाते शांति जुलूस निकालते या सद्भावना-यात्राओ पर निकलते हुए देखा। वैस अभी तक इन यात्राओ और नारो का असर हमने दैनिक अखबारो के शीर्षको के अतिरिक्त कही और नही पाया।

आज साहित्य के लिए भी एक बहुत बडा सकट पैदा हो गया है कि इस क्षेत्र के चूहे भी एकाएक बडे हो गये है। जसाकि हमने बताया कि चूहा जब बडा हो जाता है, तो उसकी भूख कई गुणा बढ जाती है अत जो चूहे साहित्यिक हो गये थे, उनके मन म उम्र भर के लेखन के बाद सिर्फ एक पुरस्कार या एक अभिनन्दन की इच्छा नही जागी, बल्कि बडे होते ही उनके मन म हर माह एक पुरस्कार और हर सप्ताह एक अभिनन्दन की माग एक नयी शारीरिक आवश्यकता के रूप मे पैदा हो गयी। उन्होंने लेखन-सघर्ष को एक उपदेश की तरह नवाकुरो के हवाले कर दिया, और गुरु दक्षिणा की पहली किस्त के रूप म उनसे अपने लिए एक अभिनन्दन-समारोह आयोजित करवाने की माग की। ऐसे साहित्यिक चूहे फोटोग्राफरो को भी बहुत प्रिय हो गये हैं क्योकि विभिन्न कोणो से उनके फोटो खीचने का मौका इन फोटोग्राफरो को मिलने लगा है जबकि अखबार मे चित्र छपवाने की जिम्मेदारी फोटो खीचने नही खिचवाने वाले की होती है। सकट यह है कि साहित्य की इस चूहा दौड मे बिल्लिया पिछड गयी हैं, क्योकि वे आजकल आलोचना करती हुई दिखायी देने लगी है, और अब इसे सृजनधर्मिता का एक अंग बनाकर पुरस्कृत करवाने की घोषणा

कर रही हैं।

लेकिन सभी बिल्लियों ने केंचुल बदल ली हो, ऐसा भी नहीं है। कुछ बिल्लियों ने हर क्षेत्र में चूहों को मिलने वाली इस आरक्षण की सुविधा के खिलाफ जेहाद छेड़ने की घोषणा भी की है। उनका यह कहना है कि मंद बुद्धि होना सिर्फ चूहों का ही जन्म सिद्ध अधिकार नहीं है, कि जिसके कारण उन्हें आरक्षित घोषित कर दिया जाये। उनका विचार है कि बिल्लियों में भी इस गुण का अभाव नहीं, अतः आरक्षण का पैमाना सिर्फ यह नहीं होना चाहिए कि कौन चूहा बनकर इस देश में पैदा हुआ है बल्कि यह हो कि कौन कितना मंदबुद्धि है। फिर उन्होंने यह तर्क दिया कि जब चूहों को चूहा होने के नाते तरक्की के हर अवसर पर आरक्षण की सुविधा दी जाती है तो सब मंदबुद्धि लोगों के लिए ऐसा क्यों नहीं किया जा सकता? बुद्धिहीनता भी तो एक ऐसा गुण है जिससे आप अपने वंश की तरह जिन्दगी भर छुटकारा नहीं पा सकते। ताव खायी बिल्लियों की एक और शिकायत यह भी है कि जहां उन्होंने परिवार-नियोजन की सरकारी नीति को अपनाकर अपने विशुद्ध सरकारिया होने का प्रमाण दिया है, वहां चूहों ने इसे तनिक भी नहीं अपनाया और अब अपनी तेज प्रजनन-दर से सब जगह बिल्लियों पर हावी होते जा रहे हैं। वह दिन दूर नहीं जब इस देश में चूहे ही चूहे नजर आयेंगे और बिल्लियों की तलाश में आपको अपनी टार्च जलानी पड़ेगी।

इसलिए टार्च जलाने के इस संकट से देश को बचाने के लिए हमारा सुझाव है कि चूहों पर भी परिवार नियोजन का कानून सख्ती से लागू किया जाये। माना कि हमारे लिए आरक्षण की बैसाखियां बहुत जरूरी हैं पर यह बैसाखियां भेंट करने का पैमाना जन्म नहीं, बुद्धिहीनता होना चाहिए। आप तो जानते ही हैं, अपने देश में बुद्धिहीनता की कमी नहीं, फिर इसका प्रमाण-पत्र भी अधिक आसानी से मिल जाता है। अतः इस प्रकार आरक्षण का पैमाना बदल जाने के साथ हम अधिक तेजी से जन-कल्याण की ओर बढ़ सकेंगे, ऐसा विश्वास है।

सुरेश सेठ

हिन्दी साहित्य के महत्वपूर्ण हस्ताक्षर। रचनाएं बहुचर्चित, प्रशंसित व पुरस्कृत। इनके कथा संग्रहों— धंधा', 'जीना मरना', 'घोड़ा पुराण' ने इन्हें हिन्दी के शीर्षस्थ कथाकारों में स्थान दिया है। इनकी कृति 'शहर वहीं है' हिन्दी के संस्मरण साहित्य की उपलब्धि मानी जाती है। सोनजूही बीमार है' प्रयोग नाटकों की विधा में अभिनव प्रयोग है। बहुत सी कहानियां देश की लगभग सभी भाषाओं में अनूदित। बहुत से नाटकों का आकाशवाणी व दूरदर्शन के विभिन्न केन्द्रों से प्रसारण। रचनाएं एक दर्जन विशिष्ट संकलनों में भी संकलित। इनका साहित्य भारत सरकार के अहिन्दीभाषी प्रांतों के सर्वश्रेष्ठ हिन्दी लेखन के राष्ट्रीय पुरस्कार (१९८८ ८९) पोपुलर नेशनल एवार्ड (१९८३) अदीब अन्तर्राष्ट्रीय एवार्ड (१९८४ ८५) पंजाब साहित्य अकादमी के सर्वोच्च सम्मान और पंजाब भाषा विभाग के राज्य पुरस्कारों से आभूषित हुआ है।

प्रकाशित कृतियां

धंधा (कथा-संग्रह), जीना मरना (कथा-संग्रह) घोड़ा-पुराण (कथा-संग्रह) खजाने की खोज (बाल कथा-संग्रह), शहर वहीं है (औपन्यासिक डायरी), तीसरी आजादी का इंतजार (व्यंग्य संग्रह), सोनजूही बीमार है (नाटक संग्रह) सिरहाने मीर के (व्यंग्य संग्रह)।

पता १७५, ग्रीन पार्क, मुख्य बस स्टैंड के सामने, जालंधर नगर।